हिन्दी दैनिक

प्रत्यूष नवबिहार

जोहार

रांची संस्करण

रांची, पटना और दिल्ली से प्रकाशित

www.tezraftarlive.com
Email-navbiharjh@gmail.com

रांची • सोमवार • 28.07.2025 • वर्ष : 16 • अंक : 7 • पृष्ठ : 12 • आमंत्रण मूल्य : ~~3 रुपये~~ 2 रुपये

मन की बात : प्रधानमंत्री बोले- खेलो भारत नीति का लक्ष्य भारत को खेल महाशक्ति बनाना

एजेंसी

नई दिल्ली : प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने रविवार को 'मन की बात' कार्यक्रम के 124वें संस्करण में खेलो भारत नीति 2025 के लक्ष्य पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि इसका लक्ष्य भारत को खेल महाशक्ति बनाना है। उन्होंने कहा कि गांव, गरीब और बेटियां इस नीति की प्राथमिकता हैं। प्रधानमंत्री मोदी ने मन की बात कार्यक्रम में कहा कि बीते दिनों मुझे कई युवा एथलीट और उनके अभिभावकों के संदेश मिले हैं। इनमें खेलो भारत नीति 2025 की खूब सराहना की गई है। इस नीति का लक्ष्य साफ है, भारत को खेल महाशक्ति बनाना। गांव, गरीब और बेटियां इस नीति की प्राथमिकता है। स्कूल और कॉलेज, अब खेल को रोजमर्रा की जिंदगी का हिस्सा बनाएंगे। खेलों से जुड़े स्टार्टअप्स, चाहे वो स्पोर्ट्स प्रबंधन हों या उत्पादन से जुड़े हों- उनकी हर तरह से मदद की जाएगी। सोचिए, जब देश का युवा खुद के बनाए रैकेट, बैट और बॉल के साथ खेलेगा, तो आत्मनिर्भरता के मिशन को कितनी बड़ी ताकत मिलेगी। प्रधानमंत्री ने कहा कि खेल, टीम स्पिरिट पैदा करते हैं। ये फिटनेस, आत्मविश्वास और एक मजबूत भारत

के निर्माण का रास्ता है इसलिए खूब खेलिए, खूब खिलिए। विश्व पुलिस और अग्निशमन खेल की चर्चा कीप्रधानमंत्री मोदी ने विश्व पुलिस और अग्निशमन खेल में भारत के एतिहासिक प्रदर्शन की चर्चा की। उन्होंने कहा कि क्या आप जानते हैं कि ओलंपिक के अलावा सबसे बड़ा खेल आयोजन कौन-सा होता है? इसका जवाब है- विश्व पुलिस और अग्निशमन खेल। दुनियाभर के पुलिसकर्मियों, अग्निशमन कर्मियों और सुरक्षा से जुड़े लोगों के बीच होने वाली खेल प्रतियोगिता। इस बार यह प्रतियोगिता अमेरिका में आयोजित हुई और इसमें भारत ने इतिहास रच दिया। भारत ने करीब 600 मेडल जीते। हम 71 देशों में टॉप तीन पहुंचे। उन वदीर्धारियों की मेहनत रंग लाई जो दिन-रात देश के लिए खड़े रहते हैं। हमारे ये साथी अब खेल के मैदान में भी झंडा बुलंद कर रहे हैं। 2029 में भारत में होगा आयोजनप्रधानमंत्री ने आगे कहा कि मैं सभी खिलाड़ियों और कोचिंग टीम को बधाई देता हूं। साथ ही प्रधानमंत्री ने बताया कि आपके लिए ये भी जानना दिलचस्प होगा कि 2029 में यह खेल भारत में होंगे। दुनिया-भर से खिलाड़ी हमारे देश आएंगे। हम उन्हें भारत की मेहमान-नवाजी दिखाएंगे, अपनी खेल संस्कृति से परिचय कराएंगे।

एक नजर

पुलिस की जांच में कार से 67 लाख नकदी बरामद

बिश्वनाथ (असम) : असम के बिश्वनाथ जिले के हेलेम थाना क्षेत्र में रविवार सुबह चलाए गए तलाशी अभियान के दौरान पुलिस ने 67 लाख 69 हजार 100 रुपये की बड़ी रकम बरामद की है। यह कार्रवाई हेलेम थाना प्रभारी अधिकारी पंकज चितला और उप निरीक्षक मोहिबुर रहमान के नेतृत्व में की गई। पुलिस के अनुसार, सुबह लगभग 9 :30 बजे राष्ट्रीय राजमार्ग–15 के बुरैघाट इलाके में वाहनों की जांच के दौरान पुलिस टीम ने इटानगर से गुवाहाटी को जा रही कार (एआर 01 के 8909) को रोका। तलाशी के दौरान कार में रखे एक बैग से कुल 67,69,100 नकद बरामद हुए। वाहन सवार दो व्यक्तियों से जब पुलिस ने नकदी की वैधता से जुड़े दस्तावेज मांगे, तो वे कोई भी उपयुक्त प्रमाण नहीं दें सके। इसके बाद वाहन समेत दोनों व्यक्तियों को थाने ले जाया गया। नकद ड्राइवर सीट पर बैठे कमल कुमार की थी, जो राजस्थान के चुरु जिले के निवासी और पेशे से व्यापारी बताए गए हैं। उन्होंने दावा किया कि यह राशि 'पार्टी पेमेंट' के लिए थी, लेकिन इसका कोई दस्तावेज या वैध स्रोत नहीं दिखा पाए। कमल कुमार के साथ वाहन में बैठा बसुदेव पारिक को भी हिरासत में ले लिया गया। वह राजस्थान के चुरु जिले के गोगाचर क्षेत्र का निवासी हैं। दोनों व्यक्तियों से फिलहाल हेलेम थाने में पूछताछ चल रही है।

बिहार में मतदाता सत्यापन का पहला चरण पूरा

नई दिल्ली : बिहार में 24 जून से 25 जुलाई तक चलाए गए मतदाता सत्यापन अभियान (एसआईआर) के पहले चरण में 7.24 करोड़ से अधिक मतदाताओं ने फॉर्म जमा कराये हैं। अब 1 अगस्त से 1 सितंबर तक दावे और आपत्तियां दर्ज कराई जा सकती है। चुनाव आयोग ने रविवार को एक बयान में बताया कि बिहार में 7.89 करोड़ मतदाताओं में से 91.8 प्रतिशत से अधिक ने एन्यूमरेशन फॉर्म जमा किये हैं। इस कार्य में राज्य के मुख्य निर्वाचन अधिकारी, सभी जिलों के जिला निर्वाचन अधिकारी, 243 निर्वाचक रजिस्ट्रीकरण पदाधिकारी, 2,976 सहायक निर्वाचक रजिस्ट्रीकरण पदाधिकारी, 77,895 मतदान केंद्रों पर तैनात बीएलओ, स्वयंसेवक तथा सभी 12 प्रमुख राजनीतिक दलों के 1.60 लाख से अधिक बूथ स्तर एजेंट (बीएलए) शामिल रहे।

महाराष्ट्र के कई जिलों में भारी बारिश का आरेंज अलर्ट

मुंबई : भारतीय मौसम विभाग ने रविवार को महाराष्ट्र के अधिकांश जिलों के लिए ओरेंज अलर्ट जारी किया है। साथ ही आज कोंकण, विदर्भ और पश्चिमी महाराष्ट्र के कई जिलों में ऑरेंज भारी बारिश की चेतावनी दी है। राज्य आपातकालीन परिचालन केंद्र ने बारिश के चलते संभावित आपदा को देखते हुए राष्ट्रीय आपदा प्रतिक्रिया बल और राज्य आपदा प्रतिक्रिया बल को सतर्क रहने के निर्देश दिया है। रायगढ़ जिले के उरण के पास समुद्र में एक नाव पलटने से उसमें सवार 8 लोगों में से तीन लोग लापता हो गए, जिनकी तलाश की जा रही है। राज्य आपातकालीन परिचालन केंद्र ने आज बताया कि पिछले दो दिनों से हो रही भारी बारिश से गोंदिया जिले में बाघ नदी खतरे के निशान को पार कर गई है।

मनसा देवी मंदिर में हादसा : करंट की अफवाह से मची भगदड़, छह की मौत व 35 घायल

एजेंसी

हरिद्वार : धर्मनगरी में एक पहाड़ी पर स्थित मनसा देवी मंदिर के सीढ़ी मार्ग पर रविवार सुबह करंट फैलने की अफवाह से भगदड़ मचने से छह श्रद्धालुओं की मौत हो गई, जबकि 35 लोग घायल हुए हैं। घायलों को हरिद्वार जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया और गंभीर रूप से घायलों को एम्स ऋषिकेश रेफर किया गया है। घटना पर मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने दुख जताया और मृतक आश्रितों और घायलों को मुआवजा देने की बात कही है। मुख्यमंत्री ने इस घटना की मजिस्ट्रियल जांचके आदेश दिए हैं। घटना के बाद हरिद्वार डीएम मयूर दीक्षित और एसएसपी प्रमेंद्र डोबाल ने अस्पताल पहुंचकर घायलों के हालचाल जाने और डॉक्टरों को उचित इलाज के निर्देश दिये। वीकेंड होने के कारण भी मनसा मंदिर सहित नगर के अन्य स्थानों पर श्रद्धालुओं की भारी भीड़

जुटी थी। रविवार को प्रातः9 बजे मां मनसा देवी मंदिर जाने वाले सीढ़ी मार्ग पर भारी भीड़ उमड़ी थी। कांवड़ मेला खत्म होने के बाद भी बड़ी संख्या में कांवड़िए और श्रद्धालु मंदिर में देवी के दर्शन के लिए पहुंचे हुए थे। मंदिर के मुख्य सीढ़ी पैदल मार्ग पर ज्यादा भीड़ बढ़ने के बीच करंट फैलने की अफवाह के बाद श्रद्धालुओं के बीच भगदड़ की स्थिति बन गई और सीढ़ी मार्ग पर श्रद्धालु एक दूसरे के ऊपर गिरने लगे। पुलिस ने बड़ी मुश्किल से स्थिति को नियंत्रित किया। एसएसपी प्रमेंद्र डोबाल ने बताया कि सुबह 9 बजे करीब पुलिस कंट्रोल रूम को मंदिर से 100 मीटर नीचे सीढ़ी पैदल मार्ग पर भगदड़ मचने की सूचना मिली। मौके पर एसडीआरएफ और पुलिस फोर्स मौके पर पहुंची और स्थानीय लोगों के सहयोग से हताहत लोगों को रेस्क्यू कर अस्पताल पहुंचाया गया। एसएसपी डोबाल ने बताया कि मार्ग पर करंट लगने की अफवाह से भगदड़ की स्थिति पैदा हुई। अस्पताल में कुल 35 घायलों को लाया गया था। जिसमें से छह की मौत हो गई। गढ़वाल कमिश्नर रवि शंकर पांडे ने छह लोगों की मौत की पुष्टि करते हुए बताया कि सभी घायलों को उपचार के लिए जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया है। उन्होंने कहा कि हादसे के कारणों की जांच की जा रही है। मंदिर परिसर को कुछ समय के लिए बंद कर दिया गया है। मौके एसडीआरएफ और पुलिस बल मौके पर मौजूद है।

मृतकों के परिजनों को दो-दो लाख देगी सरकार : मुख्यमंत्री

मनसा देवी मंदिर हादसे पर मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने छह श्रद्धालुओं की मौत पर गहरा दुख व्यक्त किया और पीड़ित परिवारों को हरसंभव सहायता उपलब्ध करने के लिए अधिकारियों को निर्देशित किया। मुख्यमंत्री धामी ने भगदड़ की दुर्घटना की मजिस्टेट जांच के आदेश दिए हैं। इसके अलावा हादसे में मारे गए लोगों के परिजनों को दो–दो लाख रुपये और घायलों को पचास–पचास हजार रुपये की सहायता देने की भी घोषणा की है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार इस दुख की घड़ी में शोक संतप्त परिवारों के साथ पूरी मजबूती से खड़ी है। मुख्यमंत्री भविष्य में ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति रोकने के लिए भीड़ प्रबंधन और सुरक्षा व्यवस्थाओं की गहन समीक्षा करने के भी निर्देश दिए गए हैं। राज्य के आपदा प्रबंधन सचिव विनोद कुमार सुमन ने बताया कि इस दुर्घटना में पांच गंभीर रूप से घायल श्रद्धालुओं को बेहतर चिकित्सा सुविधा के लिए एम्स ऋषिकेश रेफर किया गया है। इसके अतिरिक्त 23 अन्य घायल श्रद्धालुओं का उपचार जिला चिकित्सालय हरिद्वार में चल रहा है, जहां सभी घायलों को आवश्यक चिकित्सकीय सहायता उपलब्ध कराई जा रही है।

झारखंड में नक्सल विरोधी अभियान के दौरान 35 लाख रुपये नकद बरामद

कराईकेला जंगल में जमीन के नीचे छिपाकर रखी गई थी रकम

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

पश्चिम सिंहभूम : झारखंड में पश्चिम सिंहभूम जिला पुलिस और सुरक्षाबलों को नक्सल विरोधी अभियान के तहत बड़ी सफलता मिली है। जिला पुलिस, झारखंड जगुआर और केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) की संयुक्त टीम ने चाईबास के कराईकेला थाना क्षेत्र के जंगली क्षेत्र में कार्रवाई करते हुए 35 लाख रुपये बरामद किए हैं। झारखंड पुलिस और सुरक्षाबलों के संयुक्त अभियान के दौरान यह रकम महामद हुई। यह रकम जमीन के नीचे छिपाकर रखी गई थी। प्रारंभिक जांच में सामने आया है कि इसका इस्तेमाल माओवादी संगठन द्वारा विस्फोटक और हथियार खरीदने के लिए किया जाना था। चाईबासा के पुलिस अधीक्षक ने इस अभियान की पुष्टि करते हुए कहा कि यह बरामदगी माओवादी फंडिंग नेटवर्क पर एक बड़ी चोट है। उन्होंने बताया कि इस अभियान के पीछे विशेष खुफिया जानकारी थी और अभी इस मामले की विस्तृत जांच की जा रही है। पुलिस इस बात का पता लगाने में जुटी है कि इतनी बड़ी रकम का स्रोत क्या था और इसके पीछे कौन-कौन से लोग शामिल हैं। रांची रेंज के पुलिस महानिरीक्षक (आईजी) मनोज कोशिक ने इस संबंध में बताया कि सुरक्षाबलों को खुफिया जानकारी मिली थी कि नक्सली हथियार और विस्फोटक खरीदने के लिए रुपये जमा कर रहे हैं। इसी सूचना पर चाईबासा पुलिस, झारखंड जगुआर और सीआरपीएफ ने संयुक्त रुप से कराईकेला थाना क्षेत्र के जंगली क्षेत्र में अभियान चलाया। इस दौरान लगभग 35 लाख रुपये बरामद किए गए हैं।

भोपाल वासियों को बहुत जल्द मिलेगी मेट्रो ट्रेन की सौगात : मोहन यादव

एजेंसी

भोपाल : मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने रविवार को कहा कि हमारी सरकार भोपाल वासियों को बहुत जल्द (अक्टूबर 2025 तक) मेट्रो ट्रेन की अनुपम सौगात दे देने के लक्ष्य की ओर तेजी से बढ़ रही है। उन्होंने कहा कि इंदौर में यात्री मेट्रो सेवा शुरू हो चुकी है। जनता से इसे बहुत अच्छा रिस्पांस मिला है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव आज भोपाल मेट्रो ट्रेन के कार्यों का बारीकी से मुआयना करने के बाद मीडिया को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि भोपाल मेट्रो ट्रेन का काम भी तेजी से जारी है। कुछ काम शेष रह गया है, जो डेढ़ से दो महीने में पूरे कर लिए

जाएंगे। उन्होंने कहा कि भोपाल मेट्रो का टेस्ट रन चल रहा है। रिसर्च डिजाइन स्टैंडर्ड ऑर्गेनाइजेशन (आरडीएसओ) द्वारा भोपाल मेट्रो निरीक्षण पूरा कर लिया गया है। शीघ्र ही कमिश्नर, मेट्रो रेल सेफ्टी (सीएमआरएस) निरीक्षण के लिए आएंगे। कमिश्नर रेल सेफ्टी से अनुमति मिलते ही भोपाल मेट्रो ट्रेन का प्रायोरिटी कॉरीडोर आमजन के लिए खोल दिया जाएगा। मुख्यमंत्री ने इससे पहले भोपाल मेट्रो ट्रेन की सवारी कर इसकी ट्रायल यात्रा (टेस्ट रन) लिया। उन्होंने तीन डिब्बों वाली मेट्रो ट्रेन में सुभाष नगर स्टेशन से एम्स तक और वापसी में एम्स से आरकेएमपी स्टेशन तक टेस्ट रन लेकर इसमें मौजूद सुविधाओं और खूबियों को जाना।

छत्तीसगढ़ में सुरक्षाबलों की बड़ी कामयाबी 17 लाख के इनामी चार नक्सली ढेर

एजेंसी

छत्तीसगढ : छत्तीसगढ़ के बीजापुर जिले में एक बड़ी नक्सल विरोधी कार्रवाई को अंजाम देते हुए सुरक्षा बलों ने 17 लाख रुपये के इनामी चार नक्सलियों को ढेर कर दिया। मारे गए नक्सलियों में दो महिलाएं भी शामिल हैं। यह मुठभेड़ बीजापुर के बासागुड़ा और गंगालूर थाना क्षेत्रों के बीच सघन जंगलों में हुई। सभी नक्सली दक्षिण उप-क्षेत्रीय ब्यूरो से जुड़े हुए थे और इनमें से तीन एसीएम स्तर के जबकि एक पार्टी सदस्य कमांडर था। यह ऑपरेशन सुरक्षा बलों के लिए बड़ी कामयाबी माना जा रहा है। बीजापुर के पुलिस अधीक्षक

जितेंद्र यादव ने बताया कि इस मुठभेड़ को अंजाम देने से पहले सुरक्षा बलों को क्षेत्र में माओवादी गतिविधियों की विश्वसनीय खुफिया सूचना प्राप्त हुई थी। इसी के आधार पर जिला रिजर्व गार्ड की एक विशेष टीम ने 26 जुलाई 2025 की शाम को जंगल में तलाशी अभियान शुरू किया। जैसे ही सुरक्षा बलों ने जंगल में घुसपैठ की, माओवादियों ने अचानक गोलीबारी शुरू कर दी। इसके बाद दोनों ओर से रुक-रुक कर गोलीबारी होती रही और आखिरकार चार नक्सली मारे गए।

भारी मात्रा में हथियार और विस्फोटक जब्त

मुठभेड़ खत्म होने के बाद सुरक्षाबलों ने घटनास्थल की सघन तलाशी ली, जिसमें बड़ी मात्रा में हथियार, गोला-बारूद और विस्फोटक सामग्री बरामद की गई।

बरामद सामान में एक एसएलआर, एक इंसास राइफल, एक .303 राइफल, एक 12 बोर बंदूक, एक बीजीएल लांचर, एक सिंगल-शॉट हथियार, भारी मात्रा में विस्फोटक सामग्री और नक्सलियों से जुड़ा अन्य सामान शामिल था। ये सभी हथियार नक्सलियों की मंशा, उनकी रणनीतिक तैयारी और क्षेत्र में हिंसक गतिविधियों की योजना को स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं।

मौजूदा दौर में युद्ध केवल बंदूकों और गोलियों से नहीं जीते जाते : राजनाथ

एजेंसी

नई दिल्ली : रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने रविवार को कहा कि मौजूदा दौर में युद्ध केवल बंदूकों और गोलियों से नहीं जीते जाते, बल्कि विभिन्न रणनीतियों से जीते जाते हैं। ऑपरेशन 'सिंदूर' की सफलता के पीछे विभिन्न एजेंसियों की भूमिका के बारे में उन्होंने कहा कि इस दौरान रसद प्रबंधन करके हमारी सेनाओं को जुटाने से लेकर उनके प्रशिक्षण के साजो-सामान को समय और स्थान पर सलाह दी गई। रसद प्रबंधन को केवल सामान पहुंचाने की प्रक्रिया के रूप में नहीं, बल्कि इसे एक रणनीतिक महत्व के रूप में देखा जाना चाहिए। चाहे हम सीमा पर लड़ रहे सैनिकों की बात करें या आपदा प्रबंधन में जुटे कर्मियों की, अगर आपसी तालमेल नहीं होगा, अगर संसाधन का सही इस्तेमाल नहीं होगा, तो मजबूत से मजबूत इरादे भी कमजोर पड़ जाएंगे। रक्षा मंत्री वडोदरा (गुजरात) में गति शक्ति विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह को संबोधित कर रहे थे। रक्षा मंत्री ने कहा कि पिछले 11 वर्षों में भारत में अभूतपूर्व बुनियादी ढांचे का विकास हुआ है। इस बदलाव की बुनियाद में एक समग्र और एकीकृत दृष्टिकोण के साथ महत्वपूर्ण नीतिगत सुधार और मिशन-मोड परियोजनाएं चल रही हैं। इसका प्रभाव केवल भौतिक कनेक्टिविटी तक सीमित नहीं है, बल्कि आर्थिक उत्पादकता में वृद्धि

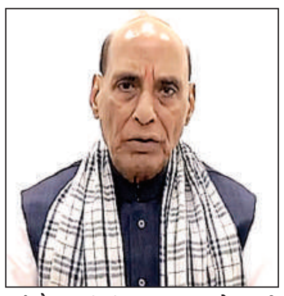

हुई है, लॉजिस्टिक लागत में कमी आई है और सेवा वितरण भी बेहतर हुआ है। पिछले 11 वर्षों में भारत ने इंफ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट के क्षेत्र में एक युगांतकारी परिवर्तन देखा है। पीएम गति शक्ति नेशनल मास्टर प्लान के तहत रेलवे, सड़क, बंदरगाह, जलमार्ग, हवाई अड्डे, जन परिवहन और लॉजिस्टिक्स इंफ्रास्ट्रक्चर जैसे विकास के सात शक्तिशाली स्तंभ समूह भारत की अर्थव्यवस्था को एक मजबूत नींव दे रहे हैं। उन्होंने यह गति शक्ति विश्वविद्यालय के बारे में कहा कि यह सिर्फ एक शैक्षणिक संस्थान नहीं, बल्कि यह अपने आप में एक विचार है, एक गति है, एक मिशन है। यह भारत को तेज, संगठित और समन्वित रूप से आगे बढ़ाने की राष्ट्रीय आकांक्षा को मूर्त रूप दे रहा है। यह विश्वविद्यालय अपने नाम की तरह ही गति और शक्ति दोनों का सजीव उदाहरण है। आज देश में यदि कोई उत्पाद उत्तर पूर्व में तैयार होता है और वह समय पर दिल्ली या मुंबई के बाजार तक पहुंचता है, तो यह रसद प्रणाली की दक्षता का ही प्रमाण है। यह संस्थान शुद्ध रूप से व्यावहारिक ज्ञान पर जोर देता है। यहां केवल किताबी ज्ञान नहीं, बल्कि वास्तविक समस्याओं के समाधान सिखाए जाते हैं। यही विशेषता इसे देश के अन्य विश्वविद्यालयों से अलग बनाती है। रक्षा मंत्री ने दीक्षांत समारोह में शामिल छात्रों से कहा कि यह केवल आपके डिग्री लेने का क्षण नहीं है, बल्कि यह एक संकल्प लेने का भी क्षण है कि आप देश को अधिक सुरक्षित और अधिक सक्षम? बनाने की इस यात्रा में अपनी भूमिका निभाएंगे। गति शक्ति विश्वविद्यालय से निकलने वाले आप सभी विद्यार्थी देश की रीढ़ को मजबूत करेंगे।

थाईलैंड-कंबोडिया को ट्रंप की चेतावनी जंग न रोकी तो नहीं होगा व्यापार

एजेंसी

वॉशिंगटन : थाईलैंड और कंबोडिया के बीच जारी सीमा विवाद पर अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने कड़ी प्रतिक्रिया देते हुए दोनों देशों को तत्काल युद्धविराम की चेतावनी दी है। ट्रंप ने स्पष्ट तौर पर कहा कि यदि दोनों देश शांति बहाल नहीं करते हैं, तो अमेरिका उनके साथ कोई व्यापारिक समझौता नहीं करेगा। ट्रंप ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म ट्रूथ सोशल पर पोस्ट करते हुए लिखा कि उन्होंने थाईलैंड के कार्यवाहक प्रधानमंत्री से अच्छी बातचीत की है और अब कंबोडिया के प्रधानमंत्री से भी युद्ध रोकने को लेकर संवाद किया है। उन्होंने कहा कि दोनों देशों से बातचीत के बाद लगता है कि शांति और समृद्धि पूरी तरह संभव है। अब देखना यह है कि आगे क्या होता है। ट्रंप ने साफ कहा, हम दोनों देशों के साथ व्यापारिक संबंधों पर बातचीत कर रहे हैं, लेकिन मैंने उन्हें स्पष्ट कर दिया है कि अगर वे युद्ध जारी रखते हैं तो अमेरिका उनके साथ कोई व्यापार नहीं करेगा। उन्होंने आगे कहा कि वे जल्द ही दोबारा थाईलैंड को कॉल करेंगे और कंबोडिया से आगे की बातचीत थाईलैंड की प्रतिक्रिया पर निर्भर करेगी। अपने बयान में ट्रंप ने भारत-पाकिस्तान के बीच के अतीत के संघर्ष का भी उल्लेख किया।

जेपीएससी में बड़कागांव के सात अभ्यर्थियों की सफलता, डीएसपी मनीष कुमार का हुआ स्वागत

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बड़कागांव : जेपीएससी की परीक्षा में बड़कागांव प्रखंड से सात लोग डीएसपी,बीडीओ बने लोगों की स्वागत कार्यक्रम थमने का नाम नहीं ले रहा है। राज्य में सातवां स्थान प्राप्त डीएसपी रोबिन शनिवार को स्वागत के पश्चात दूसरे दिन रविवार को बड़कागांव मुख्य चौक निवासी नव चयनित डीएसपी मनीष कुमार का अंबेडकर मोहल्ला एवं अन्य ग्रामीणों ने जोरदार स्वागत किया। इस दौरान मनीष ने ब्लॉक मोड, गुरु चट्टी ,थाना रोड, मुख्य चौक दैनिक बाजार ,अंबेडकर मोहल्ला होते हुए काली मंदिर पहुंचे एवं माता का दर्शन कर आशीर्वाद प्राप्त किया। वही संविधान निमार्ता डॉक्टर भीमराव अंबेडकर की आदमकद प्रतिमा पर माल्यार्पण कर श्रद्धांजलि अर्पित किया। तत्पश्चात लोगों के बीच मिठाई बांटकर खुशी जाहिर की गई।

अंबेडकर मोहल्ला से दर्जनों लोगों ने नाम रोशन किया

शिक्षा के क्षेत्र में मध्य पंचायत अंबेडकर मोहल्ला के दर्जनों लोगों ने नौकरी में मुकाम हासिल कर प्रखंड का नाम रोशन किया है। जिसमें 2022 में चंद्रशेखर डीएसपी बने अभी देवघर में कार्यरत हैं, रूपेश कृष्णा सॉफ्टवेयर इंजीनियर है अभी अमेरिका के वाशिंगटन में कार्यरत हैं, इनके अलावा शिवशंकर राम, कृष्णा राम, बैजनाथ रजक, चेतलाल राम, विनोद रजक, अशोक कुमार, अजय राम ,सुकेश कुमार, धर्मनाथ राम ,विकास तूरी, निरंजन राम, पिंकी कुमारी ,तीजन राम, अमित कुमार शिक्षक बन कर नाम रोशन किया वहीं अभिषेक कुमार माइनिंग ,दीपक कुमार इंजीनियर, उदय कुमार पंचायत सचिव, पवन कुमार आनंद ट्रेजरी अकाउंटेंट असिस्टेंट ,बादल कुमार आनंद इनकम टैक्स ऑफिसर बनकर अपनी काबिलियत दिखलाई है। स्वागत कार्यक्रम में पूर्व विधायक लोकनाथ महतो, रविदास महासभा प्रखंड अध्यक्ष असेश्वर राम , सांसद सह प्रतिनिधि कृष्ण राम, माता सुनैना देवी ,मुखिया तकरीमुला खान ,पंसस रितेश ठाकुर, प्रभु राम , कोलेश्वर साव, शिक्षक संजय निगम,राकेश कुमार दास,धर्मनाथ राम, बैजनाथ राम, सुकेश कुमार, मुनेश कुमार, रवि राम, रघुनाथ राम, रामेश्वर राम, राजीव रंजन, जयप्रकाश राम, शंभू कुमार, विकाश कुमार, सूरज कुमार ,अविनाश आहूजा, नीरज मालाकार, जीतू राम, रिकेश कुमार, सतीश दास, अरुण आंबेडकर, गोविंद कुमार,राजू राम, महावीर राम,नामधारी राम, किशोर कुमार, महेश राम,सोनू इराकी, नर्सिंग राम, रामभजू राम, अनिल कुमार, संजय कुमार राम, अशोक कुमार, शिव शंकर कुशवाहा, अवध किशोर कुशवाहा, जयनाथ रविदास ,कुलदीप दास, उदय कुमार के अलावा भारी संख्या में लोग शामिल थे।

एक नजर

हिरासत में लाया गया युवक आफताब अंसारी कस्टडी से फरार

रामगढ़ : थाना से एक बड़ा मामला सामने निकल कर आ रहा हैं अर्शी गारमेंट्स से आफताब अंसारी को हिन्दू टाईगर फोर्स नामक संगठन के कुछ लोगों के द्वारा मार पिट किया जा रहा था ।जिसकी सुचना रामगढ़ पुलिस को दिया गया। जिसके बाद पुलिस मौके पर पहुंचे कर आफताब अंसारी को थाना लाया और पुछ ताछ के लिए सिरिस्ता में रखा गया था ।जहां मौका मिलते ही आफताब अंसारी पुलिस को चकमा देते हुए कस्टडी से फरार हो गया । जिसकी खबर परिजनों को मिलते ही रामगढ़ थाना का घैराव करते हुए पुलिसिया करवाई पर सवाल खड़ा करते हुए उचित करवाई कि मांग कि जा रही हैं ।वहीं पतरातु एसडीपीओ गौरव गोस्वामी ने बताया कि आफताब अंसारी को पुछ ताछ के लिए सिरीस्ता में रखा गया था ।अफताब अंसारी पुलिस को चकमा दे कर भागने में कामयाब हो गया। जिसकी सीसीटीवी फुटेज से स्पष्ट कर दिया जाएगा । जिसकी छानबीन गहनता पूर्वक किया जा रहा है । वहीं कांग्रेस के पूर्व कार्यकारी अध्यक्ष सहजादा अनवर ने बताया कि यौन शोषण के अपराधिक के तौर पर पुलिस अफताब अंसारी को पकड़ कर थाने लाई । हिंदू टाइगर फोर्स के द्वारा मारपिट किया जा रहा था। जिसकी सूचना पर पुलिस उसे पड़कर लाई थी। लेकिन आप पुलिस का कहना है कि आफताब अंसारी पुलिस को चकमा देकर फरार हो गया है।

सिद्धू-कान्हू और केबी सहाय की प्रतिमा क्षति मामला तूल पकड़ता जा रहा, आदिवासी समाज में आक्रोश

हजारीबाग : जिले में जनजातीय जननायक सिद्धू कान्हु और पूर्व मख्यमंत्री केबी सहाय की प्रतिमा तोड़े जाकामामलामला तुल पकड़ता जा रहा है। इस घटना को लेकर खासकर जनजातिय समुदाय में आक्रोश भड़क रहा है। घटना के दिन भी आदिवासी समाज के लोगों ने सड़क जामकर विरोध प्रदर्शन किया था। लेकिन जब तक इस घटना को अंजाम देने वाले गिरफ्तार नहीं किए जाते है। तब तक यह मामला तूल पकड़ता रहेगा। लोग प्रशासन से यह भरोसा चाहते हैं कि दूसरी बार ऐसी घटना की पुनरावृत्ति नहीं हो। रविवार को अबुआ संथाल समाज भारत दिसोम के दिसोम मांझी केंद्रीय अधक्ष विनोद किस्कु के निर्देश पर उससे जूड़े नेताओं ने इस घटना की निंदा करते हुए विरोध जताया। दिसोम जोगन दीपक गुड्डू, नरेश हंसदा फूलचंद हेंब्रम आदि ने संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते कहा कि 24 जुलाई को असामाजिक तत्वों ने संथाल समाज के प्रथम स्वतंत्रता सेनानी सिद्धू कान्हु की प्रतिमा को क्षतिग्रस्त कर दिया। साथ मे स्वतंत्रता सेनानी और एकीकृत बिहार के मुख्यमंत्री केबी सहाय की प्रतिमा को क्षतिग्रस्त कर दिया गया। अबुआ संथाल समाज भारत दिसोम इस घटना की निंदा करता है। आखिर ऐसे लोगों को जननायक और स्वतंत्रता सेनानी जैसे महापुरुषों का प्रतिमा का खंडित कर क्या संदेश देने का काम कर रहे हैं। बल्कि वह सामाजिक विघटन का काम कर रहे है। ऐसे लोगों को चेतावनी दी जाती है कि यदि दोबारा इस घटना की पुनरावृति हुई तो ऐसे समाज ऐसे लोगों को चिन्हित कर खुद कार्रवाई करेगा। केंद्रीय अध्यक्ष मामले को लेकर सोमवार को टीसीपी से मिलने आ रहे हैं। जिसमें घटना को अंजाम देने वाले लोगों को गिरफ्तार करने की मांग की जाएगी।

सिमराजरा में चेचक से एक महिला गंभीर रूप से बीमार

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बड़कागांव : बड़कागांव आंगो पंचायत स्थित सिमरजरा गांव में इन दिनों चेचक रोग की फैलने की आशंका बढ़ गई है। गांव की एक महिला को चेचक हो गया है। वह गंभीर रूप से बीमार है। महिला के दो ढाई साल का एक बच्चा भी है जो निरंतर उसके साथ रह रहा है। जिसके कारण यह बीमारी तेजी से फैल सकता है। सिमरजरा गांव में सभी अनुसूचित जनजाति के 25 घर है जिसमें 130 की जनसंख्या है। इस गांव में स्वास्थ्य को लेकर लोगों में जागरूकता की कमी देखी जा रही है। जिसे लेकर प्रशासन को विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। ताकि बरसात के दिनों में खानपान ,रहन-सहन के अलावा अन्य के महत्वपूर्ण बातों को लेकर लोगों को जागरूक करने की जरूरत है,ताकि लोग ,रोग बीमारी से बच सके। इस गंभीर मामले को प्रखंड चिकित्सा पदाधिकारी डॉ अविनाश कुमार ने बताया कि गांव में चेचक रोग की रोकथाम के लिए सोमवार को मेडिकल टीम गठित कर सिमराजरा में स्वास्थ्य शिविर लगाया जाएगा। सभी ग्रामीणों की जांच की जाएगी जिसमें चेचक रोग पर विशेष जांच होगी। लोगों का सैंपल लिया जाएगा। इसके अलावा अन्य सभी प्रकार की बीमारियों की भी जांच की जाएगी। बताते चलें कि इन दिनों सिमराजरा गांव सुर्खियों में बना हुआ है। हजारीबाग उपायुक्त के निर्देश पर गांव में बिजली पहुंचाने के लिए बिजली विभाग द्वारा कार्य जोरों पर किया जा रहा है।

अंधेरे में फंसी ज़िंदगी, आजादी के दशकों बाद भी मुड़िया और करगा गांव बिजली से वंचित

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

चौपारण : आजादी के 78 वर्षों से अधिक समय बीत जाने के बावजूद चौपारण प्रखंड के दैहर पंचायत अंतर्गत मुड़िया और करगा गांव के लोग आज भी अंधेरे में जीवन जीने को मजबूर हैं। सरकार द्वारा बिजली आपूर्ति की मंजूरी मिलने और तार खिंच जाने के बावजूद वन विभाग द्वारा बिजली खंभा लगाने की अनुमति नहीं दिए जाने से गांव में बिजली आपूर्ति ठप है। ग्रामीणों की नाराजगी रविवार को उस समय सामने आई जब स्थानीय मुखिया ब्रमदेव भुइयाँ की अध्यक्षता में ग्रामसभा आयोजित की गई। सभा में लोगों ने वन विभाग और प्रशासन से अपील की कि जल्द से जल्द अड़चनें दूर कर गांव में बिजली बहाल की जाए। मुखिया प्रतिनिधि नागेंद्र कुमार ने कहां की हम ग्रामसभा के माध्यम से सरकार और वन विभाग से आग्रह करते हैं कि मुड़िया और करगा गांव में अतिशीघ्र बिजली आपूर्ति बहाल की जाए। यहां के कई बच्चों ने आज तक बिजली की रौशनी नहीं देखी है। यह अत्यंत दुःखद है कि डिजिटल इंडिया के युग में ये गांव अब भी अंधेरे में हैं। सरकार की योजनाओं का लाभ ग्रामीणों तक नहीं पहुंच पा रहा है, जबकि बजट स्वीकृति हो चुकी है और कार्य अधूरा पड़ा है। ग्रामीणों का कहना है कि खंभे के अभाव में 11,000 वोल्ट की लाइन का कनेक्शन संभव नहीं हो पा रहा है, जबकि तार और अन्य उपकरण पहले ही लगा दिए गए हैं। बिजली के अभाव में बच्चों की पढ़ाई, ग्रामीणों की दिनचर्या और स्वास्थ्य सेवाएं बुरी तरह प्रभावित हो रही हैं। ग्रामीणों ने चेताया है कि यदि शीघ्र समाधान नहीं हुआ तो वे आंदोलन और धरना प्रदर्शन के लिए बाध्य होंगे।

लइयो में नमो फुटबॉल टूर्नामेंट का हुआ उद्घाटन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

वेस्ट बोकारो (घाटो) : सांसद खेल महोत्सव के तहत रविवार को नमो फुटबॉल टूर्नामेंट का उद्घाटन घाटो मंडल क्षेत्र के ग्राम लइयो के जितिया फुटबॉल मैदान में किया गया। बतौर मुख्य अतिथि सांसद मनीष जायसवाल ने मशाल जलाकर, खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त करके और किक मारकर उद्घाटन किया। उद्घाटन मैच एंजेल एफसी ब्वॉयस लइयो और शार्क स्टेट एफसी घाटो के बीच खेला गया। जिसमें एंजेल एफसी ब्वॉयस लइयो की टीम ने 2-0 शार्क स्टेट एफसी घाटो की टीम को पराजित कर दिया। इस अवसर पर सांसद मनीष जायसवाल ने खिलाड़ियों को संबोधित करते हुए कहा कि नमो फुटबॉल का इतिहास 2016 से है। 2016 में हजारीबाग जिला के कटकमदाग प्रखंड से शुरूआत हुआ। इसकी शुरूआत जब हुई थी, तब इस टूर्नामेंट को कोई जानता नहीं था कि आने वाले दिनों में यह चलकर राज्य के सबसे बड़ा टूनार्मेंट बनने वाला है। पिछले वर्ष 884 टीमों ने इस टूनार्मेंट में हिस्सा लिया था और इस बार लगभग 1500 टीम हिस्सा लेंगे। नमो टूनार्मेंट का पहला लक्ष्य खिलाड़ियों का मौका देना है। खिलाड़ी मैदान पर अपना जौहर दिखाएं, उनका जोहर मोबाइल पर ना दिखे, मोबाइल पर गेम खेलकर और उनका समय सोशल मीडिया पर न बीते। जो मैदान पर रहेगा वही फिट रहेगा और जो फिट रहेगा वही हिट रहेगा। दूसरा लक्ष्य किसी भी खिलाड़ी में प्रतिभा हो तो वह यहां से निकलकर अपने प्रखंड जिला राज्य और संभव हो तो देश के लिए खेले। तीसरा लक्ष्य समाज को नशा मुक्त करना और युवाओं को नशा से दूर रखना है। इससे पहले सांसद ने मौके पर उपस्थित सभी लोगों को शपथ दिलाई कि समाज को नशामुक्त करना है। इस टूर्नामेंट में कुल 48 टीम ने हिस्सा लिया है।

सावन महीना आते ही कृषक महिला पुरुष खेतो पर धनरोपनी मे जुटे

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रजरप्पा : सावन भादो महीना के आगमन पर विशेष रूप से धान रोपनी का काम तेजी से शुरू कर दिया गया है रामगढ़ जिला के सदर रामगढ़ चितरपुर दुलमी एवं गोला क्षेत्र मे अहले सुबह किसान हल-बैल लेकर खेतों मे उतर गए है, खेतो की जुताई कोड़ाई शुरू हो गई है,सावन महीना के आगमन होते ही महिलाएं धनरोपनी काम मे जुड़ गई है और अपने अपने खेत मे धान रोपने का काम प्रारम्भ कर दिया गया है हलाकि एक महीना तक लगातार मुसलाधार वारिस होने के कारण कृषक हताश और निराश हुए तथा किसानों के समक्ष कठिन समस्या उत्पन्न हो गई थी विकट परिस्थिति मे कठिन मेहनत का सामना करना पड़ रहा है, अत्यधिक वर्षा होने से धान का विचड़ा खेतो मे सड़ गल गया जिससे धान की रोपाई करने मे लगभग 15 दिनों से अधिक पिछड़ गया और लगभग दो सप्ताह धान बीज की रोपाई मे देरी हो गई फिर भी साल भर मे एक महत्वपूर्ण फसल धान की खेती की जाती है और हिम्मत नहीं हारे, किसानों को मौका मिलते ही हल बैल लेकर खेत मे जमकर धनरोपनी कार्यों मे कृषक व्यस्त है अबतक लगभग 15 % से 20% तक धान की रोपाई हो गई है, खेतो की धन रोपनी मे महिलाओं की अहम भूमिका रहती है तथा खेतों मे धान की रोपाई करते महिलाए गीत गाने से चुके नहीं और रिमझिम रिमझिम झमाझम वारिस के बीच अपने खेतो मनमोहक गीत भी गाते गए की निहुर निहुर रोपे धान गोरिया रिमझिम वरसे रे बदरिया।

अफताब अंसारी हत्याकांड : कांग्रेस नेता साजिद अली ने बताया संविधान पर हमला

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रामगढ़/हजारीबाग : रामगढ़ अफताब अंसारी हत्याकांड पर हजारीबाग जिला कांग्रेस कमिटी अल्पसंख्यक विभाग के जिलाध्यक्ष सह कांग्रेस नेता साजिद अली खान ने प्रेस विज्ञप्ति जारी कर कहा है की अफताब अंसारी हत्याकांड भारत के संविधान,कानून एंव इंसानियत के साथ साथ झारखंड प्रदेश की एकता एंव अखंडता पर हमला है पुलिस हिरासत मे लाये गए अफताब अंसारी अखिरकार गायब कैसे हुआ फिर युवक मृत अवस्था में कैसे मिला। ये पूर्ण रुप से सुनियोजित ढंग से की गई साजिश प्रतित होता है जो जाचोपंरात ही स्पष्ट हो पाएगा उक्त पूरे प्रकरण कि सी.आई.डी जांच की जानी चाहिए जिससे कोई भी दोषी हो बच नही पाये। साजिद ने इस बर्बरतापूर्ण हत्याकांड पर आगे प्रतिक्रिया देते हुए कहा की झारखंड में कानून व्यवस्था ध्वस्त कर भाजपा अपनी धार्मिक उन्माद वाली व्यवस्था लागू कर प्रदेश का माहौल खराब करना चाहती है यह पूरा प्रकरण बाबूलाल मरांडी के ट्वीट के बाद बढा है मरांडी के ट्वीट के बाद जो तनाव उससे ही अफताब कि जान चली गई जो दुर्भाग्यपूर्ण है। आफताब कि हत्या पुलिस कस्टडी के साथ-साथ भाजपा की कट्टरवाद विचारधारा ने ली है। आखिरकार भाजपाई और हिन्दू टाइगर फोर्स कौन होता है कानून को अपने हाथ मे लेने वाला ये पूर्ण रुप से उच्चस्तरीय जांच का मामला है इस हत्याकांड कि सी.आई.डी. जांच कि जानी चाहिए जाचोपंरात टाइगर फोर्स और उनके संरक्षको पर अफताब के हत्या का केस दर्ज की जानी चाहिए। आगे साजिद अली ने कहा कि अगर रामगढ जिले मे थाना को भी कोई संगठन चला रही है तो बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण है थाना समेत सभी सम्बन्धित पदाधिकारीयो पर कडी से कडी कार्रवाई कि जानी चाहिए। साजिद अली ने कहा कि राज्य के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन को इस पूरे प्रकरण की जानकारी है अफताब को न्याय दिलाने के लिए सख्त से सख्त शीघ्र कार्रवाई कि अवश्यकता है बरही के रूपेश पाण्डेय हत्याकांड मामले कि तरह मृतक अफताब अंसारी के परिजनो को शीघ्र आर्थिक सहयोग के रूप दस लाख रुपए एंव मृतक के परिजनो को सरकारी नौकरी दें जिससे निर्दोष अफताब के परिवार का भविष्य सुधर सके।

संक्षिप्त खबरें

जोराकाठ की महिला कलाकारों को राष्ट्रपति द्वारा सम्मान, कोहबर कला को मिली अंतरराष्ट्रीय पहचान

बड़कागांव : हजारीबाग जिला के बड़कागांव प्रखंड अंतर्गत ग्राम जोराकाठ की महिलाएं सजवा देवी पति मुंशी महतो , अनिता देवी पति अमित महतो, मालो देवी पति लालमोहन महतो, रुद्रा देवी पति भरत महतो, मोहनी देवी,आशा देवी पति कमल महतो, मोहनी देवी पति स्वर्गीय रविन्द्र महतो को राष्ट्रपति द्रोपदी मुर्मू के द्वारा प्रशस्ती पत्र देकर सम्मानित किया गया। हजारीबाग के गांव जोराकाठ की गलियों से निकलकर सोहराई और कोहबर कला ने सिर्फ स्थानीय सांस्कृतिक धरोहर को समृद्ध किया बल्कि इसे अंतराष्ट्रीय मंच पर भी पहचान दिलाई । इस कारण यह क्षेत्रीय कला लोकल से ग्लोबल बन गई । शुरूआत में सोहराय और कोहबर की पेंटिंग ने हजारीबाग जिला बड़कागांव जोराकाठ को अपने खास रंगो और डिजाइनों के लिए पहचान दिलाई अब तो यह हजारीबाग के सरकारी भवनों से लेकर नए सांसद भवन तक अपनी छाप छोड़ी चुकी है। इस संबंध में मौके पर जेएलकेएम प्रखंड सचिव गौतम कुमार ने सभी महिला कलाकारों को बधाई दिया एवं उज्वल भविष्य का कामना की। तथा सरकार से सभी कोहबर आर्ट कलाकारों को प्रति माह एक सम्मान जनक प्रोत्साहन राशि देने की मांग की है। ताकि महिलाओं को इस कार्य में मनोबल बढ़े।

कारगिल युद्ध विजय दिवस की वर्षगांठ पर कांग्रेसियों ने शहीदों को दी भावभीनी श्रद्धांजलि

हजारीबाग : जिला कांग्रेस कमिटी के तत्वावधान में जिला कांग्रेस के अध्यक्ष शैलेन्द्र कुमार यादव के नेतृत्व में कारगिल युद्ध विजय दिवस की वर्षगांठ पर कांग्रेसियों ने शहीदों को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। इस अवसर पर शहीदों के बलिदान और वीरता को याद करते हुए कांग्रेस कार्यकताओं ने उन्हें श्रद्धांजलि दी और उनके अमर बलिदान को नमन किया। इस अवसर पर जिला अध्यक्ष शैलेन्द्र कुमार यादव ने अपने संबोधन में उन्होंने कहा, ३आज का दिन उन वीर सपूतों को याद करने का है, जिन्होंने अपनी जान की परवाह न करते हुए देश की सीमाओं की रक्षा की। भारतीय सेना ने जम्मू-कश्मीर के कारगिल की चोटियों से पाकिस्तान की सेना को खदेड़कर बाहर निकाला था और ऑपरेशन विजय को सफलतापूर्वक अंजाम दिया था। तब से हर वर्ष इस दिन को कारगिल युद्ध विजय दिवस के रूप में मनाया जाता है। ३हर वर्ष 26 जुलाई को कारगिल विजय दिवस मनाया जाता है। यह दिन हमें 1999 में भारत और पाकिस्तान के बीच हुए युद्ध के अंत की याद दिलाता है, जब भारतीय सेना ने लगभग 60 दिनों तक चले इस संघर्ष में विजय प्राप्त की थी। यह विजय न केवल हमारी सैन्य क्षमता का प्रतीक है, बल्कि यह हमारे सैनिकों की अदम्य साहस और बलिदान की गाथा भी कहता है। ३कारगिल विजय दिवस हमें याद दिलाता है कि हमारे सैनिक किस तरह दुर्गम परिस्थितियों में देश की रक्षा करते हैं। यह दिन हमें उनके बलिदान और देशप्रेम के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने का अवसर प्रदान करता है।३ कार्यक्रम में उपस्थित कांग्रेसी नेताओं ने शहीदों के प्रति अपनी भावनाएं व्यक्त कीं और उनके बलिदान को याद करते हुए उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। इस अवसर पर मुख्य रूप से महानगर अध्यक्ष मनोज नारायण भगत,सेवा दल अध्यक्ष गुड्डू सिंह, मीडिया अध्यक्ष निसार खान,लाल बिहारी सिंह,अजय गुप्ता,राजू चौरसिया, मिथलेश दुबे,रघु जयसवाल,परवेज अहमद,दिलीप रवि,अनिल भुईयां,मुश्ताक अहमद,अजीत गुप्ता, रिंकू कुमार, मनीषा टोप्पो शामिल हुए।

राजेश सिन्हा की गिरफ्तारी पर बवाल थाना के समक्ष जोरदार धरना-प्रदर्शन

भुरकुंडा : पटेलनगर निवासी हिंदू जागरण मंच के जिला अध्यक्ष राजेश सिन्हा की गिरफ्तारी के विरोध में रविवार को भुरकुंडा थाना परिसर के समक्ष भारी आक्रोश देखा गया। इस मौके पर बड़कागांव विधायक रोशन लाल चौधरी के नेतृत्व में भाजपा, आजसू पार्टी और विभिन्न हिंदू संगठनों के कार्यकताओं ने संयुक्त रूप से जोरदार धरना-प्रदर्शन किया। प्रदर्शनकारियों ने गिरफ्तारी को राजनीति से प्रेरित बताते हुए राजेश सिन्हा की बिना शर्त रिहाई की मांग की। साथ ही प्रशासन के खिलाफ नाराजगी जताते हुए जल्द कार्रवाई नहीं होने पर आंदोलन तेज करने की चेतावनी दी। धरना स्थल पर प्रमुख रूप से मौजूद रहे : अनामिका श्रीवास्तव, अमरेश सिंह, दिलीप दांगी, विश्वरंजन सिन्हा, योगेश दांगी, राकेश सिन्हा, एवं सागर कुमार दांगी सहित कई अन्य कार्यकर्ता।

उपायुक्त के निर्देश पर पथ निर्माण विभाग के अधिकारियों ने किया स्थल निरीक्षण

हजारीबाग : उपायुक्त श्री शशि प्रकाश सिंह के निर्देशानुसार ईचाक प्रखंड के पुरनपनीया गांव तक पथ निर्माण के लिए आवश्यक कार्रवाई प्रारंभ कर दी गई है। इस दिशा में पथ निर्माण विभाग द्वारा स्थल का मुआयना कर विस्तृत परियोजना रिपोर्ट (उद्धफ) तैयार करने की प्रक्रिया शुरू कर दी गई है। स्थानीय ग्रामीणों की मांग एवं आवश्यकताओं को देखते हुए उपायुक्त ने त्वरित संज्ञान लेते हुए संबंधित अधिकारियों को स्थल निरीक्षण कर शीघ्र डीपीआर तैयार करने का निर्देश दिया था, ताकि पथ निर्माण कार्य को यथाशीघ्र अमल में लाया जा सके। पथ निर्माण विभाग के अभियंताओं ने पुरनपनीया गांव तक सड़क की वर्तमान स्थिति, भू-प्राकृतिक स्वरूप एवं संभावित मार्ग का भौतिक परीक्षण किया। निरीक्षण के उपरांत विभाग द्वारा तकनीकी प्राक्कलन तैयार कर कार्य योजना को अंतिम रूप देने की प्रक्रिया प्रारंभ कर दी गई है।

एक नजर

रिसर्च विंग के रूप में विकसित होगा एंपावर : जायसवाल

रांची : रांची के एक होटल में रविवार को आदित्य विक्रम जायसवाल की अध्यक्षता में एंपावर झारखंड की बैठक हुई। बैठक में राज्यहित और जनकल्याण से जुड़े कई मुद्दों पर विचार-विमर्श हुआ। मौके पर आदित्य विक्रम जायसवाल ने कहा कि एंपावर झारखंड को एक रिसर्च विंग के रूप में विकसित करने का निर्णय लिया गया, जो राज्य सरकार को आजीविका, कृषि, हॉर्टिकल्चर, ट्राइबल इकोनॉमी, टूरिज्म कॉरिडोर तथा स्थानीय लोगों को रोजगार से जोड़ने जैसे विषयों पर शोध कर सुझाव और रिपोर्ट उपलब्ध कराएगा। जायसवाल ने कहा कि इस पहल का उद्देश्य झारखंड को मजबूती से आगे बढ़ाना और युवाओं को राज्य में ही रोजगार उपलब्ध कराकर पलायन रोकना है। उन्होंने बताया कि एक समर्पित रिसर्च टीम का गठन किया जाएगा। कार्यक्रम में अनूप शाहदेव ने अक्टूबर माह में टूरिज्म कॉन्क्लेव आयोजित करने की घोषणा की, जिसमें पर्यटन के जरिए स्थानीय लोगों को रोजगार से जोड़ने की रणनीति पर चर्चा होगी। बैठक में भुवनेश ठाकुर, अपूर्वा बरियार, किनीता सिन्हा, सरवर पॉल और एलन एंड्रयू सहित अन्य लोग मौजूद थे।

मुक्ति संस्था ने 47 शवों का किया अंतिम संस्कार

रांची : झारखंड की राजधानी रांची में मुक्ति संस्था के सदस्यों ने रविवार को जुमार नदी के तट पर 47 अज्ञात शवों का संपूर्ण विधि-विधान से अंतिम संस्कार किया। मुक्ति संस्था के अध्यक्ष औप सदस्यों ने राजेंद्र आयुर्विज्ञान संस्थान (रिम्स) के शव गृह से अज्ञात शवों को निकाला, उन्हें पैक किया और जुमार नदी के तट पर लेकर गए। यहां संपूर्ण विधि-विधान के साथ सभी शवों का अंतिम संस्कार किया गया। संस्था के अध्यक्ष प्रवीण लोहिया ने शवों को मुखाग्नि दी। अंतिम अरदास परमजीत सिंह टिंकू ने किया। संस्था के अध्यक्ष प्रवीण लोहिया ने इस मौके पर बताया कि मुक्ति संस्था के जरिये अबतक कुल 2034 अज्ञात शवों का अंतिम संस्कार किया गया है। मौके पर संस्था से जुड़े प्रवीण लोहिया, रवि अग्रवाल, उज्जवल जैन, आर के गांधी, हरीश नागपाल, संदीप कुमार, संजय सिंह, सुनील अग्रवाल, राहुल जायसवाल, विजय धानुका सहित अन्य मौजूद थे।

रोटरी क्लब ऑफ रांची ने चलाया पौधारोपण अभियान

रांची : झारखंड की राजधानी रांची में रोटरी क्लब ऑफ रांची के तत्वावधान में रविवार को झारखंड जगुआर कैंपस में पौधारोपण अभियान चलाया गया। इस अभियान के तहत 800 से अधिक फलदार और छायादार पौधे लगाए गए। अभियान में झारखंड जगुआर पुलिस टीम का विशेष सहयोग रहा। पौधारोपण अभियान में सहयोग के लिए क्लब की ओर से पुलिस विभाग को हार्दिक धन्यवाद ज्ञापित किया गया, जिन्होंने इस अभियान के लिए स्थान, सहयोगी टीम, सभी आवश्यक सुविधाएं की व्यवस्था की। इस अवसर पर रोटरी क्लब के असिस्टेंट गवर्नर (एजी) रोटेरियन हरमिंदर सिंह का भी विशेष आभार प्रकट किया गया, जिन्होंने इस अभियान की योजना से लेकर क्रियान्वयन तक हर स्तर पर जिम्मेदारी निभाई और अभियान को सफल बनाया। हरमिंदर ने इस मौके पर कहा कि यह केवल एक दिन का कार्यक्रम नहीं है, बल्कि पर्यावरण के प्रति हमारी दीर्घकालिक प्रतिबद्धता का प्रतीक है। हम भविष्य में भी इसी तरह के सेवाकार्य करते रहेंगे। कार्यक्रम को सफल बनाने में क्लब के अध्यक्ष अमित अग्रवाल, पीपी भंडारीलाल, पीडीजी राजीव मोदी, रोटेरियन प्रकाश सरावगी, रोटेरियन मेघा कपूर, रोटेरियन रश्मि, रोटेरियन राबिया पाल सहित अन्य ने सहयोग किया।

ओरमांझी में डकैती की साजिश नाकाम, अंतरराज्यीय गिरोह का भंडाफोड़, तीन अपराधी गिरफ्तार

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : जिले के ओरमांझी थाना क्षेत्र में पुलिस ने एक बड़ी कार्रवाई करते हुए पावर ग्रिड में डकैती की साजिश रच रहे एक अंतरराज्यीय गिरोह का भंडाफोड़ किया है। पुलिस ने तीन अपराधियों को गिरफ्तार कर उनके पास से हथियार, वाहन, नकद रुपए और अन्य आपत्तिजनक सामग्री बरामद की है।

पुलिस को 26 जुलाई को लगभग 10:30 बजे गुप्त सूचना प्राप्त हुई थी कि कुछ अपराधी बिना नंबर प्लेट की स्कॉर्पियो गाड़ी में सवार होकर पावर ग्रिड क्षेत्र में रेकी कर रहे हैं और कॉपर तार की डकैती की योजना बना रहे हैं। इस सूचना के आधार पर राँची के पुलिस उपमहानिरीक्षक-सह-वरीय पुलिस अधीक्षक के निर्देश पर एक विशेष टीम का गठन किया गया, जिसमें पुलिस उपाधीक्षक, सिल्ली के नेतृत्व में त्वरित कार्रवाई की गई। टीम ने ग्राम चेतनबाड़ी (निमार्णाधीन भारतमाला प्रोजेक्ट रोड) के पास घेराबंदी कर तीन अपराधियों, जय प्रकाश पासवान, दिनेश चौधरी और भोला चौधरी को गिरफ्तार किया। ये सभी पश्चिम बंगाल के पश्चिमी बर्दवान जिले के निवासी हैं। ये अपराधी हुए गिरफ्तार जय प्रकाश पासवान (30 वर्ष), पिता - स्व. राजेन्द्र पासवान, ग्राम - पस्साबेडा, थाना - डी.टी.पी.एस. दुगार्पुर, जिला - पश्चिम बर्दवान, पश्चिम बंगाल। दिनेश चौधरी (22 वर्ष), पिता - स्व. लालजी चौधरी, ग्राम - वरियामाना, थाना - डी.टी.पी.एस. दुगार्पुर, जिला - पश्चिम बर्दवान, पश्चिम बंगाल। भोला चौधरी (27 वर्ष), पिता - मदन चौधरी, ग्राम - वरियामाना, थाना - डी.टी.पी.एस. दुगार्पुर, जिला - पश्चिम बर्दवान, पश्चिम बंगाल।

गिरफ्तारी के दौरान बरामद सामग्री : एक देशी कट्टा, दो जिंदा कारतूस, चार मोबाइल फोन,दो जियो सिम कार्ड, नगद 1710, एक उजला रंग का स्कॉर्पियो (बिना नंबर प्लेट, रजिस्ट्रेशन नंबर डब्ल्यूबी 38एएच 2738 दशार्या गया। तार काटने वाला कटर, प्लास और अन्य उपकरण।

धूमधाम से मना श्री जीण माताजी का सावन सिंधारा उत्सव, झूमे श्रद्धालु

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : श्री जीण माता प्रचार समिति की ओर से आदि शक्ति श्री जीण माताजी का सावन सिंधारा उत्सव रविवार को स्थानीय स्वर्ण भूमि बैंक्वेट हॉल में धूमधाम से मनाया गया। उत्सव की शुरूआत गणेश वंदना से हुई जिसके साथ माता की ज्योत प्रज्वलित की गई। पुरुलिया से आई भजन गायिका शीतल कटारूका ने माता के भजनों की शुरूआत की। अपने मधुर भजनों से उन्होंने पूरे उत्सव में जीण भक्ति रस की वर्षा कर दी। उनके जरिये गाये गए प्रमुख भजन फूल बिछाओ आंगन में मेरी मैया आने वाली है, आन पधारो झूला में मां भक्त करे मनुहार, लाया थारी चुनरी कर लो मां स्वीकार मैया थारो रूप मन भायो जिओ हषार्यो, मेरी गाड़ी मेरा बंगला मेरा पैसा सब तेरा सहित अन्य भक्तिमय गीत संगीत से सभी भक्तगण झूमने को मजबूर हो गए। उत्सव में माता को चुनरी, मेंहदी, गजरा एवं निशान चढ़ाया गया। इसके बाद महाआरती एवं महाप्रसाद के साथ आयोजन सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए अध्यक्ष ओम प्रकाश अग्रवाल, उपाध्यक्ष विजय पालड़ीवाल, सचिव नारायण विजयवर्गीय, कोषाध्यक्ष बजरंग सोमानी, सविता शर्मा सहितच अन्य लोगों ने साथ दिया।

राज्य सरकार हर मोर्चे पर नाकाम विस सत्र में बनेगा मुद्दा : सुदेश महतो

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : आजसू पार्टी प्रमुख एवं पूर्व उपमुख्यमंत्री सुदेश महतो ने कहा कि आगामी झारखंड विधानसभा सत्र में उनकी पार्टी हेमंत सरकार की नाकामियों को मुद्दा बनाएगी। झामुमोझकांग्रेस ने जनता को दिग्भ्रमित कर दूसरी बार सरकार बनाई है, लेकिन मंत्रियों को जनमुद्दों की फिक्र नहीं। महतो ने पार्टी मुख्यालय में मिलन समारोह के बाद मीडिया से बातचीत करते हुए कहा कि आजसू ने हेमंत सरकार को अपना प्रदर्शन सुधारने के लिए 6 माह का समय दिया था, लेकिन 9 माह बीत जाने के बाद भी झामुमो-कांग्रेस की सरकार जनता के हितों की रक्षा में पूरी तरह विफल रही है। उन्होंने कहा कि राज्य में कानून व्यवस्था ध्वस्त है, माफिया और आपराधिक गिरोहों का दबदबा कायम है। कोयला, बालू, गिट्टी की

तस्करी खुलेआम हो रही है। चुनाव जीतने के लिए झामुमो ने मइया योजना का इस्तेमाल किया, लेकिन अब 6 लाख महिलाओं का नाम क्यों काटा जा रहा है। इसके लिए सरकार को जवाब देना होगा। इस अवसर पर बुद्धिजीवी मंच के अध्यक्ष डोमन सिंह मुंडा, मुख्य प्रवक्ता डॉ देव शरण भगत, झारखंड आंदोलनकारी प्रवीण प्रभाकर, मुकुंद मेहता, संजय मेहता, इम्तियाज अहमद नज्मी, शादाब रजा आदि उपस्थित थे। संचालन संजय साहू ने किया जबकि धन्यवाद ज्ञापन मो. कैफ ने किया। आजसू पार्टी के केंद्रीय कार्यालय में आयोजित मिलन समारोह में झामुमोझकांग्रेस को छोड़ कई कार्यकर्ता आजसू पार्टी में शामिल हुए। पार्टी नेताओं ने उनका स्वागत पट्टा और माला पहना कर किया। सदमा पंचायत, ओरमांझी के पूर्व मुखिया हरिलाल मुंडा, अमित टोप्पो, मोतीलाल टोप्पो, कांके क्षेत्र के मो वसीम, मो शाहबाज, अहमद अली, शाहिद अहमद एवं सलाउद्दीन सहित अनेक लोग पार्टी में शामिल हुए।

क्षेत्रीय भाषाओं को नियोजन में शामिल करने के लिए विधायकों से मिलेगा मंच

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : अखिल भारतीय भोजपुरी मगही मैथिली अंगिका मंच के अध्यक्ष कैलाश यादव के नेतृत्व में बैठक हरमू में हुई। बैठक में चर्चा के दौरान निर्णय लिया गया कि राज्य में भाषाई अस्मिता के सवाल पर जल्द मंच की ओर से एक विशेष प्रतिनिधिमंडल सदस्यों की कमिटी गठन किया जाएगा। मंच के अध्यक्ष कैलाश यादव ने कहा कि विशेष कमिटी के नामित लोग राज्य सरकार में भोजपुरी, मगही, मैथिली, अंगिका और भूमिज भाषा के बोलने वाले लोग मंत्रियों से मिल कर ज्ञापन सौपेंगे। उन्होंने कहा कि भोजपुरी और मगही बोलने वाले मंत्री राधाकृष्ण किशोर दीपिका पांडेय सिंह, मैथिली और अंगिका बोलने वाले संजय प्रसाद यादव और विधानसभा अध्यक्ष रविन्द्र नाथ महतो जैसे विधायकों को ज्ञापन सौंपा जायेगा। उल्लेखनीय है कि राज्य में शामिल द्वितीय राजभाषा भोजपुरी, मगही, मैथिली, अंगिका और भूमिज को क्षेत्रीय भाषा के नियोजन नीति सूची से हटा दिया गया है। इसे राज्यस्तर पर पुनः शामिल करने की मांग को लेकर मंच जनजागरण बैठक के माध्यम से लगातार सरकार को अवगत करा रहा है। इस दौरान बैठक में मंच के वरिष्ठ नेता अमरनाथ झा ने भी विचार व्यक्त किया। बैठक में कैलाश यादव, अमरनाथ झा, सुरेन्द्र मिश्रा, राधेश्याम यादव, चंद्रदेव मंडल, रामकुमार सिंह, सुधीर गोप, कुंदन सिंह, सुनील पांडेय सहित अन्य मौजूद थे।

समर्पण शाखा ने किया पूर्व अध्यक्ष के सम्मान में रक्तदान शिविर का आयोजन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : समर्पण शाखा की ओर से रजत जयंती के अवसर पर पूर्व प्रांतीय अध्यक्षों और महामंत्रियों की सेवा, समर्पण और नेतृत्व को सम्मान देते हुए रक्तदान शिविर का आयोजन शनिवार को किया गया। कार्यक्रम में पूर्व प्रांतीय अध्यक्ष स्वर्गीय विनय जालान को शाखा की ओर श्रद्धांजलि दी गई। इस मौके पर नुक्कड़ नाटक का भी आयोजन किया गया। कार्यक्रम के जरिये लोगों के बीच में जागरूकता फैलाई गई कि उन्हें रक्तदान क्यों करना चाहिए। साथ ही थैलेसीमिया बीमारी से बचाव के बारे में जानकारी दी गई। यह कार्यक्रम आरबी स्प्रिंगडेल पब्लिक स्कूल में किया गया। नुक्कड़ नाटक में पार्टिसिपेट करने वाले बच्चों को फुटबॉल दिया गया। साथ ही बच्चों के बीच जूस का वितरण किया गया। कार्यक्रम में अध्यक्ष पूजा अग्रवाल, शुभा अग्रवाल, रेखा रायका, पूजा जैन, कोमल पोद्दार सहित अन्य सदस्य मौजूद रहे।

भारतीय दर्शन और भाषा साहित्य को आत्मसात करने की जरूरत : सीपी सिंह

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा और अंतरराष्ट्रीय हिंदी साहित्य भारती, झारखंड इकाई के संयुक्त तत्वावधान में रविवार को पुराना विधानसभा सभागार में भारतीय ज्ञान परंपरा और समकालीन समाज विषय पर एक दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन हुआ। इस अवसर पर बतौर मुख्य अतिथि पूर्व मंत्री एवं विधायक सीपी सिंह ने कहा कि भारतीय संस्कृति कोई बीता हुआ अध्याय नहीं, बल्कि एक जीवंत विरासत है, जिसे नई पीढ़ी तक पहुंचाना जरूरी है। उन्होंने कहा कि युवाओं को भारतीय दर्शन और भाषा साहित्य को आत्मसात करने करने

की जरूरत है। मौके पर ग्रामीण विकास मंत्री दीपिका पांडेय सिंह ने ऑनलाइन वीडियो कॉल के माध्यम लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि जब तक हम अपनी संस्कृति और मूल्यों को नहीं अपनाएंगे, तब तक भारत को विश्वगुरु बनाना कठिन है। उन्होंने आयोजकों के प्रयासों की सराहना की। कार्यक्रम की अध्यक्षता अंतरराष्ट्रीय हिंदी साहित्य भारती के राष्ट्रीय अध्यक्ष और उत्तर प्रदेश के पूर्व शिक्षा मंत्री रविन्द्र शुक्ल ने की। उन्होंने कहा कि भारतीय ज्ञान परंपरा में संपूर्ण विश्व को दिशा देने की क्षमता है और इसे आधुनिक संदर्भों में पुनर्परिभाषित किया जाना चाहिए। गौसेवा आयोग के अध्यक्ष राजीव रंजन प्रसाद ने इस विचार का उत्सव बताया और कहा कि यह संस्कृति की पुनर्स्थापना की दिशा में सार्थक प्रयास है। केंद्रीय हिंदी संस्थान के क्षेत्रीय निदेशक डॉ रंजन कुमार दास ने भारतीयता को एक समसामयिक जीवनशैली बताते हुए शिक्षा, संस्कृति और भाषा के समन्वय पर बल दिया। केंद्रीय महामंत्री रामनिवास शुक्ल ने कहा कि यह समय साहित्य और सांस्कृतिक मूल्यों को संगठित रूप से प्रस्तुत करने का है। संगोष्ठी के संयोजक अजय राय ने आयोजन के उद्देश्य और पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालते हुए कहा कि यह मंच भारतीय संस्कृति और झारखंड की परंपराओं के समन्वय का प्रयास है। प्रदेश अध्यक्ष डॉ अरुण सज्जन ने स्वागत भाषण में बिरसा मुंडा की धरती को याद करते हुए वैदिक परंपरा को पुनर्स्थापित करने का संकल्प दोहराया। झारखंड के विभिन्न विश्वविद्यालयों से आए शोधार्थियों द्वारा 35 शोधपत्र प्रस्तुत किए गए। कार्यक्रम में प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र और स्मृति-चिह्न भेंट किए गए। कार्यक्रम के द्वितीय सत्र की अध्यक्षता सोच-विचार पत्रिका के संपादक डॉ नरेंद्र मिश्र ने की और उन्होंने आयोजन की गंभीरता और सफलता की सराहना की।

संक्षिप्त खबरें

जेएलकेएम प्रतिनिधिमंडल ने राज्यपाल से की मुलाकात, सौंपा ज्ञापन

रांची : झारखंड लोकतांत्रिक क्रांतिकारी मोर्चा (जेएलकेएम) के केंद्रीय वरीय उपाध्यक्ष देवेंद्र नाथ महतो के नेतृत्व में एक प्रतिनिधिमंडल ने रविवार को राज्यपाल संतोष गंगवार से राजभवन में मुलाकात की। झारखंड स्टेट फामेर्सी काउंसिल में व्याप्त भ्रष्टाचार पर कार्रवाई करने संबंधित छह सूत्री मांगों का ज्ञापन सौंपा। महतो ने राज्यपाल से कहा कि झारखंड राज्य लूट के लिए नहीं बना है, और फामेर्सी काउंसिल में जिसतरह भ्रष्टाचार अनियमितताएं हो रही है। उसपर अविलंब कार्रवाई होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि काउंसिल में गंभीर घोटालों को किसी भी हाल में बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। उन्होंने बताया कि बीते 19 जुलाई को स्वास्थ्य विभाग के अपर मुख्य सचिव को ज्ञापन सौंपा गया था। 23 जुलाई को काउंसिल के समक्ष धरना भी दिया गया, लेकिन अब तक कोई ठोस कार्रवाई नहीं हुई है। राज्यपाल को सौंपे गए ज्ञापन में कार्यकाल समाप्त होने के बावजूद पद पर जमे निबंधक प्रशांत कुमार पांडे की जांच के लिए एसआईटी गठित करने, फामेर्सी काउंसिल में सिर्फ मूल झारखंडी फार्मासिस्टों को मनोनीत किए जाने, निर्वाचन प्रक्रिया की स्वतंत्र जांच कराने और फर्जी तरीके से मान्यता प्राप्त कॉलेजों की जांच किए जाने सहित अन्य छह सूत्री मांगें शामिल है। देवेंद्रनाथ ने प्रेस रिलीज के माध्यम से बताया कि जेएलकेएम प्रतिनिधिमंडलों की बातें गंभीरता से सुनने के बाद राज्यपाल ने मामले को गंभीरता से लेते हुए उचित कार्रवाई करने का आश्वासन दिया है। महतो ने बताया कि ज्ञापन की प्रतिलिपि मुख्यमंत्री, स्वास्थ्य मंत्री, फामेर्सी काउंसिल ऑफ इंडिया, एंटी करप्शन ब्यूरो और सेंट्रल विजिलेंस कमिशन को भी भेजी गई है। राज्यपाल से मुलाकात के दौरान मौजूद प्रतिनिधिमंडल में रविन्द्र नाथ महतो, लक्की रामू राज, गुलाम सरवर, विनय कुमार, आशीष चौधरी और पंकज कुमार सहित अन्य लोगों के नाम शामिल थे।

भाजपा छोड़ सैकड़ों कार्यकर्ताओं ने थामा झामुमो का दामन

रांची : झारखंड मुक्ति मोर्चा (झामुमो) रांची जिला संयोजक प्रमुख मुस्ताक आलम की अगुवाई में मोर्चा के हरमू स्थित कैंप कार्यालय में रविवार को रांची जिला अंतर्गत भाजपा रातू मंडल के कार्यकर्ता रहे सैकड़ों लोगों ने झामुमो की सदस्यता ग्रहण की। इसमें बड़ी संख्या में महिलाएं भी शामिल रहीं। मौके पर बतौर मुख्य अतिथि मोर्चा केंद्रीय महासचिव सह प्रवक्ता विनोद कुमार पांडेय ने सबों को पार्टी का अंगवस्त्र पहनाकर पार्टी की सदस्यता दिलाई। उन्होंने कहा कि झामुमो के संस्थापक संरक्षक दिशोम गुरु शिबू सोरेन के मार्गदर्शन और पार्टी के केंद्रीय अध्यक्ष सह मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन के नेतृत्व से आमजन प्रभावित हैं। लगातार झामुमो का जनाधार बढ़ रहा है। इसी के तहत आज सैकड़ों लोगों ने मोर्चा का दामन थामा। मौके पर उन्होंने झामुमो परिवार में सबों का स्वागत पार्टी की नीति सिद्धांतों एवं राज्य सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं को अवगत कराया। पांडेय ने झामुमो को मजबूत कर राज्य के विकास में योगदान देने का संकल्प दिलाया। मौके पर झामुमो रांची जिला संयोजक प्रमुख मुस्ताक आलम ने कहा कि रातू के लोगों ने जिस तरह प्यार भाव दिखाकर मोर्चा की सदस्यता ग्रहण की उससे झामुमो और भी मजबूत होगा। मुस्ताक आलम के नेतृत्व में सदस्यता लेने वालों में मुख्य रूप से भाजपा के रातू मंडल के पूर्व मंत्री अविनाश लकड़ा, अमित सिंह, पंकज साहू, अभिषेक कुमार, प्रकाश उरांव, वार्ड सदस्य कमड़े रातु ममता कुमारी, अनीता देवी, शोभा कुमारी, रेखा देवी, मंगरा उरांव, तिग्गा, महेंद्र सिंह, अमर सिंह, कुंदन सिंह, सुक्खू उरांव, अशोक गुप्ता, अजय मिर्धा, बबलू लोहरा, अलबेला लकड़ा, अनुभव यादव, बादल मिर्धा, अनूप लकड़ा एवं अन्य सैकड़ों लोग मौजूद थे।

प्रधानमंत्री की विकसित भारत यात्रा में झारखंड पीछे नहीं : बाबूलाल

रांची : झारखंड में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के नेताओं और कार्यकताओं ने रविवार को आम जनता के साथ बूथ स्तर पर प्रधानमंत्री के 'मन की बात' कार्यक्रम के 124वें संस्करण को सुना। कार्यक्रम के बाद सभी ने अपनी-अपनी प्रतिक्रिया दी। झारखंड के भाजपा प्रदेश अध्यक्ष और विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष बाबूलाल मरांडी ने गिरिडीह जिलांतर्गत चंदौरी मंडल में बूथ संख्या 116 पर, कार्यकारी अध्यक्ष डॉ. रविंद्र कुमार राय ने सरिया मंडल के बूथ संख्या 111/112 पर प्रदेश संगठन महामंत्री कर्मवीर सिंह ने रांची महानगर के सुखदेव नगर मंडल स्थित बूथ संख्या 114 पर कार्यक्रम को सुना। प्रदेश संगठन महामंत्री कर्मवीर सिंह के साथ प्रदेश उपाध्यक्ष बालमुकुंद सहाय, प्रदेश महामंत्री मनोज सिंह, कोषाध्यक्ष दीपक बंका आदि शामिल रहे। प्रदेश अध्यक्ष बाबूलाल मरांडी ने कार्यक्रम के बाद कहा कि 'मन की बात'एक प्रेरक कार्यक्रम है। प्रधानमंत्री की ओर से भारत की प्रगति, प्रकृति, संस्कृति, युवाओं के प्रयास और महिला सशक्तिकरण जैसे महत्वपूर्ण विषय अपने संबोधन में शामिल किए जाते हैं,जो नई पीढ़ी को नई दिशा देते हैं। मरांडी ने कहा कि आज देश प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के कुशल नेतृत्व में विकसित भारत की यात्रा पर निकल पड़ा है, जिसमें झारखंड राज्य भी प्रमुखता से शामिल है। झारखंड लोग विकसित भारत की यात्रा में पूरी तरह से भागीदार हैं। भाजपा के कार्यकारी अध्यक्ष डॉ.रविंद्र कुमार राय ने कहा कि भारत का जन मन एक महीने तक प्रधानमंत्री के 'मन की बात'कार्यक्रम का बेसब्री से इंतजार करता है। यह कार्यक्रम भारत की विकास यात्रा का एक संक्षिप्त दस्तावेज होता है। भाजपा के प्रदेश संगठन महामंत्री कर्मवीर सिंह ने कहा कि विकसित भारत की यात्रा विज्ञान और विरासत के साथ आगे बढ़ रही है। भारत के प्राचीन ज्ञान और आधुनिक विज्ञान के समावेश से आत्मनिर्भर भारत, विकसित भारत का सपना नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में पूरा होगा। प्रधानमंत्री के रेडियो कार्यक्रम 'मन की बात'को प्रदेश उपाध्यक्ष विकास प्रीतम, महामंत्री एवं सांसद आदित्य साहू, डॉ. प्रदीप वर्मा सहित प्रदेश, जिला और मंडल के पार्टी पदाधिकारियों और बड़ी संख्या में भाजपा कार्यकताओं ने अपने-अपने क्षेत्रों के बूथों पर सुना।

एक नजर

आनंद मार्ग के रक्तदान शिविर में 40 यूनिट रक्तदान और 100 पौधों का वितरण

पूर्वी सिंहभूम : आनंद मार्ग यूनिवर्सल रिलीफ टीम ग्लोबल की ओर से आयोजित 126वां मासिक रक्तदान शिविर रविवार को सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। इस शिविर में 40 रक्तदाताओं ने निस्वार्थ भाव से रक्तदान किया और रोगियों के स्वास्थ्य लाभ के लिए अपना अमूल्य योगदान दिया। साथ ही पर्यावरण संरक्षण को ध्यान में रखते हुए 100 पौधों का वितरण भी किया गया। रक्तदान शिविर में भाग लेने वाले सभी रक्तदाताओं को 'ईश्वर कोटि का मनुष्य' बताते हुए सुनील आनंद ने कहा कि जो व्यक्ति बिना किसी स्वार्थ के, केवल मानवता के कल्याण के लिए रक्तदान करता है, वह वास्तव में दिव्य गुणों से युक्त होता है। उन्होंने कहा कि परम पुरुष की सृष्टि में जब कोई प्राणी कष्ट भोगता है, तो उसी पीड़ा को दूर करने के लिए कुछ लोग आगे आकर सेवा करते हैं। यही सेवा भावना उन्हें ईश्वर कोटि का बनाती है। शिविर में टाटा वर्कर्स यूनियन के टेक्नोलॉजी सर्विसेज, ट्यूब डिवीजन के कमिटी मेंबर ज्ञान रंजन श्रीवास्तव को पौधा एवं प्रशस्ति पत्र भेंट कर सम्मानित किया गया। उन्होंने सभी रक्तदाताओं का हौसला बढ़ाया और इस प्रकार के सामाजिक कार्यों में भागीदारी को प्रेरणादायक बताया। इस कार्यक्रम की सफलता में राकेश कुमार, समीर सरकार, सुनील आनंद समेत कई स्वयंसेवकों का योगदान सराहनीय रहा। शिविर का आयोजन न केवल मानव सेवा की दृष्टि से बल्कि पर्यावरण जागरूकता के लिए भी एक मिसाल बना।

तीज मिलन समारोह में दिखी हरियाणवी संस्कृति की झलक

पूर्वी सिंहभूम : शहर में रहने वाले हरियाणवी समाज की महिलाओं ने रविवार को पारंपरिक तीज मिलन समारोह में उत्साहपूर्वक भाग लिया। हरयाणवी मैत्री संघ की ओर से लगातार 20वें वर्ष आयोजित इस कार्यक्रम में रंग-बिरंगी पारंपरिक पोशाकों, लोक गीतों और नृत्यों ने समां बांध दिया। हरयाणवी मैत्री संघ, जमशेदपुर की ओर से रविवार को नीलडीह मैदान में तीज मिलन समारोह का भव्य आयोजन किया गया। यह आयोजन लगातार 20वें वर्ष संपन्न हुआ, जिसमें जमशेदपुर में रहनेवाले हरियाणवी समाज की महिलाओं ने पूरे जोश और उत्साह के साथ भाग लिया। इस विशेष अवसर पर महिलाओं और युवतियों ने पारंपरिक हरियाणवी परिधानों में सजधज कर भाग लिया और हरियाणवी लोक गीतों पर थिरकते हुए सांस्कृतिक विरासत का जीवंत प्रदर्शन किया। हर वर्ष की तरह इस बार भी समाज की महिलाओं ने सामूहिक रूप से तीज पर्व को पारंपरिक लोकगीतों, नृत्य, मेहंदी और झूले के साथ उल्लासपूर्वक मनाया। कार्यक्रम के दौरान सांस्कृतिक प्रस्तुतियों की श्रृंखला चली, जिसमें महिलाओं ने पारंपरिक नृत्य पेश किए। वहीं मेहंदी लगाने, झूला झूलने और पारंपरिक व्यंजन परोसने की भी सुंदर व्यवस्था की गई थी। हरयाणवी मैत्री संघ के सदस्यों ने बताया कि यह आयोजन हर वर्ष समाज को एक सूत्र में बांधने और सांस्कृतिक पहचान को बनाए रखने के उद्देश्य से किया जाता है। महिलाओं की भागीदारी और उमंग इस आयोजन को हर वर्ष विशेष बनाती है।

झारखंड कला-सांस्कृतिक मंच की बैठक संपन्न डहरे करम बेड़हा का आयोजन 31 अगस्त को

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बोकारो : रविवार को चास प्रखंड अंतर्गत कुरा मोड़ स्थित महतो मोटेल में बृहद झारखंड कला-सांस्कृतिक मंच की एक महत्वपूर्ण बैठक आयोजित हुई। बैठक की अध्यक्षता राजेश महतो ने की, जबकि संचालन हरे कृष्णा महतो ने किया। बैठक में सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि इस वर्ष भी डहरे करम बेड़हा का भव्य आयोजन 31 अगस्त को किया जाएगा। यह आयोजन जगन्नाथ महतो चौक से शुरू होकर बिरसा चौक तक निकलेगा। कार्यक्रम की सफलता के लिए वालंटियरों का चयन कर उन्हें विशेष प्रशिक्षण देने का भी निर्णय लिया गया। आयोजन के लिए 9 जोन बनाए गए सुव्यवस्थित तैयारी के लिए पूरे क्षेत्र को 9 जोनों में बांटा गया है, तथा प्रत्येक जोन हेतु संयोजक नियुक्त किए गए हैं गोविंद महतो जोन बालीडीह, श्रीतिज जोन, तालगड़िया रोड ,हलधर महतो जोन धनबाद पुपुनकी रोड, पार्वती रामकिंकर महतो जोन हुदु पाथर बोआ, लखिकांत मुतरुआर जोन पुरुलिया रोड, हारु राजवार जोन चास चंदनक्यारी रोड, खेलु महतो जोन तेलीडीह सोनाबाद, मानिक महतो जोन मामरकुदर दुबेकाटा, योगी चंद्रकांत महतो जोन चंदनक्यारी-बिरसापुल

झारखंड की संस्कृति संरक्षण का संकल्प

मंच के सदस्यों ने बताया कि मंच का यह चौथा वर्ष है। सभी ने एकजुट होकर झारखंड की कला एवं सांस्कृतिक परंपराओं को बचाने के लिए हमादी को रक्षाह का संकल्प लिया। उन्होंने कहा कि इसके लिए सभी लोगों को राजनीतिक दलों की सीमाओं से ऊपर उठकर साथ आना चाहिए, तभी सांस्कृतिक धरोहर को सहेजा जा सकेगा। बैठक में सचिन महतो, नेमचंद महतो, पार्वती चरण महतो, दयामय महतो, निमाई महतो, सुबल चंद्र महतो, वरुण महतो, विकास महतो, जयप्रकाश महतो, महेश मुतरुआर, मिंटु महतो, मनोज कुमार, रामविलास महतो, सुरेश केटियार, नरेश हेमरियार, संतोष आदिवासी, सचिन, परमेश्वर नवरतन, विश्वनाथ, अशोक कुमार, मिथिलेश सहित मंच के कई अन्य सदस्य मौजूद थे।

टायर फटने से अनियंत्रित होकर मिनी बस पलटी, कई लोग घायल

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

कोडरमा : जिले के चंदवारा थाना अंतर्गत जामुखाडी के पास हजारीबाग से कोडरमा जा रही मिनी यात्री बस राज नंदनी बस रविवार को अनियंत्रित होकर पलट गई। घटना के बाद वहां अफरा-तफरी मच गई। यात्री चीख-पुकार मचाने लगे। इस हादसे में कई यात्री घायल हो गए। वही एक यात्री की स्थिति गंभीर बताई गयी है। दुर्घटना के दौरान कुछ लोगों को मामूली चोटें भी पहुंची जिन्हें प्राथमिक उपचार के बाद छोड़ दिया गया। घायलों की पहचान शबाना खातून, रवि पासवान और दुर्गेश्वरी पासवान के रूप में हुई है। स्थानीय लोगों ने बताया कि बस का टायर ब्लास्ट हो गया था जिसके बाद बस सड़क पर अनियंत्रित होकर पलट गयी। बस में 20 से अधिक यात्री सवार थे। हादसे के तुरंत बाद ड्राइवर मौके से फरार हो गया। घटनास्थल के आसपास मौजूद लोगों ने बस से यात्रियों को निकाला और फिर पुलिस को घटना की सूचना दी। घटना की सूचना के बाद एस आई मेघनाथ दुबे, एएसआई दिलीप मंडल दल बल के साथ पहुंच कर घटना की जानकारी ली और घायल यात्रियों को एम्बुलेंस से सदर अस्पताल भेजा। जहां यात्री इलाजरत है। साथ ही पुलिस ने दुर्घटनाग्रस्त मिनी बस को सड़क हटाकर थाने ले गयी।

सेक्टर-11 में आतंक मचाने वाले बंदर को रेस्क्यू टीम ने पकड़ा, 15 लोगों को किया था घायल

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बोकारो : जिला के सेक्टर-11 इलाके में बीते कुछ दिनों से आतंक मचा रहे एक बंदर को आखिरकार वन विभाग और सुरक्षा एजेंसियों की संयुक्त टीम ने कड़ी मशक्कत के बाद पकड़ लिया। इस ऑपरेशन में सर्प मित्र एम. पी. पांडेय, बी.एस.एल. और सी.आई.एस.एफ. के हेड कांस्टेबल एम. के. सिंह की अहम भूमिका रही, जबकि रांची से बुलाई गई विशेष टीम भी इस कार्य में शामिल थी। इस रेस्क्यू ऑपरेशन का संचालन डी.एफ.ओ. ट्रेनी संदीप शिंदे के विशेष मार्गदर्शन और घटना स्थल पर उनकी उपस्थिति में किया गया, जिससे उनकी संजीदगी और तत्परता स्पष्ट झलकी। बताया जा रहा है कि यह बंदर बीते कई दिनों से लगातार स्थानीय लोगों को डराने और हमला करने का प्रयास कर रहा था। अब तक इसके हमले में करीब 15 लोग घायल हो चुके थे, जिससे इलाके में दहशत का माहौल था। रविवार सुबह टीम के प्रयास से आखिरकार बंदर को सकुशल पकड़ लिया गया। बंदर के पकड़े जाने के बाद आसपास के गांव सहित सेक्टर-11 क्षेत्र के लोगों ने राहत की सांस ली और वन विभाग टीम की त्वरित कार्रवाई की प्रशंसा की।

सावन मिलन समारोह में मातृ शक्ति ने मनाया सावन का जश्न

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बोकारो : बोकारो के जायका रिसॉर्ट, में आज अखिल भारतीय पूर्व सैनिक सेवा परिषद, बोकारो की सैन्य मातृशक्ति का सावन मिलन समारोह में धूमधाम से मनाया गया। सावन की फूहारों संग ,गीत-नृत्य मनोरंजन और देशभक्ति की बारिश में भीगा यह कार्यक्रम अपने आप में अद्भुत और अविस्मरणीय रहा। कार्यक्रम की शुरूआत भारत माता के तैलीय छायाचित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलन के साथ किया गया। इसके बाद महिलाओं ने झूला झूलते हुए कजरी के मनमोहक गीतों की प्रस्तुति की। ऐसा सावनमय छद्म वातावरण बनाया की उपस्थित सभी लोग थिरकने को मजबूर हो गए,मातृशक्तियों ने कजरी से लेकर वीरले लोकगीत और देशभक्ति कविताओं की प्रस्तुति की। बच्चों ने भी एक से बढ़कर एक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। यह अनूठा सावन मिलन मातृशक्ति के जज्बे, सैन्य मातृशक्ति की रंगारंग प्रस्तुति और बच्चों के जोश से लबरेज था। महिलाओं के सांस्कृतिक नृत्य और लोकगीत की प्रस्तुति अविस्मरणीय रही। सभी ने समाज में सकारात्मक संदेश हेतु सैन्य समाज की अनवरत प्रतिबद्धता जताई। इस अवसर पर मातृ शक्ति की सदस्यों ने सावन के पावन महिने में भगवान शिव और माता पार्वती की पूजा-अर्चना की। इस अवसर पर महिलाओं ने सावन के महत्व और भगवान शिव की महिमा के बारे में चर्चा की। कार्यक्रम में उपस्थित महिलाओं ने सावन के पावन महीने में अपने परिवार की सुख-समृद्धि और खुशहाली की कामना की। इस मौके पर मातृ शक्ति की अध्यक्षा इंद्रावती दुबे ने कहा कि सावन मिलन समारोह हमें सावन के महत्व और भगवान शिव की महिमा को याद करने का अवसर प्रदान करता है।

शिव भक्ति एक अवसर है : कमल तनेजा

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बोकारो : रोटरी क्लब चास द्वारा सावन के तीसरे सोमवार के मौके पर हनुमान मंदिर, जोधाडीह मोड के पास रविवार की शाम को कांवरिया सेवा शिविर का आयोजन किया गया। रोटरी क्लब चास की अध्यक्ष डिंपल कौर ने कहा कि चिड़का धाम बड़ी संख्या में कांवरिया जाते हैं, हम सामाजिक संस्थाओं का कर्तव्य है कि उनकी सुविधा का ध्यान रखें। डिंपल कौर ने कहा की रोटरी क्लब चास रो.कमल तनेजा के सहयोग से सावन के हर रविवार को यह कार्य बखूबी कर रहा है। कार्यक्रम के संयोजक कमल तनेजा ने कहा कि शिव भक्तों की सेवा एक अवसर है।कमल ने कहा की शिव भक्तों की सेवा का अवसर किस्मत से मिलता है। कमल तनेजा ने कहा कि रोटरी का कार्य ही सेवा करना है। रोटरी क्लब चास की सचिव श्वेता रस्तोगी ने कहा कि रोटरी विगत 23 वर्षो से लगातार सावन के महीने में कांवरियों की सेवा करता चला रहा है और आगे भी यह सिलसिला जारी रहेगा। श्वेता ने बताया आज के शिविर में लगभग 1400 लोगों की चाय-बिस्कुट, पानी, ठेकुआ, दवाइयां और ग्लूकोज के साथ सेवा की गई। इस दौरान वहां का माहौल बोल बम तथा हर हर महादेव के नारों से भक्तिमय हो गया।

पहली बार जिला स्तरीय पर्पल फेयर का हुआ आयोजन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

पूर्वी सिंहभूम : रविवार को दिव्यांगजनों के सशक्तिकरण को समर्पित झारखंड राज्य का पहला जिला स्तरीय पर्पल फेयर का भव्य आयोजन बिरसा मुंडा टाउन हॉल, सिदगोड़ा में सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। यह आयोजन दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय, भारत सरकार, समेकित क्षेत्रीय कौशल विकास, पुनर्वास एवं दिव्यांगजन सशक्तिकरण केंद्र (सी.आर.सी.), रांची एवं जिला प्रशासन, पूर्वी सिंहभूम के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन जमशेदपुर पूर्वी की विधायक एवं राज्य दिव्यांगता सलाहकार बोर्ड सदस्य पूर्णिमा साहू एवं झारखंड राज्य के निःशक्तता आयुक्त अभयनंदन अंबष्ट ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर किया। इस अवसर पर सीआरसी रांची के निदेशक, जिला समाज कल्याण पदाधिकारी, सक्षम संस्था के प्रतिनिधि, ओएनजीसी एवं अन्य प्रतिष्ठित संगठन मौजूद रहे। इस आयोजन में 600 से अधिक लोगों ने भाग लिया। 50 दिव्यांग कलाकारों की ओर से प्रस्तुत रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम, हस्तशिल्प प्रदर्शनी और सरकारी योजनाओं की जानकारी देने वाले 12 स्टॉल आकर्षण का केंद्र रहे। स्पेशल ओलंपिक भारत के सहयोग से विशेष खेलों का प्रदर्शन हुआ, और 2023 बर्लिन पारा ओलंपिक में पदक विजेता चार खिलाड़ियों को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में एडीआईपी एवं वयोश्री योजना के तहत 28 लाभार्थियों को सहायक उपकरण विधायक पूर्णिमा साहू द्वारा प्रदान किए गए। वहीं, ओएनजीसी एवं सक्षम फाउंडेशन के सहयोग से दृष्टिबाधितों को 38 स्मार्ट केन और 30 एआई ग्लास भी वितरित किए गए। अभयनंदन अंबष्ट ने कहा कि यह आयोजन दिव्यांगजनों को मुख्यधारा से जोड़ने की दिशा में सशक्त पहल है। विधायक पूर्णिमा साहू ने कहा कि इस फेयर ने समाज को नई प्रेरणा दी है। सीआरसी रांची के निदेशक ने बताया कि मंच, रैम्प, शौचालय सहित सभी सुविधाएं दिव्यांगजनों के लिए सुलभ रहीं। कार्यक्रम का समापन धन्यवाद ज्ञापन और आगामी जिलों में ऐसे आयोजन की घोषणा के साथ हुआ। पर्पल फेयर ने यह संदेश दिया कि समानता, समावेशिता और आत्मबल के साथ दिव्यांगजन समाज की धुरी बन सकते हैं।

संक्षिप्त खबरें

बोकारो से सैकड़ों डाक बम कांवरिए सुल्तानगंज के लिए रवाना, झामुमो अध्यक्ष मंटू यादव ने की पूजा-अर्चना

बोकारो : रविवार को झारखंड मुक्ति मोर्चा बोकारो महानगर के अध्यक्ष मंटू यादव ने एक धार्मिक कार्यक्रम में विधिवत पूजा-अर्चना और नारियल फोड़कर कांवरिया संघ, ग्राम प्रतापपुर साइड, चास, बोकारो से सैकड़ों डाक बम कांवरियों को सुल्तानगंज के लिए रवाना किया। इस अवसर पर श्री यादव ने बाबा भोलेनाथ से सभी कांवरियों की यात्रा मंगलमय होने और उनकी मनोकामनाएं पूर्ण होने की प्रार्थना की। उन्होंने बताया कि कांवरिया संघ परिवार द्वारा प्रत्येक वर्ष बड़ी संख्या में श्रद्धालु यहां से सुल्तानगंज जाते हैं और वहां से पवित्र गंगाजल लेकर देवघर स्थित बाबा बैद्यनाथ धाम में जलाभिषेक करते हैं। यह परंपरा आस्था और भक्ति का प्रतीक है, जो वर्षों से चली आ रही है। इस कांवरिया संघ को रवाना करने के दौरान मुख्य रूप से सदानंद गोप, संजय केजरीवाल, प्रमोद तापड़िया, भागीरथ शर्मा, आलोक सिंह, राकेश सिन्हा, सीनू गोप, जगदीश गोप, शंभू गुप्ता, शंकर रजवार,अरुण गोप, कृष्ण गोप, धर्मेंद्र गोप, कानू गोप, निरंजन गोप, बहादुर सिंह, राजेश गोप, दुर्गा गोप, गंगाधर गोप, सुधीर गोप, सीनू गोप,बिना देवी, खेसारी देवी, लखी देवी, यशोदा देवी, सुनीता देवी, काजल देवी सहित कई गणमान्य व्यक्ति और श्रद्धालु उपस्थित थे। यह पहल धार्मिक सद्भाव और सामाजिक एकजुटता का संदेश देती है, जिसमें क्षेत्र के लोगों की गहरी आस्था और भक्ति भावना परिलक्षित होती है।

लगातार सातवीं बार एमजीएम स्कूल ने जीता बोकारो जिला जूडो चैंपियनशिप ट्रॉफी

बोकारो : सातवीं बोकारो जिला जूडो प्रतियोगिता का आयोजन बोकारो जूडो संघ के द्वारा दिनांक 26 एवं 27 जुलाई को डी ए वी पब्लिक स्कूल सेक्टर 6 में किया गया प्रतियोगिता में बोकारो जिला के सभी सरकारी अथवा गैर सरकारी स्कूलों से 500 बच्चों ने भाग लिया जिसमें प्रतियोगिता के समापन समारोह में डी ए वी पब्लिक स्कूल स्कूल की प्राचार्य अनुराधा सिंह, बोकारो जूडो संघ के अध्यक्ष विनय आनंद एमजीएम हायर सेकेंडरी फादर डॉक्टर जोशी जोशी वरघेस, हेड मिस्ट्रेस सपना जोशी मौजूद रहे तथा अपने समापन भाषण में बच्चों को जूडो खेलने के प्रति प्रोत्साहित किया बोकारो जूडो संघ के सचिव राजीव कुमार सिंह ने बताया कि 413 अंकों के साथ एमजीएम स्कूल ओवरऑल विनर,271 अंकों के साथ बोकारो मार्शल आर्ट अकेडमी दूसरे स्थान पर रही वही 236 अंकों के साथ जीजीपीएस सेक्टर 5 तीसरे स्थान पर रही वही एमजीएम स्कूल 27 गोल्ड,28 सिल्वर एवं 28 ब्रोंज मेडल, संघ के सचिव राजीव कुमार सिंह ने बताया कि स्वर्ण पदक विजेताओं के बीच सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी का मैच हुआ । जूनियर एवं सीनियर हैवीवेट बालिका कैटिगरी दीपशिखा जीपीएस सेक्टर 5 सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी चुने गए और इस तरह खिलाड़ियों सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ियों तथा प्रशिक्षकों को ?50000 प्रोत्साहन एवं स्कॉलरशिप राशि दिए गए। प्रतियोगिता में चुने गए खिलाड़ी अगले मांह होने वाले झारखंड राज्य जूडो प्रतियोगिता में भाग लेंगे।

सावन मिलन समारोह में महिलाओं ने दिखाया उत्साह, नृत्य-संगीत और कला का जलवा

बोकारो : सावन के महीने में उत्साह और उमंग का अनूठा रंग देखने को मिला जब मालती लग्जरी सिटी में सावन मिलन समारोह का आयोजन किया गया। इस खास अवसर पर महिलाओं ने पूरे जोश और उल्लास के साथ बढ़-चढ़ कर भाग लिया और समारोह को यादगार बना दिया। इस कार्यक्रम में नृत्य, संगीत और विभिन्न कलाओं का आयोजन किया गया। हास्टार फिट जुंबा क्लासेस्ड्ड की संचालिका दीपा झा ने बताया कि डांसिंग, कार्डियो और जुंबा जैसी गतिविधियां सेहत के लिए बेहद फायदेमंद हैं और इन्हें सभी को अपनी दिनचर्या में शामिल करना चाहिए। इस अवसर पर उपस्थित महिलाओं ने अपने-अपने हुनर का प्रदर्शन किया। कार्यक्रम की खास बात रही झबरसे रे बरसे मेघा, थमके बरस, और झुमका गिरा रेह्न जैसे लोकप्रिय गीतों पर सामूहिक नृत्य, जिससे महौल और भी रंगीन हो गया। साथ ही, सभी ने मिल कर भगवान शिव भोलेनाथ की आराधना करते हुए भजन और नृत्य प्रस्तुत किया, जिसमें हर कोई झूम उठा। समारोह में महिलाएं केवल गीत-संगीत और नृत्य तक ही सीमित नहीं रहीं, बल्कि मेहंदी डिजाइन और स्वादिष्ट पकवानों की भी विशेष व्यवस्था रही, जिसने सभी का मन मोह लिया। कार्यक्रम में पूनम सिंह, सीमा मिश्रा, शीला ठाकुर, नेहा ओझा, भारती, ज्योति गुप्ता, कल्पना, सुनीता झा, श्वेता, प्रीति, सिमी, रूपा, मीणा, बबीता, विनीता, भारती झा, निधि, नीतू सहित कई महिलाओं की उपस्थिति रही, जिन्होंने अपनी कला से सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। सावन मिलन समारोह ने महिलाओं को एक मंच प्रदान किया, जहाँ उन्होंने अपनी प्रतिभा और कौशल का शानदार प्रदर्शन किया। कार्यक्रम को सभी ने खूब सराहा।

विधायक के निर्देश पर बाढ़ पीड़ितों को मिला भोजन

पूर्वी सिंहभूम : जमशेदपुर पश्चिमी के विधायक सरयू राय के निर्देश और आशुतोष राय के नेतृत्व में रविवार को बाढ़ पीड़ित लोगों के बीच भोजन का वितरण किया गया। श्री बालाजी अन्नपूर्णा चलंत मध्याह्न भोजनालय से यह भोजन बाढ़ पीड़ितों को दिया गया। शास्त्रीनगर के निर्मल कालोनी, ब्लॉक नंबर 5, ब्लॉक नंबर 4, ग्वाला बस्ती, रामनगर और श्याम नगर में 300 से ज्यादा बाढ़ पीड़ित लोगों के बीच भोजन का वितरण किया गया। भोजन में भात, दाल, सब्जी और अचार दिया गया। भोजन वितरण में दीपू सिंह, भीम सिंह, अतुल सिंह, तारक मुखर्जी, मनोज सिंह, दिनेश सिंह और रविशंकर सिंह की महती भूमिका रही।

सूर्य मंदिर समिति की भव्य जलाभिषेक यात्रा आज 21 हजार श्रद्धालुओं के शामिल होने की संभावना

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

जमशेदपुर : सूर्य मंदिर समिति सिदगोड़ा द्वारा तृतीय सोमवारी को होने वाले सामुहिक जलाभिषेक यात्रा को लेकर जहां स्थानीय श्रद्धालुओं में गजब का उत्साह है, तो वहीं मंदिर समिति ने इसे ऐतिहासिक बनाने की जबरदस्त तैयारी की है। आगामी 28 जुलाई को जलाभिषेक यात्रा में कमेटी ने 21 हजार महिला एवं पुरूष श्रद्धालुओं के शामिल होने की संभावना जताई है। शुक्रवार को सूर्य मंदिर समिति के पदाधिकारियों ने जलाभिषेक यात्रा की तैयारी पर प्रेस वार्ता को संबोधित किया। भालूबासा स्थित एक होटल में आयोजित प्रेस वार्ता में सूर्य मंदिर समिति के संरक्षक चंद्रगुप्त सिंह, महासचिव अखिलेश चौधरी, सह कोषाध्यक्ष अमरजीत सिंह राजा, मीडिया प्रभारी प्रेम झा एवं प्रमोद मिश्रा मौजूद रहे। प्रेस वार्ता को संबोधित करते हुए संरक्षक चंद्रगुप्त सिंह ने बताया कि प्रत्येक वर्ष सूर्य मंदिर समिति द्वारा तृतीय सोमवारी के अवसर पर जलाभिषेक यात्रा में हजारों शिवभक्त हाथों में जल लेकर सूर्य मंदिर शिवालय में जलार्पण करते हैं। पिछले कई वर्षों से यह आयोजन प्रत्येक वर्ष भव्य एवं व्यवस्थित रूप में सम्पन्न होता आया है। इस वर्ष जलाभिषेक यात्रा को विभिन्न स्तरों से भव्य एवं ऐतिहासिक बनाने की तैयारी की गयी है। प्रातः 7 बजे श्रद्धालु बारीडीह हरि मंदिर मैदान में एकत्रित होंगे। जहां पर सुल्तानगंज की उत्तरवाहिनी गंगा के पवित्र गंगाजल से संकल्प एवं पूजन होगा। इसके पश्चात, श्रद्धालु कतारबद्ध होकर सूर्य मंदिर शिवालय के लिए प्रस्थान करेंगे। चंद्रगुप्त सिंह ने बताया कि जलाभिषेक यात्रा में भक्तिमय संगीत, आकर्षक झांकी, भजन मंडली की प्रस्तुति के साथ पुष्पवर्षा आकर्षण का केंद्र रहेंगे। इस यात्रा में राज्य के पूर्व मुख्यमंत्री एवं समिति के मुख्य संरक्षक रघुवर दास, विधायक पूर्णिमा साहू समेत शहर के प्रबुद्धजनों के साथ माताएं-बहनें मुख्यरूप से शामिल होंगे। उन्होंने सभी श्रद्धालुओं से आग्रह किया कि जलाभिषेक यात्रा में अधिक से अधिक संख्या में शामिल होकर बाबा भोलेनाथ का आशीर्वाद प्राप्त करें। चंद्रगुप्त सिंह ने बताया कि यात्रा के निमित्त मार्ग में तोरण द्वार के साथ पूरे रास्ते और शहर के प्रमुख गोलचक्कर को केसरिया ध्वज से सजाया गया है। यात्रा में 2 एम्बुलेंस के साथ आपात स्थिति से निपटने के लिए मेडिकल टीम तैनात रहेगी। उन्होंने बताया कि श्रद्धालुओं की भीड़ और व्रतधारी श्रद्धालुओं के सहूलियत हेतु बाबा बैधनाथ धाम की तर्ज अरघा के माध्यम से जलार्पण की तैयारी की गई है। पूरे रास्ते में यातायात नियंत्रण करने और जलार्पण में सहयोग हेतु 200 से अधिक सूर्यधाम सेवक सक्रिय रहेंगे।

झुंड से बीछड़े एक हाथी ने आधा दर्जन घरों को तोड़कर अनाजों को बनाया निवाला

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

ईचागढ़ : सरायकेला-खरसावां जिला के कुकड़ु प्रखंड क्षेत्र के सिरूम एवं बड़ा लापांग गांव में झुंड से बीछड़े एक हाथी ने शनिवार कि आधी रात को जमकर उत्पात मचाया। झुंड से बीछड़े हाथी ने ग्रामीणों का जीना मुश्किल कर दिया है। आए दिन क्षेत्र के विभिन्न गांवों में घुसकर घरों और सब्जी खेती को निशाना बनाया जा रहा है। वहीं हाथी ने सिरूम गांव के चित्तरंजन हालदार का घर एवं आटा चक्की मशीन को क्षतिग्रस्त कर दिया। हाथी ने अमित मुखर्जी, शंकर महतो,विनय दत्ता,तारामनी सिंह सरदार,का घर को क्षतिग्रस्त कर दिया एवं घर में रखे चावल आदि को अपना निवाला बनाया। हाथी ने कृष्ण प्रामाणिक का सब्जी मंडी का सब्जी को भी चट कर गया। कई घरों के दरवाजे को भी क्षतिग्रस्त कर दिया गया। बड़ा लापांग के चित्तरंजन महतो का घर को भी पुरी तरह से क्षतिग्रस्त कर दिया। वहीं ग्रामीणों ने क्षेत्र से हाथी को भगाने एवं जल्द से जल्द मुआवजा देने का मांग किया है। भुक्तभोगियों ने कहा कि वर्षांत का दिन है, जिससे क्षतिग्रस्त घर में रहना खतरे को दावत देना है। इसलिए वन विभाग जल्द से जल्द मुआवजा दे, ताकि रहने लायक क्षतिग्रस्त घरों का समय पर मरम्मती कराया जा सके।

टाटा पावर इंप्लाइज यूनियन की आम सभा संपन्न

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

जमशेदपुर : टाटा पावर परीसर में टाटा पावर इंप्लाइज यूनियन की आमसभा हुई। जिसमें सर्वप्रथम दिवंगत आत्मा की शांति के लिए दो मिनट का मौन रखा गया। उसके बाद महामंत्री पिंटू श्रीवास्तव के द्वारा ग्रेड रिवीजन एवं यूनियन की उपलब्धियां की जानकारी दी गई। फिर मुकेश कुमार कोषाध्यक्ष यूनियन की लेखा - जोखा प्रस्तुत किए, जिसे सर्व सहमति से पास किया गया। उसके बाद अध्यक्ष राकेश्वर पांडेय ने आम सभा में बेहतर ग्रेड रिवीजन के लिए कर्मचारियों को शुभकामनाएं एवं बधाई दी। फिर अध्यक्ष राकेश्वर पांडेय ने टाटा पावर एम्पलाइज यूनियन की चुनाव कराने की घोषणा की , यह बताना आवश्यक है कि टाटा पावर यूनियन की कमेटी मीटिंग 16 / 7/25 को हुई थी। जिसमें सर्व सम्मति से चुनाव कराने की निर्णय लिया गया था। चुनाव कराने के लिए अध्यक्ष ने विनोद कुमार राय को निर्वाचन अधिकारी के रूप अधिकृत किया। उसके बाद राकेश्वर पांडेय सभा से बाहर निकल गए। फिर निर्वाचन अधिकारी ने सभी सदस्यों का संबोधित किया। एवं को -अप्शन की प्रक्रिया पर चर्चा की। उसके बाद अध्यक्ष के लिए श्री रकेश्वर पांडेय का नाम का प्रस्ताव पिंटू श्रीवास्तव ने किया। जिसमें सभी सदस्यों ने हाथ उठाकर सहमति जताई। तत्पश्चात मिस्टर पंकज कुमार राय ने राकेश्वर पांडेय का नाम अध्यक्ष पद के लिए प्रस्ताव किया इसे सर्व सम्मति से सभा के सभी सदस्यों ने समर्थन किया। सदस्यों की स्वीकृति मिलने पर निर्वाचन पदाधिकारी द्वारा राकेश्वर पांडेय को निर्वाचित घोषित किया गया। तत्पश्चात सर्व सहमति से कमेटी गठन की जिम्मेदारी अध्यक्ष महोदय को दिया गया, निर्वाचन पदाधिकारी ने सभी सदस्य को धन्यवाद ज्ञापन किये।

हिंडाल्को में रक्तदान शिविर का किया गया आयोजन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

सिल्ली : मुरी हिंडाल्को इंडस्ट्रीज लिमिटेड मूरी वर्क्स के ऑक्यूपेशनल हेल्थ सेंटर द्वारा भारतीय रेड क्रॉस सोसाइटी के सहयोग से आज एक मेगा रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। इस पुनीत कार्य में आस-पास के क्षेत्रों से कुल 92 लोगों ने स्वेच्छा से रक्तदान किया इस अवसर पर भारतीय रेड क्रॉस सोसाइटी, रांची शाखा के अध्यक्ष डॉ. शंभु प्रसाद सिंह, कार्यकारिणी सदस्य सत्येन्द्र कुमार, डॉ. बी.के. रॉय, डॉ. नरेश प्रसाद यादव, महेश सिंह एवं हीरालाल चौधरी उपस्थित रहे। सभी अतिथियों ने हिंडाल्को-मूरी के मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ. सौरव घोष द्वारा वर्षों से किए जा रहे इस सेवा कार्य की सराहना की। उन्होंने कहा कि हिंडाल्को, रांची रेड क्रॉस रक्त बैंक के लिए मुख्य रक्तदाता संस्थान बना हुआ है। इस अवसर पर डॉ. घोष को प्रशंसा पत्र भी प्रदान किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन अरुण राय एवं श्री गौरीशंकर द्वारा किया गया। डॉ. अंकुश डॉ. अपेक्सा सुनील सिंह, आशीष होरो, कौशल सागर तकनीशियन, एवं भारत सिंह भी हिंडाल्को की ओर से उपस्थित रहे। भारतीय रेड क्रॉस सोसाइटी की ओर से वरिष्ठ प्रयोगशाला तकनीशियन श्री रामजीवन अपनी टीम के साथ शिविर संचालन में सहयोग कर रहे थे। यह आयोजन न केवल रक्तदान जैसे जीवनदायी कार्य को प्रोत्साहित करता है, बल्कि हिंडाल्को की सामुदायिक स्वास्थ्य सेवा में प्रतिबद्धता और जवाबदेह कॉर्पोरेट नागरिकता को भी दशार्ता है।

सड़क हादसे में बाईक सवार तीन लोगों की मौत

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

गुमला : जिले के बसिया प्रखंड मुख्यालय में रांची-सिमडेगा मुख्य पथ पर हुई सड़क दुर्घटना में तीन युवकों की मौत हो गई। मिली जानकारी के अनुसार बसिया पेट्रोल पम्प के निकट स्थित पुरुषोत्तम राम चक्रवर्ती के फास्ट फूड होटल में काम करने वाले दो मिस्त्री रविवार होने के कारण होटल को बंद कर छुट्टी मना रहा थे। इसमें से दो मिस्त्री कामडारा के गरई निवासी रामजीत महतो (30), नेपाल निवासी जीवन थापा (28) और शिवपुरी बसिया निवासी रामा गोप उर्फ छोटू (30) रामजीत महतो के घर गए । वहां खाना के साथ नशा का सेवन किया और लोग बसिया लौट गये । इसके बाद बसिया पेट्रोल पम्प में काम कर रहे रामजीत अपने भाई से मोटरसाइकिल लिया और एक ही मोटरसाइकिल में बैठकर तीनो कोनबीर की और आए थे। बाईक की रफ्तार काफी तेज थी और तीनों नशे की हालत में थे। जहां से लौटने के क्रम में मनोज साहु के घर के निकट एक खड़ी ट्रक को मोटरसाइकिल से पीछे से जोरदार टक्कर मार दी। इसमें रामजीत महतो और जीवन थापा की घटनास्थल पर ही मौत हो गई। वहीं गंभीर रूप से घायल रमा गोप उर्फ छोटू को ग्रामीणों की मदद से रेफरल अस्पताल में भर्ती किया गया। जहाँ प्राथमिक उपचार के बाद रांची रेफर कर दिया गया । रांची ले जाते वक्त रास्ते में ही रामजीत उर्फ छोटू ने भी दम तोड़ दिया। बताया जाता है कि तीनों तेज रफ़्तार से कोनबीर की ओर से बसिया लौट रहे थें।

खेल जितने या हारने के लिए नहीं बल्कि संघर्ष कर आपसी सौहार्द बराकर रखने के लिए खेला जाता है : मनीष जायसवाल

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

हजारीबाग : सांसद खेल महोत्सव-2025 के तहत हजारीबाग लोकसभा क्षेत्र में नमो फुटबॉल टूनामेंट की धूम है। प्रथम नमो फुटबॉल टूनामेंट का आयोजन रामगढ़ विधानसभा के गोला प्रखंड, द्वितीय टूनामेंट मांडू विधानसभा क्षेत्र के डाडी प्रखंड, तीसरा टूनामेंट बरही विधानसभा क्षेत्र के पदमा में संपन्न होने के पश्चात रविवार को मांडू विधानसभा क्षेत्र के मांडू प्रखंड अंतर्गत घाटो भाजपा मंडल के लईयो स्थित लुगू बाबा मैदान में शानदार आगाज हुआ। यहां बतौर मुख्य अतिथि के रूप में हजारीबाग लोकसभा क्षेत्र के सांसद मनीष जायसवाल ने मशाल जलाकर, खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त कर और फुटबॉल में किक मारकर इस टूनामेंट का विधिवत उद्घाटन किया। टूनामेंट का उद्घाटन मैच शार्क स्टेट एफसी घाटो टीम बनाम एंजेल एफसी बॉयज लईयो टीम के बीच शुरूआत हुआ। इस टूनामेंट में घाटो क्षेत्र की कुल 48 टीमें भाग ले रही हैं। उद्घाटन समारोह के अवसर पर यहां दर्जनों टीमों के खिलाड़ियों ने मैदान में आकर्षक नमो जर्सी के साथ मार्च पास्ट किया और सांसद मनीष जायसवाल के साथ मैदान में नशामुक्त होकर खेलने और जीवन जीने का संकल्प भी लिया। उक्त टूनामेंट में निर्णायक की भूमिका में जगमोहन महतो, नमन कुमार, जीवलाल महतो, कैलाश कुमार, संतोष कुमार हैं। उक्त टूनामेंट के विजेता टीम के लिए 25 हजार रुपए नगद, आकर्षक नमो ट्रॉफी, चमकता नमो मेडल और उपविजेता टीम के लिए 15 हजार रुपए नगद, आकर्षक नमो ट्रॉफी, चमकता नमो मेडल के अलावे उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले टीम के कईयों को पुरस्कृत करने की योजना तय है । मौके पर सांसद मनीष जायसवाल ने लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि लगातार दूसरे वर्ष सांसद खेल महोत्सव के अंतर्गत नमो फुटबॉल टूनामेंट का आयोजन लोकसभा क्षेत्र के सभी 22 प्रखंडों में सिलसिलेवार तरीके से किया जा रहा है। उन्होंने नमो फुटबॉल टूनामेंट की शुरूआत और लक्ष्य पर विस्तार से प्रकाश डाला और कहा कि कहा कि हजारीबाग सदर विधानसभा क्षेत्र से कटकम दाग प्रखंड से साल 2016 में इसकी शुरूआत हुई थी और अब इसकी ख्याति प्रदेश स्तर के सबसे बड़े फुटबॉल टूनामेंट के रूप में हो रही है। उन्होंने कहा कि नमो फुटबॉल टूनामेंट के आयोजन का उद्देश्य ग्रामीण खेल प्रतिभा को बेहतर मंच प्रदान कर उन्हें उचित प्लेटफार्म दिलाना साथ ही नशा मुक्त जीवन की ओर प्रेरित करना है। सांसद मनीष जायसवाल ने यह अभी कहा की इस टूनामेंट के आयोजन के उद्देश्य की पूर्ति उसे दिन होगी जब नमो फुटबॉल टूनामेंट से कोई खिलाड़ी राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय फलक पर उभर कर आएगा। मौके पर विशेष रूप से रामगढ़ जिला के भाजपा जिला महामंत्री राजू चतुवेर्दी, घाटो भाजपा मंडल अध्यक्ष गिरधारी महतो, घाटो के पूर्व भाजपा मंडल अध्यक्ष रणधीर सिंह, नमो खेल श्रृंखला से जुड़े बंटी तिवारी, जयप्रकाश, हजारीबाग लोकसभा क्षेत्र के सांसद मीडिया प्रतिनिधि रंजन चौधरी, घाटो भाजपा मंडल के सांसद प्रतिनिधि शंकर करमाली, भाजपा नेता बलराम महतो, दासो प्रसाद महतो, खुशीलाल महतो, लाइयो दक्षिणी पंचायत की मुखिया गीता देवी, रोहित रजवार, रितेश सिंह सहित अन्य गणमान्य लोग मौजूद रहें ।

एक नजर

मंईयां सम्मान योजना के डीबीटी सुधार शिविर में पहुंचे लाभुक : चंद्र शेखर टुडू

पटमदा : पटमदा प्रखंड कार्यालय में 29 जुलाई मंगलवार को झारखंड मईया सम्मान योजना डीबीटी हेतु आयोजित कैंप में प्रखंड क्षेत्र के सभी गांव के माता बहनों को शामिल होने का अपील विधायक मंगल कालिंदी के विधायक प्रतिनिधि चंद्र शेखर टुडू ने किया है। उन्होंने कहा कि झारखंड सरकार के द्वारा माता बहनों को मईया सम्मान योजना की राशि मिलने में होने वाली त्रुटि सुधार करने को लेकर कैंप आयोजित किया जा रहा हैं ।वही जनवरी से अप्रैल माह तक के असफल भुगतान वाले लाभुको के त्रुटि निराकरण हेतु कैंप का आयोजन किया जा रहा हैं ।उन्होंने प्रखंड के सभी पंचायत के माता बहनों से कैंप में समय पर पहुंचकर समाधान करवाने की अपील किया है।

गुरुकुल कुटाम में जन्माष्टमी को लेकर तैयारियां जोरों पर

मुरी : सिल्ली प्रखंड अंतर्गत भक्ति वेदांत गुरुकुल कुटाम में आगामी जन्माष्टमी को लेकर भव्य तैयारियां जोरों पर है। कारीगरों द्वारा भक्तों के स्वागत को लेकर भव्य पंडाल का निर्माण किया जा रहा है। बताते चलें कि लगभग 180 गांवों में संकीर्तन के माध्यम से निमंत्रण दिया जा रहा है जिससे पूरा क्षेत्र कृष्णमय हो उठा है। इस वर्ष जन्माष्टमी 16 अगस्त दिन शनिवार को मनाया जाएगा ।वहीं श्री कृष्ण के स्वागत के लिए विशाल व आकर्षक पंडाल तैयार किया जा रहा है जिसमें रात्रि के चुने हुए शुभ मुहूर्त में पूजा अर्चना एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। उत्सव के निमंत्रण हेतु 180 गांवों में लगातार कीर्तन,झांकी और भजन संध्या का आयोजन किया जा रहा है जिससे दूर-दूर तक धार्मिक वातावरण तैयार किया जा सके।

संक्षिप्त खबरें

झारखंड प्रशिक्षित सहायक अध्यापक संघर्ष मोर्चा सरिया की बैठक संपन्न

सरिया : झारखंड प्रशिक्षित सहायक अध्यापक संघर्ष मोर्चा सरिया प्रखंड की एक श बैठक रविवार को बीआरसी परिसर सरिया में संपन्न हुआ। जिसकी अध्यक्षता मोर्चा के प्रखंड अध्यक्ष शिव शंकर रूपांशु ने किया। बैठक में सर्व समिति से निर्णय लिया गया कि समान काम के लिए समान वेतन की मांग को लेकर आगामी 5 अगस्त को मोर्चा के द्वारा रांची में आहूत आंदोलन में शामिल होना है। प्रखंड अध्यक्ष श्री रूपांशु ने कहा कि लगभग 2 वर्ष पूर्व झारखंड के तत्कालीन शिक्षा मंत्री बैजनाथ राम की अध्यक्षता में 1000 की बढ़ोतरी किया गया था। जो आज तक लागू नहीं हो पाया। अनुकंपा का लाभ भी मृत शिक्षकों के आश्रितों को नहीं मिल पा रहा है। वहीं शहरी क्षेत्र के लिए 4% की वार्षिक वृद्धि इत्यादि इन सभी मांगों को लेकर सभी सहायक अध्यापकों को आगामी 5 अगस्त को रांची चलना है। इसके लिए सरिया प्रखंड के प्रत्येक संकुल प्रमुख से संगठन निवेदन करता है कि प्रत्येक संकुल में बैठक करते हुए कितने साथी रांची जाएंगे इसकी स्वहस्ताक्षर जानकारी ग्रुप के माध्यम से अति शीघ्र दें। जो साथी रांची नहीं जाएंगे वैसे साथियों से आर्थिक सहयोग के रूप में 1000 का सहयोग राशि लेना है। वे अपनी सहयोग राशि 3 अगस्त तक प्रखंड अध्यक्ष के पास जमा कर देना है। मौके पर प्रकाश मंडल, कूलन मंडल, सुरेश कुमार पांडेय,विजय लहेरी, शिव शंकर मंडल, कौशल किशोर मंडल सहित कई शिक्षक बैठक में उपस्थित थे।

कांवरियों का जत्था झारखंड धाम के लिए रवाना

सरिया : सरिया प्रखंड क्षेत्र के प्रसिद्ध तीर्थ स्थल राजदह धाम से कांवरियों का जत्था झारखंड धाम के लिए रविवार को रवाना हुआ .जो लगभग 45 किलोमीटर पैदल चलकर झारखंड धाम स्थित शिव मंदिर में सोमवार को जलाभिषेक करेंगे .बताते चलें कि राजदह धाम से प्रत्येक वर्ष सरिया,बिरनी,राजधनवार, बगोदर,बरही,डुमरी आदि प्रखंडों से सावन में उत्तर वाहिनी बराकर नदी से जल उठाकर कांवर के माध्यम से झारखंड धाम जल ले जाते हैं। तपस्वी मोनी बाबा राजदह धाम समिति के अध्यक्ष सुरेश भारती ने बताया कि रविवार को कांवरियों का कई जत्था दिनभर राजदह धाम में पूजा कर प्रस्थान करते रहा। जिनके लिए समिति द्वारा कई प्रकार की सुविधाएं उपलब्ध कराई गई थी।

आरटीआई कार्यकर्ताओं की सुरक्षा और आयोगों में नियुक्ति को लेकर प्रतिनिधिमंडल ने शिक्षा मंत्री को सौंपा ज्ञापन

जमशेदपुर : रविवार को आर टी आई कार्यकर्ता संघ का एक प्रतिनिधिमंडल अध्यक्ष सह अधिवक्ता दिल बहादुर के नेतृत्व में राज्य के शिक्षा मंत्री श्री रामदास सोरेन से मिलकर एक ज्ञापन सौंपा। तथा मांग की कि राज्य सूचना आयोग,राज्य मानवाधिकार आयोग एवं अन्य संवैधानिक संस्थाओं में अविलंब रिक्त पदों, आयुक्तों एवं सभापति/अध्यक्ष की नियुक्ति की जाए ताकि आम जनता अपनी संवैधानिक अधिकारों के लिए न्याय पा सके। ज्ञापन में पिछले दिनों आर टी आई कार्यकर्ता संघ के महासचिव कृतिवास मंडल को धमकी दिए जाने एवं प्रशासन द्वारा अभी तक कोई कार्रवाई नहीं किए जाने , आर टी आई कार्यकर्ता सुनील मुर्मू को भी धमकी दिए जाने के मामले की जानकारी दी गई एवं प्रशासन से उचित कार्रवाई करने एवं पूरे राज्य में आर टी आई कार्यकताओं की सुरक्षा हेतु सरकार से ठोस नीति बनाने का मांग किया गया। झारखंड सरकार के वैसे अफसरों जो सरकार के भ्रष्टाचारमुक्त एवं पारदर्शी शासन व्यवस्था में बाधक है एवं धमकी देनेवालों को संरक्षण दे रहे है उसकी जांच कर कार्रवाई करने की मांग की गई। प्रतिनिधिमंडल में सदन ठाकुर,दिनेश कुमार कीनू , सुलोचना मुंडा,दिनेश कर्मकार, ऋषेंदु केशरी,नीरज , कृतिवास मंडल आदि शामिल थे।

बांगुड़दा गांव पहुंचे विधायक प्रतिनिधि चंद्र शेखर टुडू लिया समस्या का जायजा

पटमदा : पटमदा प्रखंड के आदर्श ग्राम बांगुडदा का रविवार को विधायक प्रतिनिधि चंद्र शेखर टुडू ने जायजा लिया ।इस दौरान गांव के ग्रामीणों के साथ दौरा करते हुए सभी प्रकार की समस्याओं से अवगत हुए ।वही गांव में काफी दिनों से लंबित भूमि विवाद का समाधान भी करवाया ।इस दौरान उन्होंने कहा कि क्षेत्र में किसी भी प्रकार की समस्या का समाधान सूचना मिलते ही किया जाएगा ।उन्होंने कहा कि जनता के साथ सीधा संवाद कर विधायक मंगल कालिंदी के कार्यकाल में क्षेत्र में विकास को गति देने का कार्य जारी है ।वही विधानसभा क्षेत्र में कोई भी गांव में मूलभूत सुविधाओं से लोग वंचित नहीं रहेंगे ।इस दौरान उनके साथ माणिक चंद्र महतो,कानूराम बेसरा,सिजेन हेंब्रम सहित काफी संख्या में ग्रामीण उपस्थित थे।

एको रूद्र द्वितीयो नास्ति

सोम चन्द्रमा के पर्याय हैं। वे विराट ब्रह्माण्ड का मन हैं। जैसे चन्द्र कलाएं घटती बढ़ती हैं, वैसी ही हमारे मन की चंचलता है। सोम संसारी देवता हैं। ओम सूक्ष्मतम विराट का एकात्म नाद। परम ध्वनि। अस्तित्व सूक्ष्मतम से भी सूक्ष्म है और विराट से भी विराट। अन्तर्यात्रा स्थूल से सूक्ष्म की यात्रा है। पत्ती, पुष्प से पेड़ और पेड़ से जड़ की यात्रा सुगम है। जड़ें देखते ही बीज का ध्यान आता है। बीज के भीतर अनंत संभावनाएं होती हैं। पेड़, शाखा, पत्तियां और फूल। फिर-फिर बीज। ओम प्राण शक्ति है और सोम बीज का पल्लवन पुष्पन। ऋग्वेद के सोम कम लोगों को याद हैं लेकिन सोमवार हर सातवें दिन उन्हीं की स्मृति दिलाता है। सोम से ओम् की यात्रा शिव है। यहां कोई भौगोलिक दूरी नहीं। सोम और ओम् साथ-साथ हैं। सोम शिव के ललाट पर हैं ही। शिव का सोम चन्द्र प्रतीक बड़ा प्यारा है। ऋग्वेद में सोम को पृथ्वी का निवासी बताया गया है। सोम असाधारण देवता हैं। आनंददाता भी हैं।

ऋग्वेद में रूद्र शिव सुगंधिं पुष्टिवर्द्धनं हैं। देवों को पुष्पार्चन किया जाता है लेकिन शिव को बेलपत्र और धतूरे का फल। शिव मस्त मस्त बिंदास देवता हैं। परम योगी। नट-राज। श्रीकृष्ण की बांसुरी की धुन पर तीनों लोक मोहित हुए थे तो शिव के डमरू की धुन पर तीनों लोक अस्तित्व में रहते हैं। शिव जब चाहते हैं, रूद्र हो जाते हैं। प्रलयंकर हो जाते हैं लेकिन यही रूद्र शिव भी हैं। ऋग्वेद में जो रूद्र है, वही शिव भी है। शिव महाकाल हैं। त्रिशूल उनका हथियार। तीन शूल दैविक, दैहिक और भौतिक कष्ट हैं। भौतिक, आधिभौतिक और आध्यात्मिक वेदनाएं हैं। शिव दुखहारी हैं-त्रिशूल धारक जो हैं। सोंचने से मन नहीं भरता। मैं तनाव की स्थिति में यजुर्वेद के शिव संकल्प सूक्त दोहराता हूं-हमारा मन भागता है। यहां वहां। ऐसा हमारा मन शिव संकल्प से भरापूरा हो-तन्मे मनः शिव संकल्पं अस्तु। मंच, माला, माइक का त्रिशूल मेरे भीतर है। सोम सामने है, भीतर ओम है। लेकिन सोम से वंचित हूं। ओम् की अनुभूति नहीं। करूं तो क्या करूं? ऋग्वेद के ऋषि वशिष्ठ ने आर्तभाव से पुकारा था तंयम्बक रूद्र को-हमें पकी ककड़ी की तरह मृत्यु बंधन से मुक्त करो। सावन का माह भारत में शिव उपासना की मंगल मुहूर्त है। शिव सोम प्रेमी हैं। सोम प्रकृति की सृजन शक्ति है। सृजन की यही शक्ति शिव ललाट की दीप्ति है। ऋग्वेद के ऋषियों के दुलारे सोम वनस्पतियों के राजा हैं। सोम प्रसन्न होते हैं, वनस्पतियां औषधियां उगती हैं खिलती हैं खिलखिलाती हैं। भारतीय सप्ताह में पहला दिन रविवार रवि का तो दूसरा दिन सोमवार सोम का। शिवभक्तों को सोमवार प्रीतिकर है। काशी बहुत जाता हूं। काशी मंदिर में शिव उपासना की मूर्ति है। शिव दर्शन कई बार हुआ। लेकिन सावन में मैंने समूची काशी को सोम शिव पाया। हर-हर महादेव की गूंज व लोक उल्लास।

सत्य, शिव और सुंदर की त्रयी में सत्य परम है। सत्य शिव है। सत्य और शिव का एकात्म सुंदर होता है। शिव में तीनों हैं। शिव और लोकमंगल पर्यायवाची हैं। आस्तिकों के लिए यह ऊर्जा सहज प्राप्य नहीं है। शिव के प्रति लोक आस्था विस्मयकारी है। शिव प्राप्ति के प्रयास जरूरी हैं। पार्वती को भी शिव प्राप्ति के लिए महातप करना पड़ा था। कालिदास के कुमार संभव में तपरत पार्वती को एक ब्रह्मचारी ने भड़काया पार्वती! आप भी किस प्रेम में फंस गई। आपका सुंदर हांथ सांप लिपटे शंकर को कैसे छुएगा। कहां हंस छपी चूनर ओढ़े आप? और कहां खाल ओढ़े शंकर? शिव शंकर के रूप-कुरूप पर उसने बहुत कुछ कहा। पार्वती ने कहा संसार के सारे रूप शिव के ही हैं-विश्वकूतेर्खाधार्यते वपु। शिव ही सभी रूपों में रूप रूप प्रतिरूप हैं। कालिदास के कथानक में तब शिव ने अपना रूप प्रकट कर दिया। शिव बोले अब मैं तुम्हारा दास हूं, पार्वती-तवस्मि दासः। मन करता है कि पूंछू शिव से-महादेव! इतना कठोर तप क्यों कराते हैं? लेकिन शिव तप प्रभाव में स्वयं भक्त के भी भक्त बन जाते हैं। भारतीय साहित्य शिव-पार्वती के सम्वाद से भरापूरा है। पार्वती प्रश्नाकुल हैं और शिव समाधानकर्ता। तुलसीदास के रामचरित मानस में पार्वती ने सीधे राम के अस्तित्व पर ही प्रश्न पूछा। शिव ने ब्रह्म तत्व समझाया लेकिन पार्वती ने स्वयं परीक्षा ली।

सूडोकु नवताल- 7504

★★★★☆ कठिन

4					1	9		
						8	5	
			7	3				
			3				4	7
9								2
8	5				6			
				5	8			
	7	4						
		6	2					5

Jagrutidaur.com, Bangalore

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते .
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु नवताल -7503 का हल

2	4	5	6	9	8	1	7	3
1	7	6	4	3	5	8	2	9
3	8	9	1	2	7	6	5	4
9	1	7	3	6	2	4	8	5
5	6	3	8	7	4	9	1	2
4	2	8	5	1	9	3	6	7
7	3	1	9	5	6	2	4	8
8	9	2	7	4	1	5	3	6
6	5	4	2	8	3	7	9	1

अमेरिकी हस्तक्षेप से मुक्ति की दिशा में मध्य एशिया

तनवीर जाफ़री

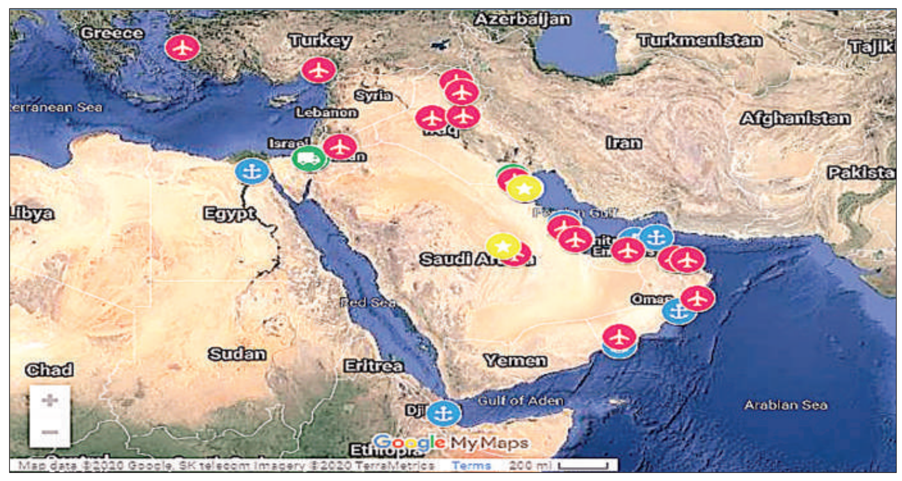

इस्राईल को लंबे समय से मिल रहे अमेरिकी संरक्षण से वैसे तो पूरी दुनिया भली भांति वाकिफ है। परन्तु अब इस अमेरिकी संरक्षण के चलते इस्राईल खासतौर से गजा में जिसतरह मानवता की लगातार बर्बर हत्या करता जा रहा है उसे देखकर दुनिया के अधिकांश देश न केवल इस्राईल के खिलाफ होते जा रहे हैं बल्कि उन्हें इस्राईल को दिया जाने वाला अमेरिकी संरक्षण भी अब रास नहीं आ रहा है। वास्तव में शांतिप्रिय मध्य एशिया में तबाही,बबार्दी व अशांति की इबारत लिखने वाला अमेरिकी संरक्षित इस्राईल ही है। 7 अक्टूबर 2023 को जब से दक्षिणी इस्राइल पर हमास द्वारा हमले किये गये और 251 लोगों को बंधक बनाया गया उसके बाद इस्राईली सेना (आईडीएफ) ने हमास की आतंकी कार्रवाई के जवाब में जिस तरह गजा पट्टी में बड़े पैमाने पर सैन्य कार्रवाई शुरू की और आज तक जारी है उसने इस्राईल व अमेरिका के अमानवीय चेहरे को पूरी तरह उजागर कर दिया है। गजा में बर्बरता और अत्याचार की हर सीमाओं को इस्राईल पार कर चुका है। रिहाइशी बस्तियों अस्पतालों स्कूलों शरणार्थी कैंपों धर्मस्थलों आदि को खंडहर बनाने के बाद अब भूखे निहत्थों को मार रहा है।

खबर है कि गजा में गजा ह्यूमनटेरियन फाउंडेशन (जीएचएफ) की ओर से बांटा जा रहा खाना बहुत कम लोगों तक पहुंचने के कारण वहां भुखमरी की स्थिति पैदा हो गई है। कई बार ऐसी अमानवीय घटना भी घटी कि जब जीएचएफ के भोजन वितरण केंद्र पर मदद लेने के लिए भूख से तड़पते बच्चे व महिलायें भोजन की खातिर आकर लाइन में लगे उसी समय उन पर इसराइली सुरक्षा बलों ने गोलियां चला दीं जिससे दर्जनों लोग मरे गये। कई बार इस्राईली सुरक्षा बलों द्वारा भूखे शरणार्थियों को खाना देने के लिये बुलाया गया,बाद में लाइन में खड़े होने के बाद उनपर गोलीबारी कर अनेक लोगों की हत्या कर दी गई । संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार कार्यालय के अनुसार पिछले दो महीनों में भोजन हासिल करने की कोशिश कर रहे एक हजार से अधिक फिलस्तीनी, इस्राईली हमलों में मारे जा चुके हैं। इनमें से कम से कम 766 लोगों की मौत उन चार वितरण केंद्रों के आसपास हुई है, जिन्हें जीएचएफ संचालित करता है। इसके अलावा 288 लोगों की मौत संयुक्त राष्ट्र और अन्य सहायता केंद्रों के पास हुई है। सौ से अधिक सहायता संगठनों और मानवाधिकार समूहों का कहना है कि गजा में बड़े पैमाने पर मानव जनित भुखमरी फैल रही है। अंतरराष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा विशेषज्ञों ने इन हालात के लिए इस्राईल को ज़िम्मेदार ठहराया है क्योंकि वही फिलस्तीनी क्षेत्रों में भेजी जाने वाली सप्लाई को नियंत्रित करता है।

आम लोग ही नहीं बल्कि गजा में युद्ध की रिपोर्टिंग करने वाले अनेक स्थानीय व विदेशी पत्रकार व उनका परिवार भी भुखमरी का सामना करने को मजबूर है। कुछ पत्रकार तो इस हद तक असहाय हो चुके हैं कि वे अपने मासूम असहाय बच्चों व परिवार के लिए भोजन तक नहीं जुटा पा रहे हैं। गजा में काम करने वाले कुछ पत्रकार तो अपनी जान की बाजी लगाकर लाइनों में लगकर चैरिटी किचन से खाना ले रहे हैं। उनके बच्चे दिन में सिर्फ एक बार दाल, चावल या पास्ता खा कर गुजारा करने को मजबूर हैं। कुछ पत्रकारों ने तो यहाँ तक बताया कि उन्होंने भूख दबाने के लिए नमक मिला पानी पीना शुरू कर दिया है। जरा सोचिये जिन पत्रकारों की बदौलत दुनिया को इस्राईली सेना के जुल्म और गजा के लोगों की बेबसी व बबार्दी की खबर सुनाई व दिखाई देती थी अगर वही पत्रकार व उनका परिवार सुरक्षित नहीं रहेगा तो अमेरिकी संरक्षित इस्राईल के काले करतूत दुनिया तक कैसे पहुंचेंगे ? इन्हीं हालात में अनेक अंतर्राष्ट्रीय राहत संगठन और मानवाधिकार समूह बड़े पैमाने पर भुखमरी फैलने की चेतावनी दे रहे हैं।

एक ओर तो इस्राईल-अमेरिका फिलिस्तीनियों के अधिकारों की लड़ाई लड़ने वाले हमास को आतंकी संगठन बताकर उसकी आड़ में पूरे फिलिस्तीन पर नियंत्रण हासिल करने की फिराक में है तो दूसरी ओर यही इस्राईल-अमेरिकाअहमद हुसैन अल-शरा, जिसे अबू मोहम्मद अल-जुलानी के नाम से भी जाना जाता है,को सीरिया में बशर अल असद का तख़्ता पलटकर उसे अंतरिम राष्ट्रपति बना देता है। यह वही जुलानी है जिसपर कुछ समय पहले तक अमेरिका ने दस मिलियन डॉलर का ईनाम घोषित कर रखा था। क्योंकि वह अलकायदा से जुड़ा था। 2017 में उसने अन्य कई आतंकी संगठनों के साथ मिलाकर हयात तहरीर अल-शाम ळळर नामक संगठन बना लिया था। अमेरिका ने ळळर को आतंकी लिस्ट में भी रखा था। अब अमेरिका ने उसके संगठन ळळर को आतंकी लिस्ट से भी हटा दिया है । गोया जो व्यक्ति अमेरिका के हर विभाजनकारी इरादों में साथ रहे वह उसके लिए आतंकवादी नहीं और जो उसके और इजरायल के खिलाफ हो या अपनी स्वतंत्र नीति रखता हो वह आतंकवादी घोषित हो जाता है चाहे वह ईरान जैसा संप्रभुता संपन्न राष्ट्र ही क्यों न हो?

बहरहाल, अमेरिका को सर्वशक्तिमान मानने वाले व अमेरिकी रहम ो करम पर जीने वाले कुछ अमेरिकी पिट्ठू देशों की शासकों व तानाशाहों की बात छोड़ दें तो पूरा विश्व खासकर मध्य एशियाई देश इस बात को समझ चुके हैं कि अब समय आ गया है कि किसी भी तरह इस्राईल को सबक सिखाया जाये और मध्य एशियाई क्षेत्रों को अमेरिकी हस्तक्षेप से मुक्ति दिलाई जाये। ईरान का भय दिखाकर सुन्नी शिया मतभेदों को बढ़ावा देना दरअसल अमेरिका की सुन्नी देशों के प्रति हमदर्दी नहीं बल्कि एक बड़ी चाल है जिसे मुस्लिम जगत अब बखूबी समझ चुका है। मुस्लिम जगत जुलानी की आड़ में सीरिया को बर्बाद करने की साजिश को भी समझ रहा है।परन्तु खबर यह भी है कि सीरियाई जनता भी अमेरिका इस्राईल के सीरिया के प्रति नापाक इरादों को भांप कर एकजुट होने लगी है। मध्य एशियाई क्षेत्रों को अमेरिका से मुक्त कराने के शुरूआत संकेत मिलने लगे हैं। ईरान ने गत 23 जून को कतर की राजधानी दोहा स्थित अमेरिकी सैन्य अड्डे अल-उदीद एयरबेस पर मिसाइलें दाग कर तथा इराक और सीरिया में भी अमेरिकी सैन्य ठिकानों को निशाना बना कर यह चेतावनी दे दी है कि अमेरिकी सैन्य अड्डे मध्य एशियाई क्षेत्रों में सुरक्षित नहीं हैं। साथ ही इराक ी प्रतिरोध समूहों, विशेष रूप से कताइब हिजबुल्लाह, ने इराक ी सरकार को यह चेतावनी जारी कर दी है कि वह अमेरिकी सेना को दो महीने के भीतर बगदाद अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा और ऐन अल-असद बेस जैसे इराकी सैन्य ठिकानों, से पूरी तरह से हटने के लिए कहे। इराक ी प्रधानमंत्री मोहम्मद शिया अल-सुदानी को इस संबंध में पहले से सहमति के आधार पर कार्रवाई करने के लिए ₹पर्याप्त समय₹ दिया गया था, और अब केवल दो महीने बचे हैं। यानी सितंबर 2025 के अंत तक अमेरिका को इराक छोड़ने की चेतावनी दे दी गयी है। इस चेतावनी में यह भी कहा गया है कि अगर यह कार्रवाई समय सीमा में पूरी नहीं हुई, तो उनकी ₹अलग राय₹ होगी , हालांकि उन्होंने ₹अलग राय₹ को स्पष्ट नहीं किया।इस तरह की अनेक छोटी बड़ी घटनाओं व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हो रही गोलबंदी को देखते हुये इस निष्कर्ष पर पहुंचा जा सकता है कि मध्य एशिया अमेरिकी हस्तक्षेप से मुक्ति के प्रयास की दिशा में आगे बढ़ रहा है।

हरियाली तीज : परंपरा की जड़ें और आधुनिकता की डालियाँ

प्रियंका सौरभ

हरियाली तीज केवल श्रृंगार, झूला और व्रत का पर्व नहीं, बल्कि भारतीय स्त्री के आत्मबल, प्रेम और प्रकृति से जुड़ाव का प्रतीक है। आधुनिकता की दौड़ में यह त्योहार भले ही प्रदर्शन का माध्यम बनता जा रहा हो, पर इसकी आत्मा अब भी स्त्री के मन, पर्यावरण और लोकसंस्कृति में जीवित है। यह पर्व रिश्तों में स्थायित्व, समाज में समरसता और जीवन में हरियाली लाने का संदेश देता है। आवश्यकता है इसे सादगी, सामूहिकता और संवेदना के साथ फिर से जीने की, ताकि परंपरा आधुनिकता के संग आगे बढ़े।

हरियाली तीज का नाम लेते ही आँखों के सामने एक चित्र उभरता है—हरा चूनर ओढ़े खेत, बारिश की बूंदों से भीगी धरती, झूलती बालाएं, मेंहदी रचे हाथ और लोकगीतों की सुमधुर गूंज। पर यह चित्र अब केवल स्मृति में रह गया है, क्योंकि आधुनिकता की तेज रफ्तार ने परंपराओं के रंगों को हल्का कर दिया है। फिर भी हरियाली तीज आज भी भारतीय स्त्रियों के मन में गहरे तक रची-बसी है। यह पर्व आज केवल धार्मिक या पारंपरिक नहीं, बल्कि सामाजिक, मानसिक और सांस्कृतिक संदर्भों में भी विशेष महत्व रखता है।

हरियाली तीज वर्षा ऋतु में मनाया जाने वाला एक प्रमुख पर्व है, जो शिव-पार्वती के पुनर्मिलन की स्मृति में विवाहित महिलाओं द्वारा मनाया जाता है। यह श्रावण मास की शुक्ल पक्ष की तृतीया को आता है, जब आसमान बादलों से भर जाता है और धरती पर हरियाली बिछ जाती है। हरियाली तीज का मूल भाव प्रेम, समर्पण, सौंदर्य और प्रकृति के साथ तादात्म्य का है। पहले जहां इस पर्व को गाँवों और कस्बों में सामूहिक रूप से खुले वातावरण में मनाया जाता था, वहीं आज शहरी अपार्टमेंटों, वातानुकूलित हॉलों और सोशल मीडिया की चमक में इसकी आत्मा कहीं खोती जा रही है।

प्रश्न यह नहीं है कि पर्व मनाया जा रहा है या नहीं, प्रश्न यह है कि हम किस भाव से उसे निभा रहे हैं। पहले यह त्योहार स्त्रियों को सालभर की व्यस्तता और परिश्रम से थोड़ी राहत देने वाला, उनके भावनात्मक संसार को सहेजने वाला एक सहज अवसर होता था। स्त्रियाँ बिना किसी दिखावे के, प्राकृतिक परिवेश में एक-दूसरे से मिलती थीं, अपने सुख-दुख साझा करती थीं, लोकगीतों में अपने अनुभवों को पिरोती थीं। लेकिन अब यह पर्व कहीं-कहीं ह्यसर्वश्रेष्ठ श्रृंगार प्रतियोगिता तीज क्वीन और सेल्फी विद स्विंग जैसे आयोजनों में तब्दील हो गया है, जहाँ संवेदना की जगह प्रतियोगिता ने ले ली है।

हरियाली तीज स्त्री मन के उस पक्ष को उजागर करता है जो प्रेम, प्रतीक्षा और पारिवारिक समर्पण से जुड़ा होता है। आज के दौर में जब रिश्ते त्वरित संवाद और क्षणिक भावनाओं में बदलते जा रहे हैं, तब यह पर्व स्थायित्व, आस्था और धैर्य का संदेश देता है। यह पर्व यह भी सिखाता है कि संबंधों को केवल अधिकार से नहीं, कर्तव्य और भावना से निभाया जाता है। पति की दीघार्यु के लिए व्रत रखना हो या शिव-पार्वती जैसे दांपत्य संबंधों की कल्पना, इन सबमें एक ऐसा भाव छिपा है जो स्त्री को त्याग का नहीं, बल्कि आत्मबल का प्रतीक बनाता है।

आधुनिक संदर्भ में देखें तो यह पर्व कई नए अर्थों को जन्म देता है। जहां पहले तीज केवल विवाहित स्त्रियों तक सीमित थी, अब कई स्थानों पर इसे अविवाहित लड़कियाँ भी आत्मिक अनुभूति और सामूहिक संस्कृति के रूप में मनाने लगी हैं। कार्यरत महिलाओं के लिए यह पर्व अपने अस्तित्व और सांस्कृतिक पहचान से जुड़ने का एक माध्यम बनता जा रहा है। वही महिलाएं, जो दिनभर कार्यालयों में कंप्यूटर की स्क्रीन के सामने बैठी रहती हैं, तीज के अवसर पर झूला झूलते हुए कुछ पल के लिए प्रकृति के साथ जुड़ जाती हैं। यह जुड़ाव आज की मानसिक थकान और तनाव के दौर में एक भावनात्मक उपचार जैसा है।

परंतु आधुनिकता की यह यात्रा केवल सकारात्मक बदलाव नहीं लाती। तीज अब एक ह्यसोशल मीडिया इवेंटह्न बन गया है, जहाँ हर महिला को यह सोचकर श्रृंगार करना पड़ता है कि उसकी फोटो सबसे सुंदर दिखे। फेसबुक और इंस्टाग्राम पर जैसे ट्रेंड त्योहार को ग्लैमर से तो भरते हैं, पर उसकी आत्मा को खोखला भी करते हैं। त्योहार अब मन की खुशी से ज्यादा दिखावे की होड़ में शामिल हो गया है। यही कारण है कि त्योहार बीतने के बाद भी मन संतुष्ट नहीं होता, क्योंकि वह जुड़ाव, वह सामूहिकता, वह आत्मीयता अब केवल तस्वीरों में सीमित रह जाती है।

हरियाली तीज की सबसे सुंदर बात यह थी कि यह पर्व हमें प्रकृति के करीब ले जाता था। खेतों में लगे झूले, पेड़ों पर टंगे कागज के फूल, मिट्टी से बने शिव-पार्वती के स्वरूप – ये सब हमें याद दिलाते थे कि हम प्रकृति के ही अंश हैं। आज जब हम जलवायु परिवर्तन, ग्लोबल वॉर्मिंग, पेड़ों की कटाई और प्रदूषण जैसे संकटों से जूझ रहे हैं, तब तीज जैसे पर्व हमें पर्यावरण संरक्षण की चेतना दे सकते हैं। अगर हर तीज पर एक पेड़ लगाने की परंपरा शुरू की जाए, अगर बच्चों को झूला झुलाने के साथ-साथ पेड़ से प्रेम करना सिखाया जाए, तो यह पर्व केवल धार्मिक नहीं, पर्यावरणीय आंदोलन बन सकता है।

तीज में महिलाएं लोकगीत गाती थीं, जिनमें नारी की पीड़ा, उसकी उम्मीदें, उसकी हंसी, और उसका समाज से संवाद छुपा होता था। आज वह लोकगीत मोबाइल की रिंगटोन बन चुके हैं या यूट्यूब के व्यूज तक सिमट गए हैं। हमें इन गीतों को फिर से जीवन में लाना होगा। नारी की आवाज को उसकी भाषा, उसकी धुन, और उसके लोकसंगीत में फिर से पिरोना होगा। यदि हम सच में महिला सशक्तिकरण की बात करते हैं तो इन सांस्कृतिक मंचों को पुनर्जीवित करना जरूरी है, क्योंकि यही स्त्रियों को आत्म-अभिव्यक्ति की सबसे स्वाभाविक जमीन देते हैं।

आज जब महिलाएं शिक्षा, सेवा, राजनीति और विज्ञान के हर क्षेत्र में भागीदारी निभा रही हैं, तब यह आवश्यक है कि त्योहारों को भी उनके नए रूपों में स्वीकार किया जाए। तीज को केवल पारंपरिक श्रृंगार और व्रत तक सीमित न कर, उसे आत्मचिंतन, सांस्कृतिक संवाद और सामाजिक चेतना से जोड़ना होगा। तीज केवल घर की चारदीवारी में मनाया जाने वाला त्योहार नहीं होना चाहिए, बल्कि यह महिला जागरूकता, पर्यावरण संरक्षण, लोकसंस्कृति संरक्षण और सामाजिक संवाद का अवसर बन सकता है। अगर एक महिला तीज के दिन वृक्षारोपण करे, कुपोषित बच्चों के लिए भोजन बांटे, घरेलू हिंसा के खिलाफ एक संवाद करे, तो वह इस पर्व को नई चेतना दे सकती है।

आखिर कब समझेंगे हम प्रकृति की मूक भाषा?

योगेश कुमार गोयल

पेड़-पौधों की अनेक प्रजातियों के अलावा बिगड़ते पर्यावरणीय संतुलन और मौसम चक्र में आते बदलाव के कारण जीव-जंतुओं की अनेक प्रजातियों के अस्तित्व पर संकट के बादल मंडरा रहे हैं। इन प्रजातियों के लुप्त होने का सीधा असर समस्त मानव सभ्यता पर पड़ना अवश्यम्भावी है। प्रदूषित हो रहे पर्यावरण के आज जो भयावह खतरे हमारे सामने आ रहे हैं, उनसे शायद ही कोई अनभिज्ञ हो और हमें यह स्वीकार करने से भी गुरेज नहीं करना चाहिए कि इस तरह की समस्याओं के लिए कहीं न कहीं जिम्मेदार हम स्वयं भी हैं।

सबसे पहले यह जानना बेहद जरूरी है कि प्रकृति आखिर है क्या? प्रकृति के तीन प्रमुख तत्व हैं जल, जंगल और जमीन, जिनके बगैर प्रकृति अधूरी है और यह विड़म्बना ही है प्रकृति के इन तीनों ही तत्वों का इस कदर दोहन किया जा रहा है कि इसका संतुलन डगमगाने लगा है, जिसकी परिणति अक्सर भयावह प्राकृतिक आपदाओं के रूप में सामने भी आने लगी है। प्राकृतिक साधनों के अंधाधुंध दोहन और प्रकृति के साथ खिलवाड़ का ही नतीजा है कि पर्यावरणीय संतुलन बिगड़ने के कारण मनुष्यों के स्वास्थ्य पर तो प्रतिकूल प्रभाव पड़ ही रहा है, जीव-जंतुओं की अनेक प्रजातियां भी लुप्त हो रही हैं। पर्यावरण का संतुलन डगमगाने के चलते लोग अब तरह-तरह की भयानक बीमारियों के जाल में फंस रहे हैं, उनकी प्रजनन क्षमता पर इसका दुष्प्रभाव पड़ रहा है, उनकी कार्यक्षमता भी इससे प्रभावित हो रही है। लोगों की कमाई का बड़ा हिस्सा बीमारियों के इलाज पर ही खर्च हो जाता है।

प्रकृति का संतुलन बनाए रखने के लिए जल, जंगल, वन्य जीव और वनस्पति, इन सभी का संरक्षण अत्यावश्यक है। दुनियाभर में पानी की कमी के गहराते संकट की बात हो या ग्लोबल वार्मिंग के चलते धरती के तपने की अथवा धरती से एक-एक कर वनस्पतियों या जीव-जंतुओं की अनेक प्रजातियों के लुप्त होने की, इस तरह की समस्याओं के लिए केवल सरकारों का मुंह ताकते रहने से ही हमें कुछ हासिल नहीं होगा बल्कि प्रकृति संरक्षण के लिए हम सभी को अपने-अपने स्तर पर अपना योगदान देना होगा। प्रकृति के साथ हम बड़े पैमाने पर जो छेड़छाड़ कर रहे हैं, उसी का नतीजा है कि पिछले कुछ समय से भयानक तूफानों, बाढ़, सूखा, भूकम्प जैसी प्राकृतिक आपदाओं का सिलसिला तेजी से बढ़ा है। हमारे जो पर्वतीय स्थान कुछ सालों पहले तक शांत और स्वच्छ हवा के लिए जाने जाते थे, आज वहां भी प्रदूषण तेजी से बढ़ रहा है और ठंडे इलाकों के रूप में विख्यात पहाड़ भी अब तपने लगने हैं, वहां भी जल संकट गहराने लगा है, वहां भी बाढ़ का ताण्डव देखा जाने लगा है। इसका एक बड़ा कारण पहाड़ों में भी विकास के नाम पर जंगलों का सफाया करने के साथ-साथ पहाड़ों में बढ़ती पर्यटकों की भारी भीड़ भी है। कोई भी बड़ी प्राकृतिक आपदा सामने आने पर हम आदतन प्रकृति को कोसना शुरू कर देते हैं लेकिन हम नहीं समझना चाहते कि प्रकृति तो रह-रहकर अपना रौद्र रूप दिखाकर हमें सचेत करने का प्रयास करती रही है कि अगर हम अभी भी नहीं संभले और हमने प्रकृति से साथ खिलवाड़ बंद नहीं किया तो हमें आने वाले समय में इसके खतरनाक परिणाम भुगतने के लिए तैयार रहना होगा।

प्रकृति हमारी मां के समान है, जो हमें अपने प्राकृतिक खजाने से ढ़ेरों बहुमूल्य चीजें प्रदान करती है लेकिन अपने स्वार्थों के चलते हम अगर खुद को ही प्रकृति का स्वामी समझने की भूल करने लगे हैं तो फिर भला प्राकृतिक तबाही के लिए प्रकृति को कैसे दोषी ठहरा सकते हैं बल्कि दोषी तो हम स्वयं हैं, जो इतने साधनपरस्त और आलसी हो चुके हैं कि अगर हमें अपने घर से थोड़ी ही दूरी से भी कोई सामान लाना पड़े तो पैदल चलना हमें गवारा नहीं। इस छोटी-सी दूरी के लिए भी हम स्कूटर या बाइक का सहारा लेते हैं। छोटे-मोटे कार्यों की पूर्ति के लिए भी निजी यातायात के साधनों का उपयोग कर हम पेट्रोल, डीजल जैसे धरती पर ईंधन के सीमित स्त्रोतों को तो नष्ट कर ही रहे हैं, पर्यावरण को भी गंभीर नुकसान पहुंचा रहे हैं और पैदल चलना छोड़कर अपने स्वास्थ्य के साथ भी खिलवाड़ रहे हैं। हमारे क्रियाकलापों के चलते ही वायुमंडल में कार्बन मोनोक्साइड, नाइट्रोजन, ओजोन और पार्टिक्यूलेट मैटर के प्रदूषण का मिश्रण इतना बढ़ गया है कि हमें वातावरण में इन्हीं प्रदूषित तत्वों की मौजूदगी के कारण सांस की बीमारियों के साथ-साथ टीबी, कैंसर जैसी कई और असाध्य बीमारियां जकड़ने लगी हैं। पेट्रोल, डीजल से पैदा होने वाले धुएं ने वातावरण में कार्बन डाईऑक्साइड और ग्रीन हाउस गैसों की मात्रा को बेहद खतरनाक स्तर तक पहुंचा दिया है। पेड़-पौधे कार्बन डाईऑक्साइड को अवशोषित कर पर्यावरण संतुलन बनाने में अहम भूमिका निभाते हैं, इसलिए जरूरत है कि हम अपने-अपने स्तर पर वृक्षारोपण में दिलचस्पी लें और पौधारोपण के पश्चात उन पौधों की अपने बच्चों की भांति ही देखभाल भी करें।

दैनिक पंचांग

28 जुलाई 2025 को सूर्योदय के समय की ग्रह स्थिति

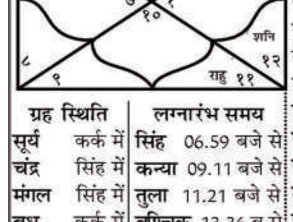

ग्रह स्थिति		लग्नारंभ समय	
सूर्य	कर्क में	सिंह	06.59 बजे से
चंद्र	सिंह में	कन्या	09.11 बजे से
मंगल	सिंह में	तुला	11.21 बजे से
बुध	कर्क में	वृश्चिक	13.36 ब.से
गुरु	मिथुन में	धनु	15.52 बजे से
शुक्र	मिथुन में	मकर	17.57 बजे से
शनि	मीन में	कुंभ	19.44 बजे से
राहु	कुंभ में	मीन	21.16 बजे से
केतु	सिंह में	मेष	22.47 बजे से
राहुकाल 7.30 से 9.00 बजे तक		वृष	00.27 बजे से
		मिथुन	02.25 बजे से
		कर्क	04.39 बजे से

सोमवार 2025 वर्ष का 209 वा दिन **दिशाशूल** पूर्व **ऋतु** वर्षा। **विक्रम संवत्** 2082 **शक संवत्** 1947 **मास** श्रावण **पक्ष** शुक्ला **तिथि** चतुर्थी 23.25 बजे को समाप्त। **नक्षत्र** पूर्वाफाल्गुनी 17.36 बजे को समाप्त। **योग** परिघ 02.54 बजे रात्र को समाप्त। **करण** वणिज 10.59 बजे तदनन्तर विष्टि 23.25 बजे को समाप्त। **चन्द्रायु** 03.2 घण्टे **रवि क्रान्ति** उत्तर 18° 58' **सूर्य** उत्तरायन **कलि अहर्गण** 1872419 **जूलियन दिन** 2460884.5 **कलियुग संवत्** 5126 **कल्पारंभ संवत्** 1972949123 **सृष्टि ग्रहारंभ संवत्** 1955885123 **वीरनिर्वाण संवत्** 2551 **हिजरी सन्** 1446 **महीना** सफर **तारीख** 02 **विशेष** विनायक चतुर्थी, श्रावण सोमवार व्रत।

दिन का चौघड़िया

अमृत	05.53 से	07.22 बजे तक
काल	07.22 से	08.50 बजे तक
शुभ	08.50 से	10.19 बजे तक
रोग	10.19 से	11.48 बजे तक
उद्वेग	11.48 से	01.17 बजे तक
चर	01.17 से	02.45 बजे तक
लाभ	02.45 से	04.14 बजे तक
अमृत	04.14 से	05.43 बजे तक

रात का चौघड़िया

चर	05.43 से	07.14 बजे तक
रोग	07.14 से	08.45 बजे तक
काल	08.45 से	10.17 बजे तक
लाभ	10.17 से	11.48 बजे तक
उद्वेग	11.48 से	01.19 बजे तक
शुभ	01.19 से	02.51 बजे तक
अमृत	02.51 से	04.2 बजे तक
चर	04.22 से	05.53 बजे तक

चौघड़िया शुभाशुभ- शुभत्व श्रेष्ठ शुभ, अमृत व लाभ, **मध्यम** चर, **अशुभ** उद्वेग, रोग व काल। सभी समय भारतीय मानक समय की मध्य रेखा बिन्दु के आधार पर है अत: आप अपने स्थानीय समयानुसार ही देखें। Jagrutidaur.com, Bangalore

नवनियुक्त चौकीदारों के लिए प्रशिक्षण कार्यशाला आयोजित, प्रशासन ने सौंपी नई जिम्मेदारियां

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

साहिबगंज : जिला प्रशासन, साहिबगंज द्वारा सिदो-कान्हू सभागार में नवनियुक्त चौकीदारों के लिए एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस महत्वपूर्ण आयोजन की अध्यक्षता उप विकास आयुक्त सतीष चंद्रा ने की।कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य जिले के नवनियुक्त चौकीदारों को उनके कर्तव्यों, अधिकारों, प्रशासनिक संरचना में भूमिका, और विधि व्यवस्था से जुड़े दायित्वों की व्यापक जानकारी प्रदान करना था। यह कार्यक्रम चौकीदारों को पारंपरिक भूमिका से आगे बढ़ाकर एक मल्टीटास्किंग, तकनीकी रूप से दक्ष सहयोगी के रूप में स्थापित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम रहा। प्रशासन की नई अपेक्षाएँ - चौकीदार अब बनेंगे तकनीकी सहयोगी उप विकास आयुक्त सतीष चंद्रा ने चौकीदारों को संबोधित करते हुए कहा कि जिला प्रशासन ने शिक्षित और तकनीकी समझ रखने वाले चौकीदारों की नियुक्ति की है। अब चौकीदार सिर्फ चौकीदारी नहीं करेगा, बल्कि कंप्यूटर संचालन, सूचना संग्रहण, रिपोर्टिंग और प्रशासनिक आदेशों के अनुपालन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। चौकीदारों से मल्टीटास्किंग कार्य लिया जाएगा। वे शासन की योजनाओं को अंतिम व्यक्ति तक पहुँचाने में भी सक्रिय भागीदारी निभाएंगे।उन्होंने चौकीदारों को प्रशासन की ₹आँख और कान₹ बताते हुए जिम्मेदारियों के प्रति ईमानदारी, सक्रियता और संवेदनशीलता के साथ कार्य करने की अपील की।

वरीय पदाधिकारियों का चरणबद्ध संबोधन एवं प्रशिक्षण

कार्यशाला में सभी वरीय पदाधिकारियों ने एक-एक कर मंच से नवनियुक्त चौकीदारों को संबोधित किया। उन्होंने अपने-अपने विभागीय अनुभवों को साझा करते हुए चौकीदारों को विधि व्यवस्था, ग्राम सुरक्षा, सूचना रिपोर्टिंग, जनता से संवाद, एवं योजना क्रियान्वयन के लिए उपयोगी दिशानिर्देश दिए। प्रशिक्षण कार्यशाला बताया कि चौकीदारों को अपने थाना एवं पंचायत क्षेत्र से नियमित समन्वय बनाए रखना है। किसी भी संदिग्ध गतिविधि की सूचना तत्काल संबंधित थाना या प्रशासन को देना अनिवार्य होगा। सरकारी योजनाओं की जमीनी स्थिति की निगरानी करनी होगी। अपने कार्यों को ईमानदारी एवं संवेदनशीलता से करना होगा। कार्यशाला में चौकीदारों को यह भी समझाया गया कि वे गांव की सूचना तंत्र का आधार हैं, इसलिए उनका सजग रहना प्रशासन की त्वरित कार्यवाही के लिए अत्यंत आवश्यक है। प्रशिक्षण के समापन पर चौकीदारों से सीधा संवाद स्थापित किया गया। इस दौरान उन्होंने अपने विचार साझा किए और प्रशिक्षण से संबंधित कई महत्वपूर्ण सुझाव दिए। चौकीदारों ने भरोसा दिलाया कि वे अपने कर्तव्यों का पालन पूरी निष्ठा और कर्तव्य परायणता के साथ करेंगे। कार्यक्रम का समापन सभी चौकीदारों द्वारा ईमानदारी पूर्वक सेवा की शपथ के साथ हुआ। इस अवसर पर सामान्य शाखा प्रभारी सुनीता किस्कु, जिला आपूर्ति पदाधिकारी झुनू कुमार मिश्रा, अनुमंडल पदाधिकारी अमर जॉन ऐन्द, अनुमंडल पदाधिकारी सदानंद महतो, पुलिस उपाधीक्षक विजय कुमार कुशवाहा, जिला परिवहन पदाधिकारी मिथिलेश कुमार चौधरी, राज्य कर पदाधिकारी अमीन अंसारी तथा जिले के सभी थाना प्रभारीगण भी उपस्थित रहे।

एक नजर

जहरीले सांप के काटने से 48 वर्ष व्यक्ति हुआ मूर्छित

साहिबगंज: तालझारी थाना क्षेत्र अंतर्गत एक व्यक्ति को जहरीले सांप ने काट लिया। मिली जानकारी के अनुसार महराजपुर मसकलैया निवासी स्वर्ग जीतू मंडल का 48 वर्ष पुत्र पंकज मंडल अपने घर से एक किलोमीटर की दूरी में अपने खेत में सब्जी तोड़ रहा था, इसी दौरान किसी जहरीले सांप ने पंकज मंडल का पैर में काट लिया और वह मूर्छित होने लगा। वही खेत में काम कर रहे अन्य परिजनों की मदद से इलाज के लिए सदर अस्पताल साहिबगंज लाया गया। जहां ड्यूटी पर तैनात चिकित्सकों के द्वारा इलाज किया गया। सदर अस्पताल में चिकित्सकों के द्वारा इलाज करने के बाद उक्त व्यक्ति का स्थिति में सुधार है।

मोटरसाइकिल दुर्घटना में युवक हुआ घायल सदर अस्पताल में भर्ती

साहिबगंज: मुफ्फसिल थाना क्षेत्र के किशन प्रसाद पुल के पास रविवार को मोटरसाइकिल अनियंत्रित होकर पलटने से ब्रजेश कुमार पिता शालिग्राम मंडल नामक युवक गंभीर रूप से घायल हो गया जहां इस घटना के बाद परिजन उसे बेहतर इलाज हेतु सदर अस्पताल लेकर आए जहां ड्यूटी पर तैनात चिकित्सक डॉ केशव कृष्णा ने फौरन इलाज किया। वही परिजनों ने बताया कि युवक साहिबगंज से अपने घर लौट रहा था जहां किशन प्रसाद पुल के समीप बीच सड़क पर झुंड में कुत्ते आपस में लड़ रहे थे तभी एकाएक सभी कुत्ते भागने लगे इसी दौरान बाईक सवार युवक अनियंत्रित होकर सड़क पर पलट गया और गंभीर रूप से घायल हो गया। जहां घायल युवक के चेहरे, गले एवं शरीर के अन्य हिस्सों में कई जगह गंभीर चोट आई है जिसका सदर अस्पताल में इलाज जारी है।

हैदराबाद से लापता बोरियो का युवक सकुशल घर लौटा

बोरियो: बोरियो संथाली मोमिन टोला निवासी रमजान अंसारी का पुत्र कादीर अंसारी 14 वर्ष हैदराबाद से विगत 14 जुलाई 25 से लापता हो गया था। मिली जानकारी के अनुसार बोरियो मोमिन टोला के सलीम अंसारी ने बताया कि कादीर अंसारी 14 जुलाई को हैदराबाद अपने रिश्तेदारों के साथ गया था। रिश्तेदार ने दूरभाष पर सूचना दी कि कादीर लापता हो गया है। काफी खोजबीन के बाद भी नहीं मिल रहा है। सलीम ने बताया कि शनिवार अपराह्न 2:00 बजे कादिर बंगाल के फरक्का स्टेशन से मिला। तीनपहाड़ के एक युवक ने परिजनों को सूचना दी की फरक्का फुटानी मोड़ के एक व्यक्ति ने कादिर को देखा है। परिजन फरक्का जाकर कादिर को सकुशल घर ले आए।

बकरी को लेकर झगड़ा, दो पक्षों में हुई मारपीट में घायल

साहिबगंज: गंगा नदी थाना क्षेत्र के कारगिल दियारा में सुग्रीव महतो और अरमान महतो के बीच बकरी द्वारा अनाज खाने को लेकर विवाद हो गया। दोनों पक्षों में कहा सुनी होते-होते मारपीट हो गई, जिसमें हंसुआ से वार कर एक-दूसरे को घायल कर दिया गया। दोनों ने गंगा नदी थाने में एक-दूसरे के खिलाफ शिकायत दर्ज करायी है। पुलिस ने दोनों को इलाज के लिए सदर अस्पताल भेज दिया है। सुग्रीव का आरोप है कि मछली का जाल लगाकर लौटने पर बकरी को लेकर विवाद हो रहा था, समझाने पर अरमान और उसके साथियों ने लाठी-डंडों और हंसुआ से हमला कर उसे गंभीर रूप से घायल कर दिया। वहीं, अरमान का कहना है कि सुग्रीव की बकरी बार-बार उनके घर में घुसकर अनाज खा जाती थी और समझाने पर भी वह उसे बांधकर नहीं रखता था, जिसके चलते विवाद हुआ और सुग्रीव और उसके परिवार वालों ने उनके साथ मारपीट की।

भारतीय हलधर किसान यूनियन ने किसानों के अहम मुद्दों पर की बैठक

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

साहिबगंज : शहर के रेलवे जेनरल इंस्टीच्यूट में रविवार को भारतीय हलधर किसान यूनियन की बैठक लक्ष्मण यादव की अध्यक्षता मे हुई। बैठक में संगठन मजबूती को लेकर चर्चा किया गया। इस दौरान कई किसानों ने बारी बारी से अपनी समस्या को रखा। किसानों ने बताया कि कृषि लॉन सरकार के द्वारा माफ करने के बाबजूद बैंक से किसानों को नोटिस जारी किया जाता है। बैठक मे किसानों ने एक स्वर मे कहा बैंक नोटिस भेजना बंद करें। वही बैठक मे सर्व सहमति से प्रस्ताव पारित कर किसानों ने सरकार से मांग किया है कि जमीन का लगान रशीद काटना बंद हैं इसे सरकार जल्द काटने का काम शुरू करें प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना वर्ष 2018 एवं 2019 का भुगतान की दिशा में अभिलंब कारवाई कर लाभुक किसान को भुगतान करें। वही जिला अध्यक्ष लक्ष्मण यादव ने कहा कि मुख्यमंत्री फसल बीमा योजना राशि वर्ष 2021 से 2024 तक किसानों को आज तक भुगतान नहीं किया गया है,तो जांचोपरांत भुगतान किया जाय। अध्यक्ष ने कहा कि वर्तमान में दियरा क्षेत्र में बाढ़ की स्थिति बनी हुई है किसानों को बाढ़ से बचाव के लिए राहत देते हुए पशुओं को चारा की व्यवस्था सुनिश्चित करें। बाढ़ प्रभावित किसान परिवारों को रिलीफ व अनुदान प्रदान करें। वही मिडिया प्रभारी बच्चन कुमार पाठक ने कहा कि बाढ़ से बदई फसल का नुकसान हुआ है सरकार इसका फसल बीमा शीघ्र कराने का निर्णय ले।

गांजा तस्कर के खिलाफ चला पुलिस का डंडा, एक गिरफ्तार

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

पाकुड़ : जिले में चल रही अवैध गाँजा का खरीद बिक्री एवं भंडारण की गुप्त सूचना के आधार पर समीर एल्फ्रेड मुर्मू प्रखण्ड विकास पदाधिकारी, पाकुड़ के नेतृत्व में कार्रवाई करने हेतु पु०नि०-सह-थाना प्रभारी, पाकुड़ (नगर) एवं थाना मे पदस्थापित पुलिस पदाधिकारी एवं कर्मियों का टीम गठन कर दिनांक 25.07.2025 को विशेष अभियान चलाया गया। छापामारी के क्रम मे पाकुड़ नगर थाना क्षेत्र अंतर्गत प्यादापुर बेलडांगा स्थित दुलाल रविदास पिता गांगों रविदास के घर छापामारी करने पर अवैध गाँजा, मोबाईल, नगद राशि एवं इलेक्ट्रोनिक वेट मशीन अन्य सामग्री इत्यादि बरामद किया गया। इस संबंध मे दुलाल रविदास पिता गांगों रविदास ग्राम बेलडांगा प्यादापुर, थाना पाकुड़ नगर, जिला पाकुड़ के विरुद्ध वैध गांजा का भंडारण एवं खरीद बिक्री के आरोप मे पाकुड़ नगर थाना कांड संख्या 203/2025, दिनांक 25.07.2025, धारा 20 एन०डी०पी०एस० एक्ट के अंतर्गत काण्ड दर्ज किया गया। अनुसंधान के क्रम मे घटनास्थल से फरार अभियुक्त को रविवार को विधिवत गिरफ्तार किया गया एवं अन्य अभियुक्तों के विरुद्ध छापामारी जारी है। गिरफ्तार अभियुक्त ने इस कांड मे अपना अपराध स्वीकार किया है जिन्हे माननीय न्यायालय मे अग्रसारण किया गया।

बरामद सामानों की विवरणी :-

गांजा कुल वजन 726 ग्राम, एक बड़ा इलेक्ट्रोनिक वेट मशीन, एक छोटा इलेक्ट्रोनिक वेट मशीन, गांजा पेकिंग करने वाला प्लास्टिक का पैकेट कुल 250 ग्राम, नगर राशि कुल 2920 रुपया,एक स्मार्ट मोबाइल फोन, गिरफ्तार व्यक्ति का नाम, दुलाल रविदास पिता गांगों रविदास ग्राम बेलडांगा प्यादापुर, थाना पाकुड़ नगर, जिला पाकुड़। छापामारी दल मे शामिल पदा०/कमीर्यों का नाम :-

प्रयाग दास, पु०नि०-सह-थाना प्रभारी पाकुड़, नगर थाना, पु०अ०नि० राहुल गुप्ता, पु०अ०नि० विनोद कुमार ,स०अ०नि० सनातन मांझी, स०अ०नि० सुशीला माड़ी, हवालदार रिकू यादव, आरक्षी संख्या 182 गंगा सागर, सभी थाना पाकुड़ (नगर), जिला पाकुड़।

जिले ने स्वास्थ्य गुणवत्ता में पाया दूसरा स्थान प्रोजेक्ट 'जागृति' बना सफलता की मिसाल

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

पाकुड़ : ज़िले में प्रोजेक्ट जागृति- बेहतर स्वास्थ्य की ओर एक कदम, यह एक सूक्ति नहीं है। स्वास्थ्य विभाग पाकुड़ ने इसे सही कर दिखाया। पाकुड़ जिला ने राष्ट्रीय गुणवत्ता आश्वासन मानक (एनक्यूएएस) असेसमेंट में पूरे राज्य में दूसरा स्थान प्राप्त कर अपनी स्वास्थ्य सेवाओं की उत्कृष्टता साबित की है। यह सफलता उपायुक्त मनीष कुमार के निदेर्शानुसार और सिविल सर्जन डॉ सुरेन्द्र कुमार मिश्रा, उपाधीक्षक सदर अस्पताल डॉ मनीष कुमार सिन्हा एवं गुणवत्ता नोडल पदाधिकारी डॉ अमित कुमार के मार्गदर्शन में जिला एवं ब्लॉक टीम के समर्पित प्रयासों से संभव हुई। ज्ञात हो कि भारत सरकार के द्वारा संचालित स्वास्थ्य गुणवत्ता आश्वासन कार्यक्रम के अंतर्गत स्वास्थ्य केंद्र के श्रेणी के अनुसार राष्ट्रीय गुणवत्ता आश्वासन मानक एवं कायाकल्प में बेहतर कार्य करने हेतु पुरस्कार राशि भी दिए जाते है। इसी कार्यक्रम के क्रम में पाकुड़ जिले में संचालित सभी सीएचसी, पीएचसी, यूपीएचसी एवं आयुष्मान आरोग्य मंदिर स्तर पर स्वास्थ्य केंद्र को गुणवत्तापूर्ण कार्य करने एवं साफ-सफाई में बेहतर बनाए रखने हेतु स्वास्थ्य केंद्र को पुरस्कृत किया गया हैं। राज्य द्वारा सम्मान समारोह का आयोजन दिनांक 28 जुलाई 2025 को क्ढल, नामकुम, रांची में स्वास्थ्य मंत्री, झारखंड सरकार मो० इरफान अंसारी की उपस्थिति में उनके कर कमलों से सम्मान वितरण किया जाएगा जिसमें राज्य भर से सभी विजेता स्वास्थ्य केंद्र के प्रतिनिधि को आमंत्रित किया गया हैं जिसमें पाकुड़ जिले के विजेता स्वास्थ्य केंद्र के प्रतिनिधि भी सम्मान समारोह में शामिल होने हेतु उत्सुक हैं। पाकुड़ जिले में कुल 44 आयुष्मान आरोग्य मंदिर को राष्ट्रीय गुणवत्ता आश्वासन मानक सर्टिफिकेशन कराने हेतु आवेदन किए गए है जिसमें अबतक 30 का भारत सरकार द्वारा नामित नेशनल असेसर टीम द्वारा असेसमेंट किया जा चुका हैं।

उपायुक्त ने स्वास्थ्य विभाग की पूरी टीम को दी बधाई

करोड़ों की लागत से बनी सड़क एक महीने में ही बदहाल

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

साहिबगंज : जिले के मंडरो प्रखंड अंतर्गत सिमडा.पंचायत स्थित बंगलिया गांव के रास्ते देवदाड़ तक बन रहे करोड़ों की राशि से सड़क निर्माण कार्य भ्रष्टाचार का भेठ चढ रहा है। महज एक महीने पहले करोड़ों रुपये खर्च कर सड़क निर्माण कार्य को दुरुस्त की गयी सड़क अब जगह-जगह से टूटने लगी है। सड़क पर कई जगह गहरा गड्ढा बन चुका है, जिससे राहगीरों को भारी परेशानी हो रही है और सड़क पहले की तरह दिखने लगी है सड़क के कई स्थानों पर दरार तो कई जगह गड्ढा बन चुका है। जिससे दुर्घटना की आशंका भी बनी हुई है। सड़क निर्माण का जिम्मा बिहार के ठेकेदार को मिला है। बताते चले की एक तरफ सड़क निर्माण कार्य चल रहा है और वही दूसरी तरफ सड़क गड्ढे में तब्दील होता जा रहा है।

इतना ही नहीं देवदाड़ आदिवासी गांव के पास वर्तमान में चल रहे पीएससी सड़क निर्माण कार्य में भारी अनियमित बरती जा रही है। विभागीय जेई की अनुपस्थिति में पीसीसी सड़क निर्माण कार्य चल रहा है और ओवर साईज का छर्री और घटिया क्वालिटी का बालू से ढलाई का कार्य किया जा रहा है शनिवार को जब कार्य स्थल का जायजा लिया गया तो कार्य स्थल पर विभाग के ना ही जेई ना ही कोई कर्मी उपस्थित थे। इधर घटिया तरीके से हो रहे सड़क निर्माण कार्य को लेकर ग्रामीणों में आक्रोश है।

असम में मुस्लिमों के खिलाफ कार्रवाई पर एसडीपीआई का पैदल मार्च, बुलडोजर नीति के खिलाफ उठी आवाज

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

पाकुड़ : असम में मुसलमानों के घरों को बुलडोजर से गिराए जाने, उन्हें जबरन बेदखल किए जाने और लगातार हो रहे भेदभावपूर्ण कार्रवाई के खिलाफ सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी ऑफ इंडिया द्वारा शांतिपूर्ण लेकिन प्रभावशाली पैदल मार्च निकाला गया। यह विरोध प्रदर्शन रहसपुर में आयोजित किया गया, जो आज विरोध प्रदर्शन के दूसरे दिन भी पूर्ण उत्साह, अनुशासन और एकता के साथ संपन्न हुआ। मार्च की अगुवाई SDPI के ज़िला अध्यक्ष मोबारक शेख द्वारा की गई। इस आयोजन में सैकड़ों की संख्या में कार्यकर्ता, सामाजिक न्याय के पक्षधर लोग शामिल हुए। प्रदर्शनकारियों ने हाथों में तख्तियाँ लेकर और शांतिपूर्ण नारों के जरिए अपना विरोध दर्ज कराया। **मुख्य नारे थे।** बुलडोजर नहीं, इंसाफ चाहिए। मुसलमानों पर जुल्म बंद करो। हम एक हैं - हम इंसाफ माँगते हैं

SDPI प्रदेश अध्यक्ष हनजेला शेख ने अपने वक्तव्य में कहा कि यह लड़ाई केवल असम के मुसलमानों की नहीं, बल्कि पूरे देश के संविधान, लोकतंत्र और मानवता की रक्षा की लड़ाई है। रउद्धक जुल्म के खिलाफ हर मैदान में आवाज उठाएगा। SDPI ने केंद्र और असम सरकार से मांग की है कि: बेदखली और बुलडोजर कार्यवाहियों पर तत्काल रोक लगाई जाए। पीड़ित परिवारों को मुआवजा और पुनर्वास दिया जाए। NHRC और उच्च न्यायालय इस मामले में स्वतः संज्ञान लें। विरोध प्रदर्शन का समापन रहसपुर चौक पर एक जनसभा के साथ हुआ, जिसमें आगामी आंदोलन की रूपरेखा भी प्रस्तुत की गई। मौके पर एसडीपीआई प्रदेश सचिव अमीर हम्जा, अब्दुल हन्नान, ओबैदुर रहमान, मोसा शेख, हजरत अली, नजमूल हक, मनजर शैख, मगफेरत, असमाउल, तोहीदुर, हफीजुल इस्लाम, रोनी शेख आदि उपस्थित थे।

संक्षिप्त खबरें

दुष्कर्म मामले में पुलिस ने एक युवक को गिरफ्तार कर भेजा जेल

साहिबगंज: मिजाचौकी थाना क्षेत्र अंतर्गत दुष्कर्म करने के आरोप में एक युवक को मिजाचौकी पुलिस ने गिरफ्तार किया है। मिली जानकारी के अनुसार मिजाचौकी थाना कांड संख्या 49/25, दिनांक 25 जुलाई 25, धारा 69/353/ 356(2)/356(3) एवं 66(बी) 66(सी)/67/67 ए आईटी एक्ट का अभियुक्त अनिल कुमार उर्फ संजू उम्र 23 वर्ष, पिता लखींदर लोहार, साकिन ललमटिया बड़ा भोराई, थाना ललमटिया, जिला गोड्डा, को विधिवत मिजाचौकी की पुलिस ने गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार करने के उपरांत पुलिस ने कागजी प्रक्रिया करने के बाद शारीरिक जांच के लिए अभियुक्त को सदर अस्पताल साहिबगंज लेकर आया। जहां ड्यूटी पर तैनात चिकित्सकों ने उक्त अभियुक्त का शारीरिक जांच किया। शारीरिक जांच के बाद पुलिस ने अभियुक्त को न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया है।

निमार्णाधीन भवन में करंट लगने से राजमिस्त्री मूर्छित, अस्पताल में भर्ती

साहिबगंज : जिरवाबाड़ी थाना क्षेत्र अंतर्गत धोबी झरना स्थित निमार्णाधीन घर में रविवार को राजमिस्त्री का काम करने के दौरान बिजली करंट लगने से किशन प्रसाद रामपुर निवासी युवक सुभाष कुमार मंडल पिता भोपाल मंडल मूर्छित हो गया। जहां इस घटना के बाद युवक को अन्य सहयोगियों की मदद से बेहतर इलाज हेतु सदर अस्पताल लाया गया जहां ड्यूटी पर तैनात चिकित्सक की देखरेख में फौरन इलाज किया गया। वही घटना को लेकर अन्य सहयोगियों ने बताया कि सभी लोग राजमिस्त्री का काम कर रहे थे जहां अचानक बिजली का नंगा तार पर हाथ लग जाने से युवक को करंट लग गया और वो मूर्छित हो गया। उधर सदर अस्पताल में इलाज जारी है जहां वो खतरे से बाहर बताया जा रहा है।

जर्जर व कीचड़मय सड़क के कारण ग्रामीण परेशान बसंती हांसदा के पहल से अस्थाई हुई मरम्मती

साहिबगंज/उधवा: प्रखंड क्षेत्र के मोहनपुर पंचायत सिमलजोड़ी गांव में मानसून के बारिश से जर्जर सड़क कीचड़मय होने के कारण ग्रामीण परेशान हो रहे थे। आपको बता दें जानकारी से उधवा प्रखंड मुख्यालय से करीब लगभग चार किलोमीटर दूर स्थित मोहनपुर पंचायत के सिमलजोड़ी गांव में जहां सड़क जर्जर हो चुकी है एवं लगातार हो रही बारिश के कारण कीचड़मय हो जाने से ग्रामीणों को यातायात करने में काफी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा था। ग्रामीणों ने झामुमो महिला मोर्चा के जिलाध्यक्ष सह पूर्व प्रखंड प्रमुख बसंती हांसदा को समस्या से अवगत कराया। जिस पर संज्ञान लेते हुए बसंती हांसदा ने उक्त जर्जर व कीचड़मय सड़क की अस्थाई मरम्मती की पहल किया। वहीं रविवार को सड़क पर डस्ट बिछाकर आवागमन को सुगम बनाने की प्रयास की गई।उनके इस कार्य से ग्रामीणों में खुशी है। साथ ही ग्रामीणों ने बसंती हांसदा का आभार जताया है। इस दौरान झामुमो महिला मोर्चा जिलाध्यक्ष सह पूर्व प्रखंड प्रमुख बसंती हांसदा ने कहा कि बहुत जल्द पक्की सड़क का निर्माण कराया जाएगा। उन्होंने कहा कि जनता की समस्या के समाधान के लिए हमेशा तत्पर रहते है। उन्होंने ग्रामीणों को आगे हरसंभव मदद का भरोसा दिया।

कैंप लगाकर बनाया जाएगा ड्राइविंग लाइसेंस तीन पहिया वाहनों का

बरहरवा : विधायक निसात आलम के प्रयास से बरहरवा प्रखंड मुख्यालय में कैंप लगा कर तीन पहिया वाहनों का जिला परिवहन पदाधिकारीयों द्वारा बनाया जाएगा लाइसेंस। जैसा के हम सभी को ज्ञात है 20 जुलाई के बाद पूरे जिले में सघन वाहन जांच अभियान शुरू किया गया है,इसकी जानकारी जिला परिवहन पदाधिकारी मिथिलेश कुमार चौधरी ने दी थी कि जिन वाहनों का अब तक पंजीकरण नहीं हुआ है या जिन चालकों के पास वेद ड्राइविंग लाइसेंस नहीं है उन पर मोटर वाहन अधिनियम 1988 के तहत सीधी कार्यवाही की जाएगी बिना कागजात पाए जाने पर एफआईआर भी दर्ज की जाएगी। जिला परिवहन पदाधिकारी मिथिलेश कुमार चौधरी का वाहन मालिकों और चालकों के लिए जरूरी निर्देश की पहले वाहनों का रजिस्ट्रेशन करवाए एवं ड्राइविंग लाइसेंस बनवाए। वाहन चलाते समय हेलमेट और सीट बेल्ट का प्रयोग अनिवार्य है। विधायक निसात आलम का बरहरवा प्रखंड के तीन पहिया वाहनों चालकों से अपील है की बिना वाहनों का रजिस्ट्रेशन करवाए एवं बिना लाइसेंस के वाहन चलाना कानून अपराध है। कैंप में आकर अपना लाइसेंस और गाड़ी का पेपर दुरुस्त कर ले। यह कैंप आपकी सुविधा के लिए लगाया जा रहा है इसका लाभ अवश्य उठाएं।

डीआरएम ने साहिबगंज स्टेशन पर तीन मिनट रुक कर ली जानकारी

साहिबगंज: मालदा रेल मंडल अंतर्गत साहिबगंज रेलवे स्टेशन पर रविवार दोपहर मालदा रेल मंडल के प्रबंधक मनीष गुप्ता ने भागलपुर से बरहरवा रेल खंड के बीच विंडो निरीक्षण किया। इस दौरान रेल प्रबंधक का सैलून साहिबगंज रेलवे स्टेशन पर तीन मिनट के लिए रुका। साहिबगंज रेलवे स्टेशन पर पूर्व से मौजूद रेलवे के अन्य अधिकारी, डीआरएम का विशेष सैलून रुकते ही ट्रेन के अंदर गए और डीआरएम से मुलाकात की। इस अवसर पर मनीष गुप्ता ने उपस्थित अधिकारियों से कहा कि ह्वअमृत भारत योजनाह्व के तहत साहिबगंज रेलवे स्टेशन में जो कार्य किया जा रहा है, उसमें गुणवत्ता का ध्यान रखते हुए तेजी लाने का निर्देश दिया गया है। इस मौके पर मुख्य रूप से साहिबगंज रेलवे के सहायक अभियंता वेदव्यास शरण, साहिबगंज रेलवे स्टेशन प्रबंधक राजहंस पाठक, आरपीएफ निरीक्षक गुलाम सरोवर सहित अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

चीन में विश्व आर्टीफीशियल इंटेलीजेंस कांफ्रेंस में एक इंसान की तरह लगने वाले रॉबोट से बात करते हुए लोग।

अमेरिकी बाजार से अपने उत्पाद वापस मंगा रही हैं भारतीय दवा कंपनियां

सन फार्मा, ल्यूपिन और डॉ. रेड्डीज लैबोरेटरीज की दवाओं में पाई गई विनिर्माण संबंधी खामियां

नई दिल्ली।

अमेरिका के दवा नियामक यूएसएफडीए की रिपोर्ट के अनुसार भारत की प्रमुख दवा कंपनियों सन फार्मा, ल्यूपिन और डॉ. रेड्डीज लैबोरेटरीज को विनिर्माण संबंधी खामियों और उत्पाद मिश्रण के कारण अमेरिका से अपनी दवाएं वापस मंगानी पड़ी हैं। सन फार्मा ने लिसडेक्साफेटामाइन डाइमीसाइलेट (60 मिलीग्राम) कैप्सूल की 5,448 बोतलों को वापस मंगाया है। यह दवा कंपनी की प्रिंसटन (अमेरिका) इकाई से जुड़ी है, और वापसी की प्रक्रिया 16 जून 2025 से शुरू की गई थी। वहीं ल्यूपिन ने उच्च रक्तचाप के इलाज में उपयोग की जाने वाली लिसिनोप्रिल और हाइड्रोक्लोरोथीयाजाइड (20/12.5एमजी) टैबलेट की 58,968 बोतलों को वापस बुलाया है। यह दवा नागपुर स्थित संयंत्र में बनाई गई थी। वापसी का कारण एक विदेशी टैबलेट का बोतल में पाया जाना था, जिसकी पहचान अटेजेनाविर और रिटोने विर (300/100एमजी) के रूप में हुई, जो एचआईवी के इलाज में प्रयोग होती है। इसके अतिरिक्त, डॉ. रेड्डीज लैबोरेटरीज ने पेट की बीमारियों में उपयोगी ओमेप्राजोल डिलायड री लिज कैप्सूल की 1,476 बोतलों को वापस मंगाया है। यह दवा तेलंगाना के बाचुपल्ली संयंत्र में बनी थी और इसकी वापसी 30 जून 2025 से

शुरू की गई। ये घटनाएं भारतीय दवा कंपनियों के लिए वैश्विक स्तर पर गुणवत्ता नियंत्रण की गंभीर चुनौती को रेखांकित करती हैं, और नियामक मानकों के प्रति सतर्कता बनाए रखने की आवश्यकता को दर्शाती हैं।

कोल्हापुरी चप्पल की वैश्विक पहचान को मिला क्यूआर कोड

नकली उत्पाद की बिक्री पर लगेगी रोक

कोल्हापुर। भारत की पारंपरिक हस्तकला का गौरव, कोल्हापुरी चप्पल, अब तकनीक और कानूनी सुरक्षा के नए युग में प्रवेश कर चुकी है। महाराष्ट्र के चमड़ा उद्योग विकास निगम (लिडकॉम) ने इस प्रसिद्ध हस्तनिर्मित चप्पल के लिए क्यूआर कोड आधारित प्रमाणीकरण शुरू किया है, जिससे इसकी प्रामाणिकता और कारीगर की पहचान को ट्रैक किया जा सकेगा। यह पहल नकली चप्पलों की बिक्री पर रोक लगाने, उपभोक्ताओं का भरोसा बढ़ाने और पारंपरिक कारीगरों को उचित पहचान दिलाने के उद्देश्य से की गई है। क्यूआर कोड स्कैन कर ग्राहक यह जान सकेंगे कि उत्पाद कहां बना, किसने बनाया, कौन-सी शिल्प तकनीक और कच्चा माल उपयोग हुआ, और यह जीआई प्रमाणित है या नहीं। इस बीच इटली के मशहूर फैशन ब्रांड प्रादा विवादों में घिर गया है। हाल ही में उनके 2026 फैशन शो में प्रदर्शित पुरुषों की एक सैंडल डिजाइन को कोल्हापुरी चप्पल से मिलता-जुलता पाया गया, जिसे लेकर भारतीय कारीगरों ने जीआई अधिकारों के उल्लंघन का आरोप लगाया। प्रादा ने माना कि यह डिजाइन भारतीय हस्तशिल्प से प्रेरित है, लेकिन इसका व्यावसायिक उत्पादन शुरू नहीं हुआ है। ब्रांड की एक विशेषज्ञ टीम ने कोल्हापुर का दौरा कर स्थानीय निर्माण प्रक्रिया को भी देखा। 12वीं शताब्दी से कोल्हापुर, सांगली और सोलापुर जिलों में तैयार होने वाली कोल्हापुरी चप्पल, छत्रपति शाहू महाराज के समर्थन से आत्मनिर्भरता और स्वदेशी गौरव का प्रतीक बन गई थी। आज क्यूआर कोड जैसी पहल इस धरोहर को आधुनिक पहचान देने का काम कर रही है।

सेंसेक्स की प्रमुख छह कंपनियों का बाजार पूंजीकरण 2.22 लाख करोड़ घटा

- रिलायंस इंडस्ट्रीज का बाजार मूल्यांकन घटकर 18,83,855 करोड़ हो गया

नई दिल्ली।

पिछले सप्ताह शेयर बाजार में कमजोरी के रुख का असर देश की सबसे बड़ी कंपनियों पर भी देखने को मिला। सेंसेक्स की टॉप 10 में शामिल छह कंपनियों के बाजार पूंजीकरण (मार्केट कैप) में कुल मिलाकर 2.22 लाख करोड़ की गिरावट दर्ज की गई। सबसे अधिक नुकसान रिलायंस इंडस्ट्रीज को झेलना पड़ा। पिछले सप्ताह बीएसई सेंसेक्स में 294.64 अंकों की गिरावट आई। इस दौरान जिन कंपनियों के मार्केट कैप में गिरावट आई, उनमें रिलायंस इंडस्ट्रीज, टीसीएस, इन्फोसिस, बजाज फाइनेंस, हिंदुस्तान यूनिलीवर और एलआईसी शामिल हैं। रिलायंस इंडस्ट्रीज का बाजार मूल्यांकन 1,14,687.7 करोड़ की गिरावट के साथ घटकर 18,83,855.52 करोड़ रह गया। वहीं इन्फोसिस का मार्केट कैप 29,474.56 करोड़ घटकर 6,29,621.56 करोड़ हो गया। टीसीएस को 20,080.39 करोड़ का नुकसान हुआ और उसका मूल्यांकन 11,34,035.26 करोड़ पर आ गया। एलआईसी, बजाज फाइनेंस

और हिंदुस्तान यूनिलीवर को क्रमशः 23,086.24 करोड़, 17,524.3 करोड़ और 17,339.98 करोड़ का घाटा हुआ। दूसरी ओर चार कंपनियाँ ऐसी रहीं जिनका बाजार पूंजीकरण बढ़ा। इनमें एचडीएफसी बैंक सबसे आगे रहा, जिसके मार्केट कैप में 37,161.53 करोड़ की बढ़ोतरी हुई और उसका मूल्यांकन 15,38,078.95 करोड़ तक पहुंच गया। आईसीआईसीआई बैंक का मार्केट कैप 35,814.41 करोड़ बढ़कर 10,53,823.14 करोड़ हो गया। भारती एयरटेल और भारतीय स्टेट बैंक को क्रमशः 20,841.2 करोड़ और 9,685.34 करोड़ का लाभ हुआ। गिरावट के बावजूद रिलायंस इंडस्ट्रीज भारत की सबसे मूल्यवान कंपनी बनी रही। इसके बाद क्रमशः एचडीएफसी बैंक, टीसीएस, भारती एयरटेल, आईसीआईसीआई बैंक, एसबीआई, इन्फोसिस, बजाज फाइनेंस, हिंदुस्तान यूनिलीवर और एलआईसी का स्थान रहा।

भारतीय अर्थव्यवस्था की रफ्तार में 6.5 फीसदी से अधिक वृद्धि का अनुमान

- वैश्विक अर्थव्यवस्थाओं की तुलना में भारत की स्थिति बेहतर

नई दिल्ली।

भारतीय अर्थव्यवस्था मजबूत गति से आगे बढ़ रही है और 2025-26 में इसके 6.5 प्रतिशत या उससे अधिक की वृद्धि दर प्राप्त करने में कोई बड़ी चुनौती नहीं होगी। यह बात भारतीय रिजर्व बैंक की मौद्रिक नीति समिति (एमपीसी) के सदस्य नागेश कुमार ने रविवार को एक साक्षात्कार में कही। उन्होंने कहा कि वैश्विक अर्थव्यवस्थाओं की तुलना में भारत की स्थिति बेहतर है। जबकि एक-तिहाई से अधिक देशों को ऋण संकट और धीमी आर्थिक गतिविधियों का सामना करना पड़ रहा है, भारत की वृद्धि घरेलू खपत और निवेश पर आधारित होने के कारण स्थिर बनी हुई है। कुमार ने उम्मीद जताई कि न केवल चालू वित्त वर्ष बल्कि अगले कुछ वर्षों में भी भारतीय अर्थव्यवस्था 6.5 से 7.5 प्रतिशत की दर से आगे बढ़ सकती है। पिछले वित्त वर्ष में भी जीडीपी वृद्धि दर 6.5 प्रतिशत रहने का अनुमान है। मुद्रास्फीति के बारे में उन्होंने कहा कि उपभोक्ता मूल्य सूचकांक आधारित मुद्रास्फीति जून में घटकर 2.1 प्रतिशत पर आ गई है, जो आरबीआई की सख्त मौद्रिक नीति का नतीजा है। हालांकि, आगे ब्याज दरों में कटौती मुद्रास्फीति और अन्य आर्थिक संकेतकों पर निर्भर करेगी। प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) में वृद्धि हुई है। 2024-25 में यह 81 अरब डॉलर तक पहुंच गया है। हालांकि, शुद्ध एफडीआई प्रवाह थोड़ा कम रहा क्योंकि भारत से बाहर भी निवेश बढ़ा है।

इस हफ्ते 100 से अधिक कंपनियां देंगी डिविडेंड

नई दिल्ली। अगर आप शेयर बाजार में निवेश करते हैं और डिविडेंड इनकम को पसंद करते हैं, तो आपके लिए यह हफ्ता बेहद खास रहने वाला है। 28 जुलाई से 1 अगस्त के बीच 100 से ज्यादा कंपनियां अपने निवेशकों को डिविडेंड देने जा रही हैं। डिविडेंड की राशि 0.07 से लेकर 512 प्रति शेयर तक हो सकती है, जो कंपनियों की वित्तीय स्थिति और लाभांश नीति पर आधारित है। इस लिस्ट में बड़ी और मिड-कैप कंपनियां शामिल हैं, जिनमें विप्रो, बोस्क, मारुति सुजुकी, आरईसी, क्रिसिल, डीएलएफ, हाकिंग्स कुकर्स, पीएनबी हाउसिंग और अपार इंडस्ट्रीज जैसी जानी-मानी कंपनियां शामिल हैं। खास बात यह है कि बोस्क 512, मारुति सुजुकी ने 135 और आयसर मोटर्स ने 70 प्रति शेयर का फाइनल डिविडेंड घोषित किया है। इसके अलावा विप्रो, एसआरएफ, केपीआईटी टेक्नोलाजी और श्याम मेटलिक्स जैसी कंपनियां अंतरिम डिविडेंड भी देने जा रही हैं। निवेशकों को यह ध्यान रखना होगा कि डिविडेंड पाने के लिए एक्स-डिविडेंड डेट से पहले शेयर खरीदना जरूरी है। एक्स-डिविडेंड डेट के बाद खरीदे गए शेयर पर डिविडेंड का लाभ नहीं मिलेगा।

एनएलसी इंडिया विदेशों से दुर्लभ खनिज खरीदने की तैयारी में

नई दिल्ली। सार्वजनिक क्षेत्र की नवरत्न कंपनी एनएलसी इंडिया लिमिटेड विदेशों से दुर्लभ खनिज की आपूर्ति सुनिश्चित करने की दिशा में सक्रिय हो गई है। कंपनी के एक वे रिष्ठ अे धिकारी ने बताया कि भारत सरकार के खान और कोयला मंत्रालय के निर्देश पर कंपनी ने अफ्रीकी देशों में निवेश की संभावनाएं तलाशनी शुरू कर दी हैं। एनएलसी ने माली में लिथियम खदानों और कांगो गणराज्य में तांबा और कोबाल्ट खनिज के लिए शुरुआती स्तर की बातचीत की है। उन्होंने बताया कि इन देशों में खनन से जुड़ी परियोजनाओं को लेकर इस महीने एक गैर-प्रकटीकरण समझौता होने की उम्मीद है। समझौते के बाद विस्तृत अध्ययन और आगे की रणनीति तय की जाएगी।

छोटी कंपनियों को राहत: सेबी ने ईएसएम निगरानी नियमों में किए बदलाव

नई दिल्ली। भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड (सेबी) और स्टॉक एक्सचेंजों ने 1,000 करोड़ रुपये से कम मार्केट कैप वाली कंपनियों के लिए इनहेंस्ड सर्वेलेंस मैकेनिज्म (ईएसएम) निगरानी ढांचे में अहम बदलाव किए हैं। यह संशोधित ढांचा 28 जुलाई 2025 से प्रभावी होगा, जिससे 28 कंपनियों को निगरानी सूची से बाहर निकलने का मौका मिल सकता है। हाल ही में हुई एक संयुक्त बैठक में सेबी और एक्सचेंजों ने यह निर्णय लिया। नए नियमों के तहत अब ईएसएम स्टेज 1 में किसी कंपनी को शामिल करने के लिए केवल पारंपरिक मानदंडों पर ही नहीं, बल्कि पिछले तीन महीनों में शेयर की कीमतों में लगातार बढ़ोतरी को भी आधार बनाया जाएगा। इसका उद्देश्य यह जांचना है कि क्या किसी शेयर में असामान्य रूप से निवेशकों की रुचि बढ़ रही है। इसके अलावा, स्टेज 1 से स्टेज 2 में स्थानांतरण के लिए अब प्राइस टू अर्निंग्स (पीई) रेशियो को भी जोड़ा गया है। अगर किसी कंपनी का पीई रेशियो निफ्टी 500 इंडेक्स के औसत से दोगुना या अधिक है, तो उसे स्टेज 2 में ले जाया जा सकता है।

कंपनियों के तिमाही नतीजों, फेडरल रिजर्व के ब्याज दर से तय होगी बाजार की दिशा

- वैश्विक बाजार के रुझान भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे

नई दिल्ली।

स्थानीय शेयर बाजार में इस सप्ताह भारी उतार-चढ़ाव की संभावना है। विशेषज्ञों के अनुसार, बाजार की दिशा कई अहम कारकों पर निर्भर करेगी, जिनमें प्रमुख कंपनियों के पहली तिमाही के नतीजे, अमेरिकी फेडरल रिजर्व के ब्याज दर निर्णय और विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों (एफपीआई) की गतिविधियां शामिल हैं। इसके अलावा औद्योगिक उत्पादन, विनिर्माण पीएमआई, मासिक वाहन बिक्री के आंकड़े और वैश्विक बाजार के रुझान भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे। विशेष रूप से अमेरिकी प्रशासन द्वारा भारत सहित कई देशों पर लगाए गए जवाबी शुल्क पर एक अगस्त को लगी रोक समाप्त हो रही है, जो बाजार की नज़र इस पर भी रहेगी। इसके साथ ही थाइलैंड और कंबोडिया के बीच भू-राजनीतिक तनाव भी निवेशकों के लिए चिंता का विषय बना हुआ है। बाजार के जानकारों ने बताया कि जुलाई महीने के डेरिवेटिव अनुबंधों के निपटान के कारण बाजार में उतार-चढ़ाव बना रहेगा। उन्होंने कहा कि इस सप्ताह इंडसइंड बैंक, एशियन पेंट्स, एनटीपीसी, टाटा स्टील, हिंदुस्तान यूनिलीवर, महिंद्रा एंड महिंद्रा, मारुति सुजुकी, सन फार्मा और आईटीसी जैसी बड़ी कंपनियों के तिमाही नतीजे सामने आएंगे, जो बाजार की मजबूती और कंपनियों के प्रदर्शन का संकेत देंगे। एक बाजार के वरिष्ठ तकनीकी विश्लेषक ने कहा कि इन नतीजों

से यह स्पष्ट होगा कि बाजार को भविष्य में समर्थन मिलेगा या नहीं। उन्होंने बताया कि निवेशक विदेशी कोषों के प्रवाह और भारत-अमेरिका व्यापार वार्ता पर भी ध्यान देंगे। पिछले सप्ताह सेंसेक्स में 294 अंक और निफ्टी में 131 अंक की गिरावट आई है। एक कंपनी के शोध प्रमुख ने कहा कि भारत-अमेरिका व्यापार समझौते की अनिश्चितता, मिले-जुले तिमाही नतीजे और बढ़ती एफआईआई निकासी के कारण बाजार कमजोर रहेगा। इस प्रकार इस सप्ताह निवेशकों के लिए सतर्कता और सूझ-बूझ के साथ बाजार की गतिविधियों को समझना बेहद जरूरी है।

फेड बैठक से पहले ट्रंप ने पॉवेल पर बढ़ाया दबाव, ब्याज दरों पर रहेगी सबकी नजर

- फेड की बैठक के साथ-साथ अमेरिका सरकार भी तीन बड़े आर्थिक आंकड़े जारी करेगी

वाशिंगटन। अमेरिका के केंद्रीय बैंक फेडरल रिजर्व के चेयरमैन जेरोम पॉवेल और उनके सहयोगी मंगलवार से दो दिवसीय बैठक में शामिल होंगे। इस बैठक में ब्याज दरों को लेकर फैसला लिया जाएगा। यह बैठक ऐसे वक्त हो रही है जब अमेरिका पर राजनीतिक दबाव बढ़ रहा है, व्यापार नीतियों में बदलाव हो रहे हैं और आर्थिक संकेतों में उतार-चढ़ाव देखने को मिल रहा है। इस हफ्ते खास बात यह है कि फेड की बैठक के साथ-साथ अमेरिका सरकार भी तीन बड़े आर्थिक आंकड़े जारी करेगी, जीडीपी, रोजगार और महंगाई से जुड़ा आंकड़ा, जिसे फेड खास तौर पर देखता है। ज्यादातर जानकारों को उम्मीद है कि फेड इस बार भी ब्याज दरों में कोई बदलाव नहीं करेगा और उन्हें स्थिर रखेगा। अनुमान जताया जा रहा है कि अप्रैल-जून तिमाही में अमेरिका की आर्थिक गतिविधियों में बढ़त देखने को मिल सकती है, जिसकी मुख्य वजह व्यापार घाटे में तेज गिरावट हो सकती है। हालांकि, जुलाई महीने में रोजगार की रफ्तार थोड़ी धीमी पड़ सकती है। वहीं, जून महीने की महंगाई दर में मामूली तेजी आने के संकेत हैं। अमेरिका की जीडीपी की सरकारी अनुमान रिपोर्ट में इस तिमाही के लिए सालाना आधार पर 2.4 फीसदी की वृद्धि दिखने की संभावना है, जबकि जनवरी-मार्च तिमाही में अर्थव्यवस्था में 0.5 फीसदी की गिरावट दर्ज की गई थी। हालांकि, बुधवार को जारी होने वाली रिपोर्ट से साफ हो सकता है कि घरेलू मांग और कारोबारी निवेश में अभी भी ज्यादा तेजी नहीं आई है। एक सर्वे में विश्लेषकों का अनुमान है कि इस तिमाही में उपभोक्ता खर्च केवल 1.5 फीसदी बढ़ेगा, जो कोविड-19 महामारी की शुरुआत के बाद से लगातार दो तिमाहियों में सबसे कमजोर प्रदर्शन हो सकता है। साथ ही कमजोर हाउसिंग मार्केट का असर भी दूसरी तिमाही की आर्थिक गतिविधियों पर पड़ा है। हफ्ते के अंत में आने वाली जुलाई की जॉब रिपोर्ट से संकेत मिल सकता है कि कंपनियां अब नई भर्तियों को लेकर अधिक सावधानी बरत रही हैं।

बीते सप्ताह घरेलू तेल-तिलहन बाजार में हल्की बढ़त रही

- मूंगफली तेल-तिलहन के दाम स्थिर रहे, सरकार से नीतिगत सुधार की मांग

नई दिल्ली।

त्योहारों के मौसम के करीब आने से घरेलू तेल-तिलहन बाजार में पिछले सप्ताह सरसों, सोयाबीन, कच्चा पामतेल (सीपीओ), पामोलीन और बिनौला तेल के दामों में मामूली सुधार देखा गया। वहीं मूंगफली तेल-तिलहन के दाम स्थिर रहे, जो न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) से करीब 16-17 प्रतिशत नीचे थोक भाव पर कारोबार कर रहे हैं। इस वजह से मूंगफली तेल का व्यापार अपेक्षाकृत धीमा रहा। विदेशी बाजारों में खाद्य तेलों के दामों में सुधार और रुपये के कमजोर होने से भी घरेलू बाजार पर प्रभाव पड़ा है। आयातक आर्थिक कठिनाइयों के कारण सोयाबीन डीगम तेल को लागत से भी कम दाम पर बेचने को मजबूर हैं। इससे तेल उद्योग की स्थिति कमजोर हुई है। आने वाली खरीफ फसल के बीच सरकार से इस स्थिति को लेकर गंभीर नीतिगत कदम उठाने की मांग की गई है। विशेषज्ञों का कहना है कि यदि पहले के कम एमएसपी वाले सोयाबीन और मूंगफली तेल की बिक्री में दिक्कत हो रही है, तो अधिक एमएसपी वाले आने वाले खरीफ फसल के तेलों का बाजार बनाना चुनौतीपूर्ण होगा। इसीलिए देशी तेल-तिलहन उत्पादन को बढ़ावा देना जरूरी है। साथ ही सरसों तेल के ऊंचे खुदरा दामों को नियंत्रित करने के लिए राशन दुकानों के माध्यम से वितरण पर भी विचार होना चाहिए। सरकार को सोयाबीन, मूंगफली और सूरजमुखी जैसे अन्य तेलों के खुदरा और थोक दामों की पारदर्शिता के लिए एक सरकारी वेब पोर्टल बनाने का सुझाव दिया गया है। इसके अलावा, कपास उत्पादन बढ़ाने और मिलावटी बिनौला खल के कारोबार पर रोक लगाने की भी सिफारिश की गई है, क्योंकि इससे किसानों को नुकसान हो रहा है। पिछले सप्ताह सरसों दाने के थोक भाव में 25 रुपये

की बढ़त के साथ 7,375-7,425 रुपये प्रति क्विंटल पर पहुंच गया। सोयाबीन के दामों में भी 150 रुपये तक सुधार दर्ज किया गया। सीपीओ, पामोलीन और बिनौला तेल के भावों में भी हल्की बढ़त रही। कुल मिलाकर घरेलू तेल-तिलहन बाजार में सुधार के बीच सरकार को इस क्षेत्र में आत्मनिर्भरता और स्थिरता के लिए प्रभावी कदम उठाने की आवश्यकता है।

कोटक महिंद्रा बैंक का पहली तिमाही में मुनाफा घटा

नई दिल्ली।

कोटक महिंद्रा बैंक ने वित्त वर्ष 2025-26 की पहली तिमाही (अप्रैल-जून) में 40 फीसदी की गिरावट के साथ 4,472.18 करोड़ का समेकित शुद्ध मुनाफा दर्ज किया। पिछले साल इसी अवधि में बैंक ने 7,448.16 करोड़ का मुनाफा कमाया था। इस गिरावट का प्रमुख कारण पिछले साल कोटक जनरल इंश्योरेंस (केजीआई) में हिस्सेदारी बेचने से प्राप्त 3,013 करोड़ का एकमुश्त लाभ था, जो इस तिमाही में नहीं मिला। हालांकि, यदि केजीआई सौदे को अलग कर देखें, तो बैंक का समेकित मुनाफा मामूली रूप से 1 फीसदी बढ़कर 4,472 करोड़ रहा, जो पिछले साल 4,435 करोड़ था। बैंक के स्टैंडअलोन नतीजों में भी कमजोरी दिखी। केजीआई सौदे को हटाकर देखा जाए तो शुद्ध मुनाफा 6.8 फीसदी घटकर 3,282 करोड़ रहा। शुद्ध ब्याज आय 6 फीसदी बढ़कर 7,259 करोड़ रही, लेकिन शुद्ध ब्याज मार्जिन घटकर 4.65 फीसदी हो गया, जो पिछले साल 5.02 फीसदी था। एनपीए और प्रावधानों में तेज़ बढ़ोतरी चिंता का कारण है। इस तिमाही में नए स्लिपेज 1,812 करोड़ रहे, जो साल-दर-साल 33 फीसदी ज्यादा हैं। प्रावधान 100 फीसदी से अधिक बढ़कर 1,208 करोड़ हो गए। बैंक का सकल एनपीए 1.48 फीसदी और शुद्ध एनपीए 0.34 फीसदी रहा।

एनएसडीएल का आईपीओ 30 जुलाई से खुलेगा

मुंबई। नेशनल सिक्योरिटीज डिपॉजिटरी लिमिटेड (एनएसडीएल) ने अपने 4,011 करोड़ के आरंभिक सार्वजनिक निर्गम (आईपीओ) के लिए 760 से 800 प्रति शेयर का मूल्य दायरा तय किया है। यह आईपीओ 30 जुलाई से 1 अगस्त 2025 तक खुला रहेगा, जबकि एंकर निवेशक 29 जुलाई को ही बोली लगा सकेंगे। आईपीओ पूरी तरह से ऑफर फॉर सेल पर आधारित है, जिसमें 5.01 करोड़ शेयरों की बिक्री की जाएगी। इससे कंपनी को कोई नया पूंजी निवेश नहीं मिलेगा। शेयर बेचने वालों में एनएसई, एसबीआई, एचडीएफसी बैंक, आईडीबीआई बैंक, यूनियन बैंक शामिल हैं। इस निर्गम के प्रमुख प्रबंधकों में आईसीआईसीआई सिक्योरिटीज, एक्सिस कैपिटल, एचएसबीसी और एसबीआई कैपिटल मार्केट्स शामिल हैं। उदाहरण के लिए, एनएसडीएल में शुरुआती निवेशकों को काफी लाभ हो सकता है, जबकि बाद के निवेशकों को नुकसान उठाना पड़ सकता है। एनएसडीएल में 26 प्रतिशत हिस्सेदारी रखने वाले आईडीबीआई बैंक ने औसतन 2 रुपए प्रति शेयर की लागत पर अपनी हिस्सेदारी हासिल की थी, जो 39,000 प्रतिशत से अधिक के आश्चर्यजनक रिटर्न में तब्दील हो गई; इसकी हिस्सेदारी का मूल्य अब 4,176 करोड़ रुपए है, जो शुरुआती निवेश 10.44 करोड़ रुपए से अधिक है।

तेज प्रताप यादव महुआ से लड़ेंगे निर्दलीय चुनाव

कहाः इस बार बनाऊंगा अपनी अलग पहचान...

पटना। राष्ट्रीय जनता दल से निष्कासित पूर्व मंत्री तेज प्रताप यादव ने आगामी बिहार विधानसभा चुनाव में वैशाली जिले की महुआ विधानसभा सीट से निर्दलीय उम्मीदवार के तौर पर चुनाव लड़ने का एलान किया है। शनिवार शाम को पटना स्थित अपने आवास पर पत्रकारों से बातचीत में तेज प्रताप ने यह स्पष्ट किया कि वे इस बार अपनी नई राजनीतिक पारी की शुरूआत महुआ से करेंगे। तेज प्रताप यादव ने कहा कि हां, मैं इस बार महुआ विधानसभा सीट से निर्दलीय उम्मीदवार के रूप में चुनाव लड़ूंगा। मेरे विरोधियों को अब खुजली होने लगी होगी। उन्होंने दावा किया कि आम लोगों का समर्थन उनके साथ है और ह्रटीम तेज प्रताप यादवह्व नामक सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म के जरिए बड़ी संख्या में लोग उनके साथ जुड़ चुके हैं। तेज प्रताप ने यह भी कहा कि वे उन लोगों के साथ खड़े होंगे जो युवाओं, रोजगार, शिक्षा और स्वास्थ्य की बात करेंगे। उन्होंने मुख्यमंत्री नीतीश कुमार पर निशाना साधते हुए कहा कि मैं आश्वस्त हूं कि चाचा (नीतीश कुमार) इस बार मुख्यमंत्री नहीं बन पाएंगे। तेज प्रताप वर्तमान में समस्तीपुर जिले की हसनपुर सीट से विधायक हैं। लेकिन उन्होंने अब 2015 में अपनी राजनीतिक पारी की शुरूआत जिस सीट महुआ से की थी, वहीं से वापसी का फैसला किया है। गौरतलब है कि महुआ से वे 2015 में पहली बार विधायक बने थे और राज्य सरकार में मंत्री भी रहे। लेकिन 2020 के विधानसभा चुनाव में उन्होंने हसनपुर से चुनाव लड़ा और जीत हासिल की थी। तेज प्रताप यादव को उनके पिता और राजद के संस्थापक लालू प्रसाद यादव ने 25 मई 2024 को पार्टी से छह साल के लिए निष्कासित कर दिया था। यह फैसला तेज प्रताप द्वारा सोशल मीडिया पर एक महिला से संबंध स्वीकार करने की कथित पोस्ट के बाद लिया गया था, जिसे बाद में उन्होंने ह्रहैकिंगह्व का मामला बताकर हटा लिया था। लालू यादव ने सार्वजनिक रूप से तेज प्रताप के गैर-जिम्मेदाराना व्यवहार को कारण बताते हुए उन्हें पार्टी से बाहर का रास्ता दिखाया था। निष्कासन के कुछ दिनों बाद तेज प्रताप ने सोशल मीडिया पर यह भी आरोप लगाया कि उन्हें और उनके छोटे भाई तेजस्वी यादव के बीच साजिशन दूरी पैदा की गई। उन्होंने ह्रजयचंदह्व शब्द का इस्तेमाल करते हुए पार्टी के अंदरूनी लोगों को 'विश्वासघाती' बताया था। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि तेज प्रताप का महुआ से चुनाव लड़ना राजद के लिए भी एक बड़ी चुनौती साबित हो सकता है, खासकर उस क्षेत्र में जहां पार्टी का परंपरागत जनाधार रहा है। तेज प्रताप यादव बिहार के दो पूर्व मुख्यमंत्रियों लालू प्रसाद यादव और राबड़ी देवी के बेटे हैं। वे राजनीति में सक्रिय चार भाई-बहनों में से एक हैं। उन्होंने 2015 में अपने राजनीतिक करियर की शुरूआत की थी और राज्य सरकार में स्वास्थ्य और पर्यावरण मंत्री के तौर पर काम कर चुके हैं।

तेजस्वी बोले- बिहार में अपराधी विजय और सम्राट हो चुके

नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव ने बिहार में बढ़ते क्राइम को लेकर सरकार पर निशाना साधा। तेजस्वी ने कहा, 'बिहार में अपराध विजय और सम्राट बन चुके हैं। उन्होंने केंद्रीय मंत्री चिराग पासवान पर भी सवाल उठाए और पूछा, 'केंद्रीय मंत्री जैसे प्रभावशाली व्यक्ति खुद को इतना 'कमजोर' क्यों समझते हैं।' दरअसल, चिराग ने शनिवार को बिहार सरकार पर सवाल उठाए। बढ़ते क्राइम पर कहा, 'मुझे अफसोस है कि मैं ऐसी सरकार का समर्थन कर रहा हूं, जहां पर अपराध पूरी तरह से बेलगाम हो चुका है। इस पर नियंत्रण पाना बहुत जरूरी है।' चिराग के इस बयान पर तेजस्वी यादव ने उन्हें कटघरे में खड़ा किया है। एक इंटरव्यू में तेजस्वी ने कहा, 'सिर्फ बोलने या ऐसे बयान देने से कुछ नहीं होगा। मुझे समझ नहीं आता उनके हनुमान बने रहने की क्या मजबूरी है।' 'जिनके पिता की तस्वीरों को तोड़ा गया। जिनसे उनका घर छीना गया। जिनकी पार्टी में फूट डलवाया गया। पार्टी का सिंबल 'बंगला' छीन लिया गया। फिर भी अगर वो हनुमान हैं, तो आखिर ऐसी क्या मजबूरी है।' सरकार पर सवाल उठाने के कारण को लेकर तेजस्वी ने कहा, 'नीतीश कुमार से सब ठीक नहीं चल रहा होगा, इसलिए ऐसी बातें कर रहे हैं।

मुख्यमंत्री खुद बनना है, लेकिन जिगर नहीं है। अगर सीएम बनना चाहते हैं तो इधर-उधर की बात क्यों कर रहे हैं।' 'ऐसे बयान से खुद को कमजोर साबित कर रहे हैं। आप गठबंधन में भी लेकिन आप कुछ नहीं कर सकते।'

संक्षिप्त डायरी

पूर्वी चंपारण में वार्ड सदस्य के बेटे की हत्या, पेड़ से लटका मिला शव

मोतिहारी। पूर्वी चंपारण में एक वार्ड सदस्य के पुत्र की हत्या से पूरे इलाके में सनसनी फैल गई। युवक का शव आम के बगीचे में पेड़ से लटका मिला, जिसे सुबह खेत में काम करने गए एक किसान ने देखा। शोर मचाने पर ग्रामीणों की भीड़ वहां पहुंच गई। भीड़ द्वारा दी गई सूचना पर पकड़ीदयाल थाना क्षेत्र की पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। पुलिस इस मामले में दो लोगों को हिरासत में लेकर पूछताछ कर रही है। घटना जिले के पूर्वी चंपारण जिले के पकड़ीदयाल थाना क्षेत्र के श्रीपुर नवादा गांव की है। वार्ड संख्या चार के वार्ड सदस्य जग्गू भगत के पुत्र उदय कुमार का शव आज सुबह गांव के आम बगीचे में पेड़ से लटका हुआ मिला। सुबह-सुबह खेत पर काम करने गए एक किसान ने सबसे पहले शव को देखा। शोर मचाने पर सैकड़ों ग्रामीण मौके पर जुट गए। मृत की मां सोनी देवी ने पुलिस को दिए बताया कि शनिवार शाम को उसका दोस्त अपाची बाइक से बुलाकर ले गया था। उन्होंने आरोप लगाया कि दोस्त ने खिला-पिलाकर रात में उदय की हत्या कर दी और शव को पेड़ से लटका दिया। घटना की जानकारी मिलते ही पकड़ीदयाल थानाध्यक्ष अशोक शाह पुलिस बल के साथ मौके पर पहुंचे और जांच शुरू की। पुलिस ने इस मामले में दो लोगों को हिरासत में लेकर पूछताछ प्रारंभ कर दी है।

नीतीश बोले- सफाई कर्मचारी आयोग गठित होगा, अध्यक्ष-उपाध्यक्ष के अलावा पांच सदस्य

पटना। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने पत्रकारों के पेंशन की घोषणा के बाद अब बिहार राज्य सफाई कर्मचारी आयोग के गठन करने की घोषणा की है। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने घोषणा करते हुए कहा है कि मुझे यह बताते हुए प्रसन्नता हो रही है कि बिहार राज्य में सफाई कर्मचारियों के अधिकारों एवं हितों की सुरक्षा, कल्याण, पुनर्वास, सामाजिक उत्थान, शिकायतों के निवारण तथा विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं की निगरानी सुनिश्चित करने के लिए मैंने बिहार राज्य सफाई कर्मचारी आयोग के गठन का विभाग को निर्देश दिया है। सीएम नीतीश कुमार ने अपने एक्स हैंडल पर लिखा, यह आयोग सफाई कर्मियों के हितों से संबंधित सुझाव, उनके अधिकारों की सुरक्षा के संबंध में सरकार को सुझाव देगा तथा सफाई कार्यों में लगे लोगों से संबंधित कल्याणकारी योजनाओं की समीक्षा कर उसे लागू करवाने हेतु समुचित कार्रवाई करेगा। आयोग की संरचना के संबंध में मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने कहा, बिहार राज्य सफाई कर्मचारी आयोग में एक अध्यक्ष, एक उपाध्यक्ष एवं पांच सदस्य होंगे, जिनमें एक महिला/ट्रांसजेंडर होंगे। यह आयोग राज्य में सफाई कार्यों से जुड़े समाज के वंचित वर्ग के लोगों को मुख्य धारा में जोड़ने तथा उनके सामाजिक एवं आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

राघोपुर में जमकर चली गोलियां, जमीन विवाद में दो पक्ष भिड़े, जांच में जुटी पुलिस

वैशाली। जिला के राघोपुर थाना क्षेत्र अंतर्गत मिजार्पुर गांव मे शनिवार की रात जमीनी विवाद मे दो पक्षों के बीच आधा दर्जन से अधिक राउंड फायरिंग हुई। इस घटना में दो युवक गोली लगने से घायल हो गये। बताया गया है कि दरवाजे पर खड़े एक युवक को पैर में गोली लगी है। वही दूसरे युवक के हाथ मे गोली लगी है। घायल युवकों में रामनाथ राय के पुत्र प्रदुम्न कुमार और दूसरे पक्ष से लक्ष्मण राय के पुत्र जितेंद्र कुमार (20) है। प्रदुम कुमार की दाहिना पैर में गोली लगी है। वही जितेंद्र कुमार की हाथ में गोली लगी है। घटना के बाद परिजनों ने घायल युवक को इलाज के लिए पीएचसी फतेहपुर लाया। जहा प्राथमिक उपचार के बाद डॉक्टर ने घायल प्रदुम्न कुमार को एन एम सी एच रेफर कर दिया। घटना के संबंध में स्थानीय लोगों ने बताया कि लक्ष्मण राय एवं सुरेंद्र राय चनरदीप राय के बीच जमीनी विवाद था। उसी विवाद को लेकर शनिवार शाम दोनों पक्ष मे गाली गलौज होने लगा। उसी झगडा को देखने के लिए प्रदुम्न कुमार दरवाजे पर खड़ा हो गया। इसी दौरान विकास कुमार, जयनाथ कुमार पिस्टल से फायरिंग करने लगा,जिसमें प्रदुमन के दाहिने पैर मे गोली लग गई। वही दूसरे पक्ष के जितेंद्र को दाहिने हाथ मे गोली लगी है। घटना मे घायल युवक प्रदुम्न ने बताया कि उसका झगडा से कोई लेना-देना नही है। वह अपने दरवाजे पर खड़ा था। इसी दौरान गोली मार दिया। इस संबंध मे घायल के परिजन संजीत कुमार ने बताया कि पूर्व विवाद को लेकर गोलीबारी की गई है। उसने बताया कि प्रदुम्न अपने दरवाजे पर खड़ा था। इसी दौरान विकास, जयनाथ सब गोली चलाने लगा।

मनियारी बाजार फायरिंग कांड का पुलिस ने किया खुलासा

कुख्यात अणुव्रत उर्फ विक्कू समेत तीन गिरफ्तार, दो फरार

मुजफ्फरपुर। मनियारी थाना क्षेत्र के माधोपुर सुस्ता बाजार में हुई फायरिंग की घटना का पुलिस ने उद्भेदन कर लिया है। इस मामले में पुलिस ने अंतरजिला गिरोह के तीन सदस्यों को गिरफ्तार किया है, जिनमें एक कुख्यात अपराधी अणुव्रत रवि उर्फ विक्कू कुमार भी शामिल है। विक्कू पर हत्या, लूट, डकैती और चोरी जैसे करीब दर्जनभर संगीन मामले पहले से दर्ज हैं। उसकी उम्र मात्र 20 साल है, लेकिन वह लंबे समय से पुलिस के रडार पर था। उसकी गिरफ्तारी के लिए पुलिस कई दिनों से प्रयासरत थी।

गिरफ्तार तीनों अपराधियों के पास से एक देशी पिस्टल और तीन जिंदा कारतूस बरामद किए गए हैं। साथ ही, चोरी की एक अपाचे बाइक भी जब्त की गई है, जिसके इंजन नंबर से छेड़छाड़ की गई थी। पुलिस ने तीनों को न्यायिक हिरासत में भेज दिया है। पुलिस के मुताबिक, घटना दो दिन पूर्व देर शाम माधोपुर सुस्ता गोलंबर के पास हुई थी। दो बाइक पर सवार पांच अपराधियों ने बाजार में पहुंचकर फायरिंग की थी, जिससे व्यापारी और आमजन में दहशत फैल गई थी।

घटना की तस्वीरें सीसीटीवी कैमरे में कैद हो गई थीं। फायरिंग के बाद इलाके में अफरा-तफरी मच गई थी। सूचना मिलते ही मनियारी थानाध्यक्ष देवव्रत कुमार दल-बल के साथ मौके पर पहुंचे और मामले की जांच शुरू की गई। तकनीकी साक्ष्यों और सीसीटीवी फुटेज के आधार पर पुलिस ने पहले माधोपुर सुस्ता गांव निवासी अणुव्रत रवि उर्फ विक्कू कुमार को गिरफ्तार किया। उसकी निशानदेही पर सदर थाना क्षेत्र के सुस्ता गांव से संतोष कुमार, पिता- दिनेश राय को पकड़ा गया। संतोष के घर से वह अपाचे बाइक भी बरामद की गई, जो घटना में प्रयुक्त थी। इसके बाद दोनों की निशानदेही पर पुलिस ने मझौली धर्मदास गांव (सदर थाना क्षेत्र) निवासी प्रमोद कुमार, पिता- अशर्फी राय को गिरफ्तार किया। वहीं, गिरोह के दो अन्य सदस्य मनीष यादव और अमन अब भी फरार हैं। पुलिस उनकी गिरफ्तारी के लिए संभावित ठिकानों पर लगातार छापेमारी कर रही है। एसडीपीओ (पश्चिमी-2) अनिमेष चंद्र जानी ने बताया कि यह गिरोह युवाओं का एक नया आपराधिक नेटवर्क खड़ा कर रहा था और क्षेत्र में दहशत फैलाने के उद्देश्य से खुलेआम फायरिंग की गई थी। गिरफ्तार आरोपियों के खिलाफ विभिन्न थानों में कई गंभीर मामले दर्ज हैं। पुलिस की कार्रवाई आगे भी जारी रहेगी।

बक्सर के सांसद सुधाकर सिंह को मिली नई जिम्मेदारी

बक्सर। सांसद सुधाकर सिंह को राष्ट्रीय जनता दल (राजद) के किसान प्रकोष्ठ का राष्ट्रीय अध्यक्ष नियुक्त किया गया है। पार्टी अध्यक्ष लालू प्रसाद यादव द्वारा जारी अधिसूचना में यह नियुक्ति की गई है। सुधाकर सिंह अपने बेबाक बयानों और किसान आंदोलन तथा कृषि नीति पर सख्त रुख के लिए जाने जाते हैं। बक्सर पहुंचने पर उनका जगह-जगह स्वागत किया जा रहा है। उन्हें लगातार बधाइयां और शुभकामनाएं मिल रही हैं। नई जिम्मेदारी मिलने के बाद सुधाकर सिंह ने कहा, ÷पार्टी ने हम पर जो भरोसा जताया है, उसे हम पूरी तरह निभाएंगे। हमारा लक्ष्य भारत भर के किसान संगठनों से समन्वय स्थापित करना है। हम किसानों की समस्याओं और मांगों को राष्ट्रीय स्तर पर उठाएंगे। राजद अध्यक्ष लालू प्रसाद यादव ने इस नियुक्ति को संगठनात्मक ढांचे को मजबूत करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम बताया है। पार्टी ने अपने संगठन को मजबूत करने और विभिन्न वर्गों तक अपनी पहुंच बढ़ाने के लिए कई प्रकोष्ठों में नियुक्तियां की हैं। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि यह नियुक्ति बिहार की राजनीति में नई हलचल पैदा करेगी। सुधाकर सिंह को राष्ट्रीय स्तर पर जिम्मेदारी मिलने से राजद को ग्रामीण और किसान वर्ग में अपनी पकड़ मजबूत करने का अवसर मिलेगा। आने वाले चुनावी माहौल में पार्टी किसानों के मुद्दों को प्रमुखता से उठा सकती है। सुधाकर सिंह की नियुक्ति से संकेत मिलता है कि आने वाले दिनों में किसान संगठनों के सहयोग से बड़े पैमाने पर कार्यक्रम आयोजित किए जा सकते हैं। बक्सर समेत पूरे बिहार के किसान वर्ग में इस खबर को लेकर उत्साह है और स्थानीय स्तर पर भी राजद कार्यकर्ता इसे पार्टी की सक्रियता का नया अध्याय मान रहे हैं।

मोतिहारीः पड़ोसी ने गला दबाकर की युवक की हत्या

मोतिहारी। छतौनी थाना क्षेत्र के बड़ा बरियारपुर वार्ड नंबर 44 में युवक की गला दबाकर हत्या का मामला सामने आया है। मृतक की पहचान मनोज पासवान के बेटे संटु कुमार(24) के रूप में हुई है। मनोज पासवान बाहर रहकर मजदूरी करता है। संटु खुद भी दिल्ली में रहकर किसी निजी कंपनी में काम करता था। संटु तीन दिन पहले ही दिल्ली से अपने घर आया था। बताया जाता है कि वार्ड नंबर 44 का ही एक युवक नीतीश कुमार शनिवार की रात शराब के नशे में धुत होकर संटु कुमार के दरवाजे पर पहुंचा। वहां पहुंचकर नीतीश ने पहले संटु से गाली-गलौज शुरू किया। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, नीतीश कुमार नशे में धुत होकर संटु के साथ गाली-गलौज करने लगा। गाली-गलौज करते हुए नीतीश कुमार जबरदस्ती संटु के घर में घुसने की कोशिश करने लगा। उसने संटु की मां पूनम देवी का बाल पकड़कर पिटाई शुरू कर दी। संटु ने जब इसका विरोध किया, तो नीतीश और भड़क उठा। इसी बीच दोनों में धक्का-मुक्की शुरू हो गई। बात इतनी बिगड़ गई कि नीतीश कुमार ने आवेश में आकर संटु की गर्दन दबा दी। यह सब कुछ इतनी तेजी से हुआ कि कोई बीच-बचाव तक नहीं कर सका। गला दबाए जाने के बाद संटु बेहोश हो गया। परिजनों ने उसे तुरंत पास के अस्पताल ले जाने की कोशिश की। लेकिन तब तक काफी देर हो चुकी थी। डॉक्टरों ने जांच के बाद उसे मृत घोषित कर दिया। संटु की मौत की खबर मिलते ही उसके घर में कोहराम मच गया। मां का रो-रोकर हालत बेहाल है। संटु अपने परिवार का एक ही सहारा था। वह पढ़ाई छोड़कर काम पर इसलिए गया था ताकि घर की आर्थिक स्थिति सुधर सके। पिता मनोज पासवान को घटना की जानकारी मिलते ही वह काम छोड़कर तुरंत गांव लौटने की तैयारी में हैं। पुलिस मामले की जांच में जुट गई है और आरोपी की तलाश जारी है। आरोपी घटना के बाद से फरार है। घटना की सूचना मिलते ही छतौनी थाना की पुलिस मौके पर पहुंची और शव को कब्जे में लेकर पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया।

राज्यपाल आरिफ मोहम्मद खान ने शहीद शिवशंकर गुप्ता के परिवार को किया सम्मानित

पटना। कारगिल विजय दिवस पर शनिवार को पटना में 'द हिंदू फाउंडेशन, नागपुर' द्वारा आयोजित सम्मान समारोह में औरंगाबाद के रफीगंज के बंचर गांव निवासी कारगिल शहीद शिवशंकर गुप्ता के परिवार को राज्यपाल आरिफ मोहम्मद खान ने सम्मानित किया। इस मौके पर उप मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी, पूर्व उप मुख्यमंत्री तारकिशोर प्रसाद, आरएसएस के क्षेत्रीय संगठन मंत्री नागेंद्र नाथ त्रिपाठी, पथ निर्माण मंत्री नितिन नवीन, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के उत्तर पूर्व क्षेत्र के क्षेत्र कार्यवाह मोहन सिंह एवं भाजपा के बिहार प्रदेश संगठन मंत्री भिखूभाई दलसानिया आदि मौजूद रहे। कार्यक्रम में राज्यपाल आरिफ मोहम्मद खान ने शहीद शिवशंकर गुप्ता की पत्नी रेखा देवी एवं पुत्र राहुल कुमार को अंग वस्त्र एवं प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया। इस दौरान कारगिल शहीद शिवशंकर गुप्ता के पुत्र राहुल कुमार ने राज्यपाल एवं उप मुख्यमंत्री को ज्ञापन देते हुए कहा कि सरकार ने कारगिल शहीद के परिजनों को नौकरी देने की घोषणा की थी, लेकिन अबतक उनके परिवार को नौकरी नहीं मिली है। उनका आग्रह है कि उनके परिवार के एक सदस्य को सरकारी नौकरी दी जाए। कार्यक्रम के आरंभ में अतिथियों ने कारगिल के अमर शहीदों के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित कर उन्हे नमन किया। कार्यक्रम में वक्ताओं ने कहा कि कारगिल युद्ध में शिवशंकर गुप्ता बहादुरी के साथ शहीद हुए। अमर शहीद शिवशंकर गुप्ता का समर्पण, त्याग, बलिदान और कुबार्नी औरंगाबाद जिले के इतिहास में ज्योतिर्गमय प्रकाश की तरह चमकता रहेगा। ऐसे बहादुर सपूत के प्रति हमलोग हजार बार नतमस्तक हैं, जिन्होंने देश की अस्मिता की रक्षा के लिए कारगिल के युद्ध में शहादत दी। औरंगाबाद के रफीगंज प्रखंड के बंचर गांव निवासी नंदलाल गुप्ता और पूनम देवी के पुत्र शिवशंकर गुप्ता कारगिल युद्ध से ढाई साल पहले 28 अक्टूबर 1996 को सेना में भर्ती हुए थे। वह बिहार रेजीमेंट के पहली बटालियन में सिपाही थे। यह वही रेजीमेंट है, जिसने दुश्मनों पर सबसे पहले हमला किया था और यहीं से कारगिल युद्ध की शुरूआत हुई थी। इस युद्ध में बिहार रेजिमेंट की बटालियन के सिपाहियों और अधिकारियों ने सबसे पहले शहादत दी थी। इसमें सिपाही शिवशंकर गुप्ता भी शामिल थे। जिस वक्त दुश्मनों ने बिहार रेजीमेंट की बटालियन पर हमला किया था, उस समय अग्रिम पंक्ति में लांस नायक गणेश प्रसाद यादव थे। दुश्मनों की गोलियों से वह शहीद हो गए थे। उस समय शिवशंकर भी वहां मौजूद थे। उन्होंने गणेश यादव के पार्थिव शरीर को लाना चाहा। वह साथी सैनिकों के साथ गणेश यादव का शव लाने के लिए आगे बढ़े। 14230 फुट ऊंची पथरीली व बर्फीली पहाड़ी पर पहुंच कर उन्होंने देखा कि कंपनी कमांडर लांस नायक का शव दुश्मन के मांद के पास पड़ा है।

श्रावण मास पर रुद्र के माहात्म्य

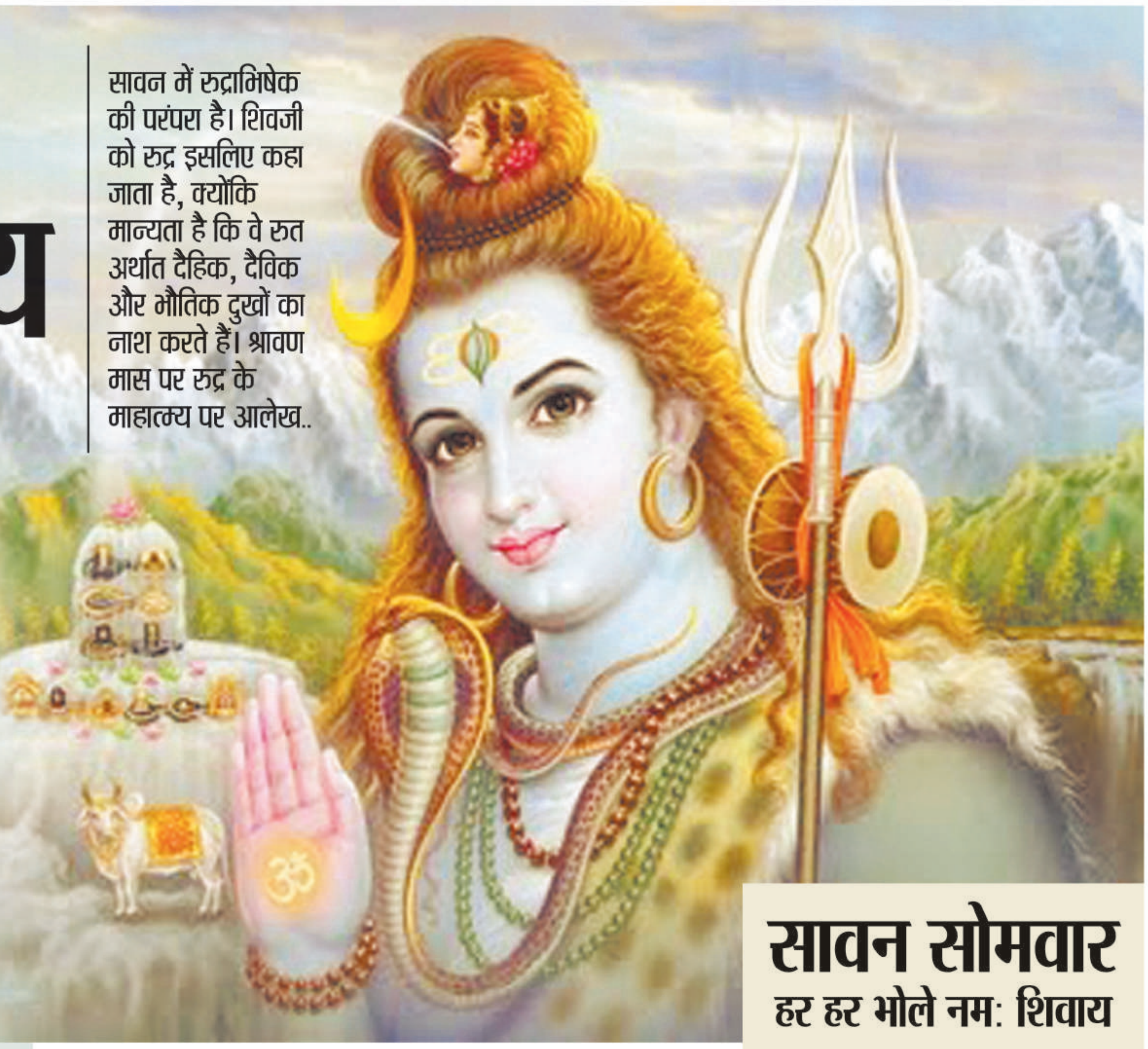

सावन में रुद्राभिषेक की परंपरा है। शिवजी को रुद्र इसलिए कहा जाता है, क्योंकि मान्यता है कि वे रुत अर्थात दैहिक, दैविक और भौतिक दुखों का नाश करते हैं। श्रावण मास पर रुद्र के माहात्म्य पर आलेख..

वेद सर्वाधिक प्राचीन ग्रंथ माने जाते हैं। शास्त्रों के अनुसार, वेद॰ शिव॰ शिवो वेद॰ यानी वेद शिव हैं और शिव वेद हैं। अर्थात शिव वेदस्वरूप हैं। इसके साथ ही वेद को भगवान सदाशिव का नि॰श्वास बताते हुए उनकी स्तुति में कहा गया है – यस्य नि॰श्वसितं वेदायो वेदेभ्योखिलं जगत। निर्ममे तमहं वंदे विद्यातीर्थ महेश्वरम।। अर्थात वेद जिनके नि॰श्वास हैं, जिन्होंने वेदों के माध्यम से संपूर्ण सृष्टि की रचना की है और जो समस्त विद्याओं के तीर्थ हैं, ऐसे देवों के देव महादेव की मैं वंदना करता हूं। सनातन संस्कृति में वेदों की तरह शिव जी को भी अनादि कहा गया है।

वेदों में साम्ब सदाशिव को रुद्र नाम से पुकारा गया है। शिवजी को रुद्र इसलिए कहा जाता है, क्योंकि ये रुत अर्थात दुख को दूर कर देते हैं। जो दैहिक, दैविक और भौतिक दुखों का नाश करते हैं, वे रुद्र हैं। इसीलिए उन्होंने त्रिशूल धारण किया है। रुद्रहृदयोपनिषद कहता है, सर्वदेवात्मको रुद्र॰ अर्थात रुद्र सर्वदेवमय हैं। अथर्व शिखोपनिषद भी इसका समर्थन करता है – रुद्रो वै सर्वा देवता अर्थात रुद्र समस्त देवताओं का स्वरूप हैं। यजुर्वेद के रुद्राध्याय में रुद्रोपासना का विधान मिलता है। इसमें रुद्र शब्द के सौ पर्यायवाची नामों का उल्लेख होने से इसे शतरुद्री भी कहते हैं। माना जाता है कि शतरुद्री के माहात्म्य का उपदेश महर्षि याज्ञवल्क्य ने राजा जनक को दिया था। श्वेताश्वतरोपनिषदके अनुसार, महाप्रलय के समय एकमात्र रुद्र ही विद्यमान रहते हैं। श्रुतियों से यह तथ्य विदित होता है कि रुद्र ही परमपुरुष यानी आदिदेव साकार बहमा हैं, जिनके द्वारा ही सृष्टि की रचना, पालन और संहार होता है। ब्रहमा, विष्णु और महेश इनकी त्रिमूर्ति हैं। रुद्र का परिचय शास्त्रों में इस प्रकार भी दिया गया है – अशुभं द्रावयन् रुद्रो यज्जाहार पुनर्भवम्। तत॰ स्मृताभिधो रुद्रशब्देनात्राभिधीयते।। अर्थात जो प्राणी जीवनकाल में सब अनिष्टों को दूर करते हैं और शरीर त्यागने पर मुक्ति प्रदान करते हैं, वे सदाशिव रुद्र के नाम से जाने जाते हैं। इसी कारण दुखों–कष्टों से मुक्ति तथा सद्गति प्राप्त करने के उद्देश्य से मनुष्य रुद्रोपासना करता आया है।

रुद्र को अभिषेकप्रिय रुद्र कहा गया है, यानी उन्हें अभिषेक पसंद है। इसीलिए सावन के महीने में रुद्र का अभिषेक किया जाता है। सामान्यत॰ लोग जल द्वारा अभिषेक करते हैं, तो सामर्थ्यवान दूध, दही, शहद आदि विभिन्न द्रव्यों से उनका अभिषेक करते हैं। मान्यता है कि श्रावण मास में भगवान शिव ने समुद्र मंथन से उत्पन्न विष को जनकल्याण के लिए पिया था, तब इंद्र ने शीतलता देने के लिए वर्षा की थी, इसी कारण श्रावण मास में शिव जी को जल अर्पित करने की परंपरा शुरू हुइ। भगवान शंकर की शक्ति पार्वती पर्वतराज हिमालय की पुत्री हैं। हमने पर्वतीय क्षेत्र को जो क्षति पहुंचाई है, उसके विनाशकारी परिणाम दिखाई देते हैं। इसलिए हमें हिमालय की पवित्रता बनाए रखने का संकल्प इस सावन में लेना चाहिए, तभी शिवार्चन सफल हो सकेगा और शिव हमेशा कल्याणकारी होंगे।

ऐसे करें शिव को प्रसन्न

श्रावण मास में आने वाले सोमवार के दिनों में भगवान शिवजी का व्रत करना चाहिए और व्रत करने के बाद भगवान श्री गणेश जी, भगवान शिवजी, माता पार्वती व नन्दी देव की पूजा करनी चाहिए। पूजन सामग्री में जल, दुध, दही, चीनी, घी, शहद, पंचामृत,मोली, वस्त्र, जनेऊ, चन्दन, रोली, चावल, फूल, बेल–पत्र, भा ंग, आक–धतूरा, कमल,गट्ठा, प्रसाद, पान–सुपारी, लौंग, इलायची, मेवा, दक्षिणा चढाया जाता है। इस दिन धूप दीया जलाकर कपूर से आरती करनी चाहिए। व्रत के दिन पूजा करने के बाद एक बार भोजन करना चाहिए। और श्रावण मास में इस माह की विशेषता का श्रवण करना चाहिए।

श्रावण मास शिव उपासना महत्व

भगवान शिव को श्रावण मास सबसे अधिक प्रिय है। इस माह में प्रत्येक सोमवार के दिन भगवान श्री शिव की पूजा करने से व्यक्ति की सभी मनोकामनाएं पूरी होती है। इस मास में भक्त भगवान शकर का पूजन व अभिषेक करते है। सभी देवों में भगवान शकर के विषय में यह मान्यता प्रसिद्ध है, कि भगवान भोलेनाथ शीघ्र प्रसन्न होते है। एक छोटे से बिल्वपत्र को चढ़ाने मात्र से तीन जन्मों के पाप नष्ट होते है।

श्रावण मास के विषय में प्रसिद्ध एक पौराणिक मान्यता के अनुसार श्रावण मास के सोमवार व्रत, एक प्रदोष व्रत तथा और शिवरात्री का व्रत जो व्यक्ति करता है, उसकी कोई कामना अधूरी नहीं रहती है। 12 ज्योतिर्लिंगों के दर्शन के समान यह व्रत फल देता है।

इस व्रत का पालन कई उद्देश्यों से किया जा सकता है। महिलाएं श्रावण के 16 सोमवार के व्रत अपने वैवाहिक जीवन की लंबी आयु और संतान की सुख–समृद्धि के लिये करती है, तो यह अविवाहित कन्याएं इस व्रत को पूर्ण श्रद्धा से कर मनोवाछित वर की प्राप्ति करती है। सावन के 16 सोमवार के व्रत कुल वृद्धि, लक्ष्मी प्राप्ति और सुख –सम्मान के लिये किया जाता है।

शिव पूजन में बेलपत्र प्रयोग करना

भगवान शिव की पूजा जब बेलपत्र से की जाती है, तो भगवान अपने भक्त की कामना बिना कहे ही पूरी करते है. बिल्व पत्र के बारे में यह मान्यता प्रसिद्ध है, कि बेल के पेड़ को जो भक्त पानी या गंगाजल से सींचता है, उसे समस्त तीथरें की प्राप्ति होती है। वह भक्त इस लोक में सुख भोगकर, शिवलोक में प्रस्थान करता है। बिल्व पत्थर की जड़ में भगवान शिव का वास माना गया है। यह पूजन व्यक्ति को सभी तीथरें में स्नान करने का फल देता है।

सावन माह व्रत विधि

सावन के व्रत करने से व्यक्ति को सभी तीथरें के दर्शन करने से अधिक पुन्य फल प्राप्त होते है। जिस व्यक्ति को यह व्रत करना हो, व्रत के दिन प्रात॰ काल में शीघ्र सूर्योदय से पहले उठना चाहिए। श्रावण मास में केवल भगवान श्री शकर की ही पूजा नहीं की जाती है, बल्कि भगवान शिव की परिवार सहित पूजा करनी चाहिए। सावन सोमवार व्रत सूर्योदय से शुरु होकर सूर्यास्त तक किया जाता है। व्रत के दिन सोमवार व्रत कथा सुननी चाहिए। तथा व्रत करने वाले व्यक्ति को दिन में सूर्यास्त के बाद एक बार भोजन करना चाहिए।

प्रात॰काल में उठने के बाद स्नान और नित्यक्रियाओं से निवृत होना चाहिए। इसके बाद सारे घर की सफाई कर, पूरे घर में गंगा जल या शुद्ध जल छिड़कर, घर को शुद्ध करना चाहिए। इसके बाद घर के ईशान कोण दिशा में भगवान शिव की मूर्ति या चित्र स्थापित करना चाहिए। मूर्ति स्थापना के बाद सावन मास व्रत संकल्प लेना चाहिए।

श्रीमल्लिकार्जुन ज्योतिर्लिंग के दर्शन से पूरी होती हैं मनोकामनाएं

दक्षिण भारत में कैलाश के नाम से मशहूर आंध्र प्रदेश का श्रीमल्लिकार्जुन मंदिर भारत के बारह ज्योतिर्लिंगों में से एक है। यह ज्योतिर्लिंग कृष्णा नदी के तट पर श्रीसैलम नाम के पर्वत पर स्थित है। ऐसी मान्यता है कि इस मंदिर के दर्शन करने से सात्विक मनोकामनाएं पूरी होती हैं।

श्रीमल्लिकार्जुन का पौराणिक महत्व

एक बार भगवान शिव और पार्वती के पुत्र कार्तिकेय स्वामी और गणेश अपने विवाह के लिए आपस में कलह करने लगे। कार्तिकेय का मानना था कि वे बड़े हैं, इसलिए उनका विवाह पहले होना चाहिए, किन्तु श्री गणेश अपना विवाह पहले कराने को लेकर जिद्द पर अड़े थे। जब दोनों के झगड़े की वजह पिता महादेव और माता पार्वती को पता लगी तो उन्होंने इस झगड़े को खत्म करने के लिए कार्तिकेय और गणेश के सामने एक प्रस्ताव रखा। उन्होंने कहा कि तुम दोनों में जो कोई भी पृथ्वी की परिक्रमा करके पहले यहां आ जाएगा, उसी का विवाह पहले होगा। शर्त सुनते ही कार्तिकेय जी पृथ्वी की परिक्रमा करने के लिए दौड़ पड़े लेकिन गणेशजी के लिए तो यह कार्य बड़ा ही कठिन था।

गणेश जी शरीर से स्थूल किन्तु बुद्धि के सागर थे। उन्होंने एक उपाय सोचा और अपनी माता पार्वती तथा पिता देवाधिदेव महेश्वर से एक आसन पर बैठने का आग्रह किया। गणेश ने उनकी सात परिक्रमा की। इस तरह से वह पृथ्वी की परिक्रमा से प्राप्त होने वाले फल की प्राप्ति के अधिकारी बन गए। उनकी चतुर बुद्धि को देख कर शिव और पार्वती दोनों काफी खुश हुए और उन्होंने श्रीगणेश का विवाह कार्तिकेय से पहले करा दिया। जब तक स्वामी कार्तिकेय सम्पूर्ण पृथ्वी की परिक्रमा करके वापस आए, उस समय तक श्रीगणेश जी का विवाह विश्वरूप प्रजापति की पुत्रियों सिद्धि और बुद्धि के साथ हो चुका था, जिनसे उन्हें क्षेम तथा लाभ नामक दो पुत्र भी प्राप्त हो चुके थे।

यह सब देखकर स्वामी कार्तिकेय नाराज हो गए और क्रौंच पर्वत की ओर चले गए। उन्हें मनाने के लिए देवर्षि नारद को भेजा गया लेकिन वह नहीं माने। कार्तिकेय के चले जाने पर माता पार्वती भी क्रौंच पर्वत पहुंचीं। उधर भगवान शिव भी ज्योतिर्लिंग के रूप में वहां प्रकट हुए। तभी से वह मल्लिकार्जुन ज्योतिर्लिंग के नाम से विख्यात हुए। मल्लिका माता पार्वती का नाम है, जबकि अर्जुन भगवान शंकर को कहा जाता है। इस कथा के अलावा और भी कई कथाएं हैं जो मल्लिकार्जुन ज्योतिर्लिंग के बारे में कही जाती हैं।

कैसे पहुंचे – मल्लिकार्जुन ज्योतिर्लिंग आंध्र प्रदेश के श्रीसैलम में मौजूद है। आप सड़क, रेल और हवाई यात्रा के जरिए इस ज्योतिर्लिंग के दर्शन कर सकते हैं। सड़क के जरिए श्रीसैलम पूरी तरह से जुड़ा हुआ है। विजयवाड़ा, तिरुपति, अनंतपुर, हैदराबाद और महबूबनगर से नियमित रूप से श्रीसैलम के लिए सरकारी और निजी बसें चलाई जाती हैं। श्रीसैलम से 137 किलोमीटर की दूरी पर स्थित हैदराबाद का राजीव गांधी अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट सबसे नजदीकी एयरपोर्ट है। यहां से आप बस या फिर टैक्सी के जरिए मल्लिकार्जुन पहुंच सकते हैं। यहां का नजदीकी रेलवे स्टेशन मर्कापुर रोड है जो श्रीसैलम से 62 किलोमीटर की दूरी पर है।

सावन सोमवार

हर हर भोले नम: शिवाय

सावन और शिव का भारतीय संस्कृति से गहरा मेल है। सावन के झूलों से लेकर सावन सोमवार की बेलपत्री तक..सब कुछ मानो भावनाओं को हरा–भरा कर देने वाला। सावन के आते ही शिव भक्तों में पूजा अर्चना के लिए नई उमंग का संचार हो गया है। चारों ओर गूंजने लगे हैं बोल बम.. के जयकारे और हरे व केसरिया रंग से धरती पट सी गई है। सावन सोमवार को शिवालयों में सुबह से शाम तक भक्तों का तांता लगा रहेगा। हर कोई भोले से वरदान मांगने पहुंच जाता है उनके द्वार। शास्त्रों और पुराणों का कहना है कि श्रावण मास भगवान शंकर को अत्यंत प्रिय है। इस माह में शिवार्चना के लिए प्रमुख सामग्री बेलपत्र और धतूरा सहज सुलभ हो जाता है। सच पूछा जाए तो भगवान शिव ही ऐसे देवता है, जिनकी पूजा–अर्चना के लिए सामग्री को लेकर किसी प्रकार की परेशानी नहीं होती। अगर कोई सामग्री उपलब्ध न हो तो जल ही काफी है। भक्ति भाव के साथ जल अर्पित कीजिए और भगवान शिव प्रसन्न।

जल चढ़ाओ और जो चाहे मांग लो

शास्त्रों के अनुसार श्रावण मास भगवान शकर को विशेष प्रिय है। अत॰ इस मास में आशुतोष भगवान शकर की पूजा का विशेष महत्व है। सोमवार शकर का प्रिय दिन है। इसलिए श्रावण सोमवार का और भी विशेष महत्व है। भगवान शकर का यह व्रत सभी मनोकामनाओं को पूर्ण करने वाला है। इस मास में लघुरुद्र, महारुद्र अथवा अतिरुद्र पाठ करके प्रत्येक सोमवार को शिवजी का व्रत किया जाता है। प्रात॰ काल गगा या किसी पवित्र नदी सरोवर या घर पर ही विधि पूर्वक स्नान करने का विधान है। इसके बाद शिव मदिर जाकर या घर में पार्थिव मूर्ति बना कर यथा विधि से रुद्राभिषेक करना अत्यत ही फलदायी है। इस व्रत में श्रावण महात्म्य और विष्णु पुराण कथा सुनने का विशेष महत्व है।

एतिहासिक जंगेश्वर मंदिर

प्राचीन व एतिहासिक शिव मंदिरों में से एक पलवल के जंगेश्वर मंदिर में श्रावण माह में हर सोमवार को हजारों श्रद्धालु आकर पूजा अर्चना करते हैं। इस मंदिर की मान्यता दूर-दूर तक है। पुराने शहर में स्थापित यह मंदिर लोगों की आस्था का मुख्य केंद्र माना जाता है। पड़वा से पूनो तक श्रावण माह में विशेष पूजा अर्चना की जाती है।

पौराणिक व एतिहासिक महत्व

मंदिर का पौराणिक व एतिहासिक महत्व है। यह इसके नाम से ही पता लगता है। मंदिर का इतिहास काफी पुराना है। पहले इस मंदिर को विधर्मियों ने तोड़कर इसके ऊपर अन्य निर्माण कर दिए थे। फिर इसे काफी संघर्ष के बाद हासिल किया गया। खुदाई की गई तो प्राचीन शिवालय निकला। सन् 1802 में इस मंदिर का पुन॰ निर्माण किया गया।

मूर्ति व मंदिर के निर्माण की विशेषता

मंदिर में स्थापित शिवलिंग पत्थर का है। मौजूदा लोगों में से किसी को नहीं मालूम कि यह कितना पुराना है। मंदिर के पुजारी राम कुमार बताते हैं कि यह कुदरती है। इस शिवालय का मुख्य मुख पूर्व की तरफ है। जबकि इसके दो अन्य दरवाजे पश्चिम व दक्षिण की तरफ खुलते हैं।

मंदिर की स्थापत्य शैली

जंगेश्वर मंदिर की स्थापत्य शैली अन्य शिव मंदिरों की तरह ही है। इसका निर्माण कखैया ईटों व व चूने से किया गया है। बाद का सारा निर्माण बड़ी ईटों व सीमेंट का है। मंदिर की दीवारों पर देवी–देवताओं के चित्र बने हुए हैं।

पूजा, दिनचर्या, सामग्री व आराधना

मंदिर में रोजाना पूजा अर्चना होती है। रोजाना सैकड़ों लोग पूजा अर्चना करते हैं। श्रावण माह में यह संख्या हजारों में पहुंच जाती है। मंदिर में मेले का सा माहौल रहता है। सोमवार को विशेष श्रृंगार किया जाता है। बेल पत्र, आक, धतूरे शिवलिंग पर चढ़ाए जाते हैं। पलवल से बाहर के श्रद्धालु भी पूजा अर्चना के लिए आते हैं।

श्रावण माह में प्रतिदिन शाम को दूध–दही, गंगाजल, शहद आदि से शिवलिंग का अभिषेक किया जाता है। हर सोमवार को फूल बंगला सजाया जाता है। ठंडाई व खीर का प्रसाद बांटा जाता है। अब पुराना मंदिर तोड़कर नया मंदिर बनाया गया है। उनके अनुसार शिवलिंग पृथ्वी से निकलकर अपने आप स्थापित हुआ।

एशिया कप से बीसीसीआई नहीं हट सकता, भारत-पाक मुकाबला तय कार्यक्रम के अनुसार होगा : सूत्र

नई दिल्ली (एजेंसी)। एशिया कप में भारत और पाकिस्तान के बीच मैच को लेकर बढ़ती अनिश्चितता के बीच भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (BCCI) इस महाद्वीपीय टूर्नामेंट से हट नहीं सकता और एशियाई क्रिकेट परिषद (ACC) की बैठक में भारतीय बोर्ड द्वारा हरी झंडी दिए जाने के बाद दोनों चिर प्रतिद्वंद्वी टीमों के बीच मुकाबला तय कार्यक्रम के अनुसार ही होगा।

ACC ने शनिवार को एशिया कप का कार्यक्रम जारी किया और पुष्टि की कि भारत और पाकिस्तान के बीच लीग चरण का मुकाबला 14 सितंबर को होगा क्योंकि उन्हें मेजबान UAE और ओमान के साथ ग्रुप ए में रखा गया है। BCCI सूत्रों ने बताया, 'BCCI अभी टूर्नामेंट या मैच से हट नहीं सकता। छष्ट की बैठक के बाद इस फैसले पर सहमति बनी थी। चूंकि भारत मेजबान देश है, इसलिए इस समय कुछ भी नहीं बदला जा सकता। आधिकारिक स्तर पर चर्चा हुई और उसके अनुसार परिणाम तय किया गया। मैच तय कार्यक्रम के अनुसार ही होगा।'

युवराज सिंह की अगुवाई वाली भारतीय चैंपियन टीम द्वारा बर्मिंघम में चल रहे वर्ल्ड चैंपियनशिप ऑफ लीजेंड्स के दूसरे सीजन के दौरान पाकिस्तान चैंपियन के खिलाफ खेलने से इनकार करने के बाद भारत-पाकिस्तान मुकाबले को लेकर अनिश्चितता बढ़ गई है। इसके कारण आयोजकों ने मैच रद्द कर दिया। खिलाड़ियों ने यह फैसला 22 अप्रैल को पहलगाम आतंकी हमले के बाद भारत और पाकिस्तान के बीच बढ़े राजनीतिक तनाव के मद्देनजर लिया है। हालांकि एशिया कप के कार्यक्रम की घोषणा के बाद BCCI ने अभी तक इस महाद्वीपीय टूर्नामेंट में पाकिस्तान के बहिष्कार पर कोई टिप्पणी नहीं की है।

महीनों की अटकलों को खत्म करते हुए ACC अध्यक्ष और पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (PCB) के अध्यक्ष मोहसिन नकवी ने शनिवार को एशिया कप के 17वें संस्करण की तारीखों की आधिकारिक घोषणा की। यह टूर्नामेंट 2026 टी20 विश्व कप की तैयारियों के अनुरूप टी20 प्रारूप में खेला जाएगा और इतिहास में पहली बार इसमें आठ टीमें हिस्सा लेंगी। भारत और पाकिस्तान को मेजबान यूएई और ओमान के साथ ग्रुप ए में रखा गया है, जबकि ग्रुप बी में बांग्लादेश, हांगकांग, अफगानिस्तान और श्रीलंका शामिल हैं।

प्रत्येक ग्रुप की शीर्ष टीमें सुपर फोर चरण में पहुंचेंगी जिसके बाद फाइनल होगा जिससे

टूर्नामेंट में भारत और पाकिस्तान के बीच तीन मुकाबलों की संभावना बढ़ गई है। 2023 संस्करण के फाइनल में श्रीलंका को हराकर भारत गत विजेता है।

एडम जम्पा ने सैंटनर की बराबरी की, टी20आई में सबसे ज्यादा विकेट लेने वाले शीर्ष 10 खिलाड़ियों में शामिल

बैसेटेरे (सेंट किट्स एंड नेविस) (एजेंसी)। ऑस्ट्रेलियाई स्पिनर एडम जम्पा ने न्यूज़ीलैंड के मिशेल सैंटनर की बराबरी कर ली है और अब तक के सबसे ज़्यादा टी20 अंतरराष्ट्रीय विकेट लेने वालों की सूची में शीर्ष 10 में जगह बना ली है। जम्पा ने वेस्टइंडीज के खिलाफ बैसेटेरे में चौथे टी20 अंतरराष्ट्रीय मैच के दौरान रैंकिंग में यह बढ़त हासिल की। अपने चार ओवर के स्पेल में जम्पा ने चार ओवर में 54 रन देकर तीन विकेट लिए।

अब तक 99 टी20 अंतरराष्ट्रीय मैचों में जम्पा ने 21.14 की औसत से 124 विकेट लिए हैं जिसमें उनका सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन 5/19 रहा है। दूसरी ओर, सैंटनर ने 114 मैचों में 22.57 की औसत से 124 विकेट लिए हैं जिसमें उनका सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन 4/11 रहा है। वे दोनों इस प्रारूप में संयुक्त रूप से 10वें सबसे अधिक विकेट लेने वाले गेंदबाज हैं।

शीर्ष तीन टी20आई विकेट लेने वाले गेंदबाजों न्यूजीलैंड के टिम साउथी (126 मैचों में 22.38 की औसत से 164 विकेट, 5/18 के सर्वश्रेष्ठ आंकड़े के साथ), अफगानिस्तान के राशिद खान (96 मैचों में 13.80 की औसत से 161 विकेट, 5/3 के सर्वश्रेष्ठ आंकड़े के साथ) और न्यूजीलैंड के ईश सोढ़ी (126 मैचों में 22.52 की औसत से 150 विकेट, 4/12 के सर्वश्रेष्ठ आंकड़े के साथ)। हैं।

मैच की बात करें तो वेस्टइंडीज के 206 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए ऑस्ट्रेलिया ने ग्रीन (नाबाद 55, 35 गेंद, तीन छक्के, तीन चौके) और इंग्लिस (51 रन, 30 गेंद, 10 चौके, एक छक्का) की पारियों की बदौलत 19.2 ओवर में सात विकेट पर 206 रन बनाकर जीत दर्ज की। वेस्टइंडीज की ओर से जेडिया ब्लेड्स ने 29 रन देकर तीन विकेट चटकाए।

वेस्टइंडीज ने इससे पहले 9 विकेट पर 205 रन बनाए लेकिन उसकी तरफ से कोई बल्लेबाज टिककर बड़ी पारी नहीं खेल पाया। मेजबान टीम के चार बल्लेबाजों ने 20 रन के आंकड़े को पार किया जिसमें शेरफेन रदरफोर्ड 31 रन बनाकर टीम के शीर्ष स्कोरर रहे। ऑस्ट्रेलिया की ओर से आरोन हार्डी, जेवियर बार्टलेट, और सीन एबट ने दो-दो जबकि एडम जंपा ने तीन विकेट चटकाए।

लक्ष्य का पीछा करते हुए ऑस्ट्रेलिया ने पारी की दूसरी ही गेंद पर मिचेल मार्श (00) का विकेट गंवा दिया जिन्हें ब्लेड्स ने पगबाधा किया। इंग्लिस ने इसके बाद सलामी बल्लेबाज ग्लेन मैक्सवेल (47) के साथ दूसरे विकेट के लिए 66 और ग्रीन के साथ तीसरे विकेट के लिए 63 रन जोड़कर ऑस्ट्रेलिया की जीत की नींव रखी। ग्रीन ने आरोन हार्डी (23) के साथ भी छठे विकेट के लिए 51 रन जोड़कर ऑस्ट्रेलिया की जीत सुनिश्चित की।

ग्रीन और इंग्लिस के अर्धशतक, ऑस्ट्रेलिया ने चौथे टी20 में वेस्टइंडीज को हराया

बासेटेरे (सेंट किट्स) (एजेंसी)। कैमरन ग्रीन और जोश इंग्लिस के अर्धशतक से ऑस्ट्रेलिया ने यहां चौथे एकदिवसीय अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट मैच में वेस्टइंडीज को तीन विकेट से हराकर पांच मैच की श्रृंखला में 4-0 की बढ़त बना ली।

वेस्टइंडीज के 206 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए ऑस्ट्रेलिया ने ग्रीन (नाबाद 55, 35 गेंद, तीन छक्के, तीन चौके) और इंग्लिस (51 रन, 30 गेंद, 10 चौके, एक छक्का) की पारियों की बदौलत 19.2 ओवर में सात विकेट पर 206 रन बनाकर जीत दर्ज की। वेस्टइंडीज की ओर से जेडिया ब्लेड्स ने 29 रन देकर तीन विकेट चटकाए। वेस्टइंडीज ने इससे पहले 9 विकेट पर 205 रन बनाए लेकिन उसकी तरफ से कोई बल्लेबाज टिककर बड़ी पारी नहीं खेल पाया। मेजबान टीम के चार बल्लेबाजों ने 20 रन के आंकड़े को पार किया जिसमें शेरफेन रदरफोर्ड 31 रन बनाकर टीम के शीर्ष स्कोरर रहे। ऑस्ट्रेलिया की ओर से आरोन हार्डी, जेवियर बार्टलेट, और सीन एबट ने दो-दो जबकि एडम जंपा ने तीन विकेट चटकाए।

लक्ष्य का पीछा करते हुए ऑस्ट्रेलिया ने पारी की दूसरी ही गेंद पर मिचेल मार्श (00) का विकेट गंवा दिया जिन्हें ब्लेड्स ने पगबाधा किया। इंग्लिस ने इसके बाद सलामी बल्लेबाज ग्लेन मैक्सवेल (47) के साथ दूसरे विकेट के लिए 66 और ग्रीन के साथ तीसरे विकेट के लिए 63 रन जोड़कर ऑस्ट्रेलिया की जीत की नींव रखी। ग्रीन ने आरोन हार्डी (23) के साथ भी छठे विकेट के लिए 51 रन जोड़कर ऑस्ट्रेलिया की जीत सुनिश्चित की।

शुभमन गिल का मैनचेस्टर में बेहतरीन शतक, ब्रैडमैन-गावस्कर के क्लब में की एंट्री

मैनचेस्टर (एजेंसी)। टीम इंडिया के कप्तान शुभमन गिल का इंग्लैंड में एक बार फिर बेहतरीन प्रदर्शन देखने को मिला है। उन्होंने रविवार को इंग्लैंड खिलाफ चौथे टेस्ट की दूसरी पारी में शानदार शतक ठोका है। गिल ने मैनचेस्टर के ओल्ड ट्रैफर्ड स्टेडियम में संयम के साथ बैटिंग करते हुए 238 गेंदों में 103 रन बनाए। उन्होंने 12 चौके लगाए। पांचवें दिन लंच ब्रेक से पहले पेसर जोफ्रा आर्चर का शिकार बने। ये 25 वर्षीय बल्लेबाज के टेस्ट करियर की नौवीं सेंचुरी है। गिल मैनचेस्टर के मैदान पर टेस्ट सेंचुरी जड़ने वाले 9वें भारतीय क्रिकेटर बन गए हैं। उन्होंने 35 साल का शतकीय सूखा समाप्त किया है। दरअसल, गिल से पहले मैनचेस्टर में शतक जड़ने वाले भारतीय प्लेयर सचिन तेंदुलकर थे। सचिन ने 1990 में यहां इंग्लैंड के खिलाफ टेस्ट मैच की दूसरी पारी में 189 गेंदों में 17 चौकों की बदौलत नाबाद 119 रन बनाए थे। ये महान बल्लेबाज सचिन के करियर का पहला टेस्ट शतक था।

ब्रैडमैन-गावस्कर के क्लब में की एंट्री

गिल ने इंग्लैंड के खिलाफ मौजूदा सीरीज में चौथी शतकीय पारी खेली है। उन्होंने सर डॉन ब्रैडमैन और सुनील गावस्कर के धाकड़ क्लब में एंट्री मारी है। गिल बतौर कप्तान एक टेस्ट सीरीज में संयुक्त रूप से सबसे ज्यादा चार शतक लगाने वाले खिलाड़ी बन गए हैं। ऑस्ट्रेलिया के पूर्व कप्तान और महान बल्लेबाज ब्रैडमैन ने 1947/48 में भारत के खिलाफ टेस्ट सीरीज में चार शतक जमाए। पूर्व भारतीय कप्तान गावस्कर ने 1978/79 में वेस्टइंडीज के खिलाफ सीरीज में ऐसा किया।

कोहली की बराबरी

गिल एक टेस्ट सीरीज में भारत के लिए संयुक्त रूप से सर्वाधिक शतक लगाने वाले प्लेयर बन चुके हैं। उन्होंने गावस्कर और विराट कोहली की बराबरी की है। गावस्कर ने 1971 और 1978/79 में वेस्टइंडीज के खिलाफ टेस्ट सीरीज में चार-चार शतक लगाए थे। वहीं, स्टार बल्लेबाज कोहली ने 2014/15 में ऑस्ट्रेलिया दौरे पर टेस्ट सीरीज में इतने सेंचुरी लगाई थीं। गिल इंग्लैंड में एक टेस्ट सीरीज में 700 प्लस रन बनाने वाले पहले एशियाई खिलाड़ी हैं।

गावस्कर बोले टीम शुभमन की , इसलिए वे ही लें चयन पर अंतिम फैसला

लंदन ।भारतीय टीम के पूर्व भारतीय कप्तान सुनील गावस्कर ने कहा है कि अंतिम ग्यारह के चयन का पूरा अधिकार कप्तान शुभमन गिल के पास होना चाहिये न कि कोच गौतम गंभीर के पास। गावस्कर ने कहा कि टीम कप्तान की होती है कोच की नहीं ।इसलिए कप्तान की राय सबसे अहम होती है। विराट कोहली और रोहित शर्मा के संन्यास के बाद कई लोगों ने नई भारतीय टेस्ट टीम को गंभीर की टीम करार दिया, जबकि चयनकर्ताओं ने शुभमन को नया टेस्ट कप्तान नियुक्त किया था। इससे सवाल ये भी उठ रहा है कि ड्रेसिंग रूम में कप्तान की पकड़ है या कोच हावी हैं? टेस्ट के चौथे दिन जब, गावस्कर से सीधे तौर पर पूछा गया कि क्या यह भारतीय टीम शुभमन या गंभीर की है। इसपर गावस्कर ने कहा कि उन्हें अपनी कप्तानी के दिनों में कभी ऐसी स्थिति का सामना नहीं करना पड़ा, क्योंकि उस समय कोई मुख्य कोच नहीं था। इसकी जगह पर उन्होंने प्रबंधकों या सहायक प्रबंधकों से सुझाव मांगे, जो अक्सर पूर्व खिलाड़ी होते थे। गावस्कर ने कहा, हमारे पास कोच नहीं थे। हमारे पास सिर्फ पूर्व खिलाड़ी ही मैनेजर या सहायक मैनेजर के तौर पर थे। वे ऐसे लोग थे जिनके पास जाकर आप बात कर सकते थे, लंच के समय, दिन के खेल के अंत में या मैच से पहले और वे केवल अपनी सलाह देते थे, फैसला हमें लेना होता था। इसलिए, मेरे लिए कप्तान और कोच के संयोजनप को समझना कठिन है। जब मैं कप्तान था, तब हमारे पास कोई भी पूर्व खिलाड़ी नहीं था।

करुण को इस कारण चौथे टेस्ट में शामिल नहीं किया गया : कोटक

लंदन ।भारतीय क्रिकेट टीम के बल्लेबाजी कोच सितांशु कोटक ने कहा है कि बल्लेबाज करुण नायर को चौथे टेस्ट से बाहर करने का कारण खराब फार्म नहीं था बल्कि उनपर बढ़ते दबाव को कम करने के लिए उन्हें आराम दिया गया। इससे पहले कहा जा रहा था कि आठ साल बाद वापसी के बाद भी शुरुआती तीनों ही मैचों में खराब प्रदर्शन के कारण इस बल्लेबाज को टीम से बाहर किया गया है। प्रशंसकों का मानना था कि करुण अवसरों का लाभ नहीं उठा पाये जिस कारण उन्हें अपनी जगह खोनी पड़ी। नायर को मैनचेस्टर के ओल्ड ट्रेफर्ड में खेले जा रहे चौथे टेस्ट मैच में शामिल न करते हुए उनकी जगह पर साई सुदर्शन को अवसर दिया गया। सुदर्शन ने अवसर का लाभ उठाते हुए पहली पारी में अर्धशतक लगाया था। वह हालांकि, दूसरी पारी में रन नहीं बना पाये।

जडेजा को स्टोक्स से बेहतर ऑलराउंडर मानते हैं कपिल

मुम्बई ।भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान कपिल देव का मानना है कि पिछले कुछ समय में इंग्लैंड के ऑलरांउडर बेन स्टोक्स ने काफी अच्छा प्रदर्शन किया है पर अगर भारत के रविन्द्र जडेजा से तुलना करें तो वह अभी भी पीछे हैं। कपिल ने कहा है कि जडेजा स्टोक्स से अधिक अच्छे ऑलराउंडर हैं। स्टोक्स ने भारत के खिलाफ मैनचेस्टर में 14वां टेस्ट शतक लगाया। इस दौरान उन्होंने अपने 7000 टेस्ट रन भी पूरे किए हैं। अब स्टोक्स के नाम 115 मैचों में 35.7 के औसत से 7032 रन हो गये हैं। उन्होंने इस दौरान 14 शतक और 35 अर्धशतक भी लगाये हैं। स्टोक्स ने भारत के खिलाफ चौथे मैच में 198 गेंद में ही 141 रन बनाए। वह सीरीज में सबसे ज्यादा विकेट लेने वाले गेंदबाज भी हैं। वहीं स्टोक्स के बारे में पूछे जाने पर कपिल ने कहा, ''मैं तुलना नहीं करना चाहता। स्टोक्स एक अच्छे ऑलराउंडर हैं हालांकि मुझे अभी भी लगता है कि जडेजा उनसे आगे हैं। वह कहीं बेहतर प्रदर्शन कर रहे हैं।'' स्टोक्स टेस्ट क्रिकेट के इतिहास में 7000 रन और 200 विकेट हासिल करने वाले तीसरे ऑलराउंडर हैं। इससे पहले दक्षिण अफ्रीका के जैक कैलिस और वेस्टइंडीज के सर गैरी सोबर्स ने ये उपलब्धि हासिल की थी। जडेजा ने इंग्लैंड की पहली पारी में चार विकेट लिए थे। जडेजा इंग्लैंड के खिलाफ पांच मैचों की टेस्ट सीरीज में सबसे ज्यादा रन बनाने वाले सातवें बल्लेबाज हैं। उन्होंने सात पारियों में 86.75 के औसत से 347 रन बनाए हैं। उनका सबसे अधिक स्कोर 89 रन रहा है। उन्होंने जारी सीरीज में चार अर्धशतक लगाए हैं।

महिला विश्व कप शतरंज फ़ाइनल: जीत के करीब जाकर चूकी दिव्या, पहली बाजी बेनतीजा

बातुमी, जॉर्जिया (एजेंसी)। विश्व महिला शतरंज कप का इतिहासिक मुक़ाबला आज से आरंभ हो गया और यह पहली बार है की भारत विश्व कप जीतेगा क्यूंकी दोनों ही खिलाड़ी भारतीय है । सफ़ेद मोहरो से खेल रही दिव्या देशमुख नें आज अपनी ओपनिंग की तैयारी से दिग्गज कोनेरु हम्पी को लगभग हारी हुई स्थिति में पहुंचा दिया था पर अपने अनुभव से और दिव्या की कुछ गलत चालों से हम्पी इस मुश्किल बाजी को बचाने में कामयाब रही। क्वीन्स गेंबिट एकसेपटेड ओपनिंग में दिव्या नें हम्पी को अपनी नयी चालों से चौंकाया और खेल की दसवीं चाल में दिव्या को इस फायदा मिला और हम्पी गलती कर बैठी , हम्पी का राजा केंद्र में था और दिव्या नें आक्रमण भी किया और अपने घोड़े को

कुर्बान करते हुए खेल पर नियंत्रण ले लिया पर खेल की 14वीं चाल में ऊंट की अदला बदली करने की गलत चाल से उन्होने हम्पी को खेल में बराबरी हासिल करने का मौका दे दिया और इसके बाद हम्पी नें सम्हाल कर खेलते हुए पहले अपना घोडा कुर्बान करते हुए पहले अपने राजा को सुरक्षित किया और फिर अपने हथियों को खेल में ले आई और बराबरी हासिल कर ली , खेल की 30वीं चाल में जब हम्पी ड्रॉ के लिए सहमत थी दिव्या नें चाल बदल कर खेल को जारी रखने की मंशा जताई पर अब तक उनका राजा कमजोर हो चुका था और इस बात का फायदा उठाते हुए 35वीं चाल में अपना हाथी कुर्बान किया और दिव्या के राजा को लगातार शह देते हुए खेल ड्रॉ करा लिया । अब जब हम्पी कल सफ़ेद मोहरो से खेलते उतरेंगी तो दबाव दिव्या पर होगा और साथ ही उन्हे जल्द ही पहली बाजी खो देने के झटके से उबरकर एक नयी शुरु आत करनी होगी । अगर कल भी बाजी बेनतीजा रही तो फिर टाईब्रेक के जरिये विश्व कप विजेता का निर्णय लिया जाएगा ।

रोवमैन पॉवेल ने क्रिस गेल को पीछे छोड़ा, टी20आई में दूसरे सबसे ज्यादा रन बनाने वाले क्रिकेटर बने

बैसेटेरे ।वेस्टइंडीज के बल्लेबाज रोवमैन पॉवेल दिग्गज बल्लेबाज क्रिस गेल को पीछे छोड़कर टी20आई में टीम के दूसरे सबसे ज़्यादा रन बनाने वाले खिलाड़ी बन गए। पॉवेल ने यह उपलब्धि ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ बैसेटेरे में खेले गए चौथे टी20आई मैच के दौरान हासिल की। पहले तीन मैचों में 1, 12 और 9 रन के खराब स्कोर के बाद पॉवेल ने 22 गेंदों में दो चौकों और दो छक्कों की मदद से 28 रन बनाकर अपनी बल्लेबाजी क्षमता की झलक दिखाई। अब तक 99 टी20आई मैचों में उन्होंने 87 पारियों में 25.66 की औसत और 141 से ज़्यादा के स्ट्राइक रेट से 1,925 रन बनाए हैं, जिसमें एक शतक और नौ अर्द्धशतक शामिल हैं। उनका सर्वश्रेष्ठ स्कोर 107 है। गेल ने अपने शानदार टी20 अंतरराष्ट्रीय करियर में जिसमें उन्होंने दो टी20 विश्व कप जीते, 79 मैचों की 75 पारियों में 27.92 की औसत और 137.50 के स्ट्राइक रेट से 1,899 रन बनाए। उन्होंने दो शतक और 14 अर्धशतक लगाए, जिसमें उनका सर्वश्रेष्ठ स्कोर 117 रहा। अब संन्यास ले चुके निकोलस पूरन टी20 अंतरराष्ट्रीय मैचों में वेस्टइंडीज के लिए शीर्ष पर हैं जिन्होंने 106 मैचों की 97 पारियों में 26.14 की औसत और 136 से अधिक के स्ट्राइक रेट और 13 अर्धशतकों के साथ 2,275 रन बनाए हैं। उनका सर्वश्रेष्ठ स्कोर 98 है।

पोटिंग, कैलिस और द्रविड जैसे दिग्गजों के साथ नाम देखकर लगता है अच्छा : रूट

मैनचेस्टर (एजेंसी)। इंग्लैंड के अनुभवी बल्लेबाज जो रूट ने कहा है कि दिग्गज क्रिकेटरों रिकी पोंटिंग, कुमार संगकारा और ब्रायन लारा के साथ अपना नाम देखकर उन्हें हैरानी होती है। रुट मैनचेस्टर टेस्ट के तीसरे दिन 150 रन बनाकर टेस्ट में सर्वाधिक रन बनाने के मामले में 13,409 रन बनाकर दूसरे नंबर पर पहुंच गये हैं। उन्होंने इस दौरान राहुल द्रविड़, जैक कैलिस और रिकी पोटिंग को पीछे छोड़ दिया है। रूट से आगे अब केवल सचिन तेंदुलकर 15,921 रन ही हैं। दूसरे नंबर पर पहुंचने के बाद रूट ने कहा, मैं बचपन से पोंटिंग, संगकारा और लारा जैसा बनना चाहता था। ऐसे में अब इन दिग्गजों के साथ अपना नाम देख निश्चित ही अच्छा लग रहा है। यह मेरे लिए थोड़ा हैरान करने वाला भी है। मैंने अपनी उपलब्धियों के बारे में ज्यादा नहीं सोचा। मेरा ध्यान इंग्लैंड को मैच जिताने पर रहा है।

अब देखना है कि क्या रूट सचिन के सबसे अधिक टेस्ट रनों का रिकॉर्ड तोड़ पाएंगे? इसके लिए उन्हें करीब तीन हजार रन चाहिये। इस पर इंग्लैंड के पूर्व कप्तान माइकल एथरटन ने कहा, रूट का औसत लगभग 85 रन प्रति टेस्ट मैच है, इसलिए उन्हें सचिन तक पहुंचने के लिए करीब 30 टेस्ट मैच खेलने होंगे। अभी वह 34 साल के हैं और उनके पास तीन से चार साल का समय है। वह काफी अच्छे फॉर्म में हैं और खेल के प्रति उनके प्यार और इच्छा में कोई कमी नहीं आई है। वहीं अगर वह फिट बने रहते हैं तो सचिन का रिकॉर्ड तोड़ सकते हैं।

रुट ने अब तक 157 टेस्ट मैचों की 286 पारियों में 38 शतक और 66 अर्धशतक लगाते हुए 13,409 रन बनाए हैं। उनका सबसे अधिक स्कोर 262 रन है। उनके नाम छह दोहरे शतक भी हैं। रूट से आगे केवल सचिन तेंदुलकर हैं। 200 टेस्ट मैचों की 329 पारियों में 51 शतक और 68 अर्धशतक लगाते हुए सचिन ने 15,921 रन बनाए हैं।

'दोहरे मापदंड नहीं होने चाहिए, कभी हां, कभी ना' : एशिया कप में भारत-पाक मैच पर बोले कनेरिया

नई दिल्ली ।पूर्व पाकिस्तानी स्पिनर दानिश कनेरिया ने लंबे समय से विवादों और बहसों में घिरे एशिया कप के कार्यक्रम पर अपनी राय साझा करते हुए कहा कि भारत-पाकिस्तान मुकाबला संभवत: एशियाई क्रिकेट परिषद (छष्ट) द्वारा भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (BCCI) से मंजूरी मिलने के बाद हुआ है। एसीसी द्वारा शनिवार को घोषित विस्तृत कार्यक्रम के अनुसार भारत और पाकिस्तान 14 सितंबर को एशिया कप के ग्रुप चरण के मुकाबले में आमने-सामने होंगे। यह घोषणा भारतीय चैंपियंस टीम से जुड़े एक बेहद संवेदनशील प्रकरण के कुछ ही दिनों बाद आई है, जिसने वर्ल्ड चैंपियनशिप ऑफ लीजेंड्स में पाकिस्तान चैंपियंस के खिलाफ निर्धारित मुकाबले से अपना नाम वापस ले लिया था। कनेरिया ने कहा, '(दोनों देशों के बीच) क्रिकेट होना चाहिए... लोग इस बारे में इसलिए बात कर रहे हैं क्योंकि हाल ही में एक घटना हुई थी जहां वर्ल्ड चैंपियनशिप ऑफ़ लीजेंड्स में भारत-पाकिस्तान का मैच होना था, लेकिन पूर्व भारतीय क्रिकेटरों ने मैच का बहिष्कार कर दिया। इस कदम से संकेत मिला कि शायद भारत भविष्य में एशिया कप या आईसीसी टूर्नामेंट जैसे आयोजनों में भी पाकिस्तान के साथ नहीं खेलेगा। इस बहिष्कार ने सुर्खियां बटोरीं और इसके बाद कई बयान आए, जिससे यह धारणा बनी कि भारत पाकिस्तान के खिलाफ मैचों में हिस्सा नहीं लेगा।'

भारतीय हॉकी के 100 साल: हॉकी इंडिया ने अनुदानों की घोषणा की, सात नवंबर को महोत्सव

महाबलीपुरम (एजेंसी)। हॉकी इंडिया ने यहां अपनी 15वीं कांग्रेस के दौरान राष्ट्रीय और जमीनी स्तर के टूर्नामेंट के समर्थन के लिए अपने वित्तीय अनुदान में पर्याप्त वृद्धि की घोषणा की है। अब से सीनियर पुरुष और सीनियर महिला राष्ट्रीय चैंपियनशिप की मेजबानी के लिए 70-70 लाख रुपये, जूनियर पुरुष, जूनियर महिला, सब जूनियर पुरुष और सब जूनियर महिला राष्ट्रीय चैंपियनशिप के आयोजन के लिए 30-30 लाख रुपए आवंटित किए जाएंगे।

इसके अलावा जिला और राज्य स्तरीय प्रतियोगिताओं के आयोजन के समर्थन के लिए प्रत्येक राज्य को 25 लाख रुपए दिए जाएंगे। हॉकी इंडिया ने प्रेस विज्ञप्ति में कहा कि इन बढ़े हुए अनुदानों का उद्देश्य बुनियादी ढांचे को मजबूत करना, आयोजन की गुणवत्ता में सुधार करना और स्थानीय स्तर पर वित्तीय बाधाओं को कम करके व्यापक भागीदारी सुनिश्चित करना है। इस सहयोग से हजारों उभरते खिलाड़ियों, कोचों और जमीनी स्तर के अधिकारियों को लाभ होने की उम्मीद है जो भारतीय हॉकी के भविष्य की रीढ़ हैं।

भारतीय हॉकी के 100 साल पूरे होने के उपलक्ष्य में इस कांग्रेस में कई ऐतिहासिक घोषणाएं हुईं जिनमें 7 नवंबर को एक राष्ट्रव्यापी उत्सव का आयोजन भी शामिल है। इस उपलब्धि के उपलक्ष्य में हॉकी इंडिया एक राष्ट्रव्यापी उत्सव का आयोजन करेगा जिसमें एक साथ 1,000 मैच होंगे (देश के प्रत्येक जिले में एक पुरुष और एक महिला मैच) जिसमें 36,000 से ज्यादा खिलाड़ी (18,000 पुरुष और 18,000 महिलाएं) भाग लेंगे। यह पहल देश के कोने-कोने से खिलाड़ियों को एक साथ लाएगी।

हॉकी इंडिया के अध्यक्ष दिलीप टिर्की ने कहा, 'भारतीय हॉकी के 100 साल पूरे होने का जश्न मनाते हुए हम न केवल अपनी स्वर्णिम विरासत का सम्मान करते हैं बल्कि भविष्य के लिए एक मजबूत नींव भी रखते हैं। यह राष्ट्रव्यापी उत्सव भारतीय हॉकी को आगे बढ़ाने वाले हर खिलाड़ी, कोच और प्रशंसक के लिए सम्मान है।' उन्होंने कहा, 'हम जिस वित्तीय सहायता की घोषणा कर रहे हैं, वह अगली पीढ़ी के सपनों में निवेश है जिससे सुनिश्चित करते हैं कि संसाधनों की कमी के कारण कोई भी प्रतिभा पीछे नहीं छूटे।'

क्राइम ब्रांच ने रेव पार्टी पर मारा छापा, 7 लोगों के साथ पूर्व मंत्री एकनाथ के दामाद भी गिरफ्तार

पुणे (एजेंसी)। पुणे पुलिस की अपराध शाखा (क्राइम ब्रांच) ने रेव पार्टी पर छापामार कार्रवाई करते हुए सात लोगों को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार लोगों में महाराष्ट्र के पूर्व मंत्री एकनाथ खडसे के दामाद प्रांजल खेवलकर का नाम भी शामिल हैं। रेव पार्टी स्थल से पुलिस ने कोकेन सहित कई नशीले पदार्थ बरामद किए हैं। पुलिस ने रविवार सुबह बताया कि पुणे शहर के पॉश खराडी इलाके में एक स्टूडियो अपार्टमेंट में रेव पार्टी की सूचना मिली थी, इस पर अपराध शाखा की टीम ने छापामार कार्रवाई की। छापेमारी में पुलिस ने गांजा, शराब और हुक्का जैसे नशीले पदार्थ जब्त किए हैं। इसी के साथ पुलिस ने सात लोगों को हिरासत में लिया है, जिनमें पांच पुरुष और दो महिलाएं शामिल हैं। जानकारी अनुसार प्रांजल खेवलकर राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (शरदचंद्र पवार गुट) की नेता एडवोकेट रोहिणी खडसे के पति हैं। इंस्टाग्राम प्रोफाइल में प्रांजल एक उद्यमी, समाजसेवी और डॉक्टर भी हैं। एक अन्य जानकारी अनुसार वे व्यवसायी और निर्माता भी हैं। उन्होंने अपने बैनर समर प्रोडक्शंस के तहत बनाए गए संगीत वीडियो ना होना तुमसे दूर से मनोरंजन उद्योग में भी कदम रखा था। इस पूरे मामले में पूर्व मंत्री एकनाथ खडसे का कहना है कि इस घटना के बारे में अभी उन्हें विशेष जानकारी प्राप्त नहीं हुई है और वे अधिक जानकारी जुटा रहे हैं।

अंतर्राष्ट्रीय हथियार तस्करी गिरोह का भंडाफोड़, पांच लोग गिरफ्तार

अमृतसर (एजेंसी)। पंजाब में अमृतसर ग्रामीण पुलिस ने केंद्रीय एजेंसियों के साथ संयुक्त अभियान चलाकर आईएसआई समर्थित एक अंतरराष्ट्रीय हथियार तस्करी गिरोह का भंडाफोड़ किया है। पुलिस महानिदेशक (डीजीपी) गौरव यादव ने रविवार को बताया कि इस कार्रवाई में पांच लोगों को गिरफ्तार किया गया है। पुलिस के अनुसार, पकड़े गए गिरोह के पाकिस्तान की खुफिया एजेंसी आईएसआई से संबंध थे। आरोपियों के पास से एक ए.के. सैगा 308 असॉल्ट राइफल, दो मैगजीन, दो 9 एमएम ग्लॉक पिस्तौल (चार मैगजीन सहित), एके राइफल के 90 कारतूस, पिस्तौल के 10 कारतूस, 7.50 लाख रुपये नकद, एक कार और तीन मोबाइल फोन बरामद किए गए। डीजीपी यादव ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर पोस्ट करते हुए कहा, प्रारंभिक जांच से पता चला है कि यह खेप गैंगस्टर जग्गू भगवानपुरिया के सहयोगी नव पंडोरी को पहुंचाई जानी थी। इससे आतंकवाद और गैंगस्टर नेटवर्क के बीच साठगांठ की पुष्टि होती है। गिरफ्तार आरोपियों की पहचान जोबनजीत सिंह उर्फ जोबन और गोरा सिंह (रंगगढ़ गांव), शेनशान उर्फ शालू (रसूलपुर कल्लर, अमृतसर), सनी सिंह और जसप्रीत सिंह उर्फ मोटू (रूपनगर) के रूप में हुई है।

दिल्ली एलजी ने टॉकीजों को लाइसेंस देने का अधिकार अब सरकार को सौंपा

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली के उपराज्यपाल वी के सक्सेना ने टॉकीज, थिएटर और मल्टीप्लेक्स को लाइसेंस देने का अधिकार पुलिस से वापस ले लिया और सरकार को दे दिया है। मीडिया रिपोर्ट में एक अधिकारी ने जानकारी देते हुए बताया कि शुक्रवार को जारी एक आदेश में एलजी ने दिल्ली पुलिस आयुक्त को निर्देश दिया कि वह संबंधित पुलिस अधिकारियों को चलचित्र अधिनियम के तहत लाइसेंस देने से संबंधित मामलों से तत्काल प्रभाव से अलग रहने का निर्देश दें। अधिकारी ने बताया कि लाइसेंसिंग व्यवस्था को और उदार बनाने व दिल्ली में कारोबार को सुगम बनाने के उद्देश्य से उठाए गए इस कदम से संबंधित जिला मजिस्ट्रेट की अध्यक्षता वाली समिति के पास लाइसेंस देने की सिफारिश करने का अधिकार होगा। समिति में संबंधित एमसीडी जोन के उपायुक्त, लोक निर्माण विभाग के सचिव की ओर से नामित एक संरचनात्मक इंजीनियर, दिल्ली अग्निशमन सेवा के मुख्य अग्निशमन अधिकारी की ओर से नामित एक अग्नि सुरक्षा विशेषज्ञ और बिजली विभाग के सचिव की ओर से नामित एक विद्युत प्रणाली विशेषज्ञ शामिल होंगे। जिला आपदा प्रबंधन प्राधिकरण का एक प्रतिनिधि भी जिला मजिस्ट्रेट द्वारा नामित किया जाएगा। एलजी ने स्विमिंग पूल, भोजनालय, होटल, गेस्ट हाउस, डिस्कोथेक, वीडियो गेम पार्लर, मनोरंजन पार्क और ऑडिटोरियम समेत सात श्रेणियों के व्यवसायों को लाइसेंस जारी करने का अधिकार भी पुलिस से वापस ले लिया था।

झज्जर में लिंग जांच गिरोह का भंड़ाफोड़, 55000 रुपए में करते थे सौदा

-पुलिस ने नकली ग्राहक बनाकर बिछाया जाल, आरोपी मां-बेटा गिरफ्तार

झज्जर (एजेंसी)। हरियाणा के झज्जर में स्वास्थ्य विभाग की टीम ने अवैध लिंग जांच गिरोह का भंड़ाफोड़ किया है। आरोपियों में मां और बेटा भी शामिल हैं। दोनों की गिरफ्तारी के बाद कोर्ट ने दो दिनों के पुलिस रिमांड पर भेज दिया है। बताया जा रहा है कि मामले की मुख्य आरोपी डॉ. हेमलता खुद को बीएएमएस डॉक्टर बताती थी और उसने इस पूरे घटनाक्रम में बाहरी लोगों के साथ ही अपने बेटे को भी शामिल किया था। मामले में पोर्टेबल अल्ट्रसाउंड से गर्भ की जांच करने वाले दिल्ली नांगलोई के एक ऑपरेटर की पुलिस को तलाश कर रही है।

मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक स्वास्थ्य विभाग की टीम को एक गुप्त सूचना मिली थी कि झज्जर में हेमलता नामक एक महिला जो खुद को बीएएमएस डॉक्टर बताती है गर्भ में पल रहे लिंग की जांच करती है। बाद में संबंधित गर्भवती महिला को उसके पेट में बेटी होने का हवाला देकर अपने क्लीनिक पर ही उसका गर्भपात कर मोटी रकम ऐंठती है। इस सूचना पर स्वास्थ्य विभाग की टीम ने इस गिरोह का भंडाफोड़ करने के लिए एक नकली ग्राहक को तैयार किया जो चार महीने की गर्भवती थी। इस ग्राहक ने पीएनडीटी टीम के कहने पर डॉ हेमलता को फोन किया और कहा कि उसको पहले तीन लड़कियां हैं और उसको अब लड़का चाहिए। वह अल्ट्रासाउंड जांच करवानी है। कुछ देर बातचीत के बाद डॉ हेमलता ने इस नकली ग्राहक के साथ 55000 रुपए में लिंग जांच का सौदा तय किया। उसने पैसे लेकर अपने घर बुलाया।

सरकार ने चेताया कहा- दूसरों को बलि का बकरा बनाने की कोशिश न करे एयर इंडिया

नई दिल्ली (एजेंसी)। अहमदाबाद में हुए विमान हादसे के बाद एयर इंडिया पर कई तरह के सवाल उठने लगे हैं। हादसे के बाद विमानों की सुरक्षा को लेकर चिंताएं जाहिर की जाने लगी हैं। इसी के चलते केंद्रीय उड्डयन मंत्रालय और टाटा संस व एयर इंडिया के चेयरमैन एन चंद्रशेखकरन के बीच मैराथन मीटिंग हुई है। इस मीटिंग में सरकार की तरफ से दो अहम सुझाव दिए गए हैं। इनमें से पहला सुझाव यह है कि एयर इंडिया के सभी डिपार्टमेंट में जिम्मेदार अपनी भूमिका निभाएं। दूसरों को बलि का बकरा बनाने से बचें। सुरक्षा संबंधी सभी फैसले अहम पदों पर बैठे लोग खुद लें और किसी अन्य के भरोसे न छोड़ें। इसके अलावा फ्लाइट के रख-रखाव को लेकर भी सुझाव दिए गए हैं। सरकार ने स्पष्ट किया है कि खानापूर्ति से काम नहीं चलने वाला है।

इस बैठक में अहमदाबाद में हुए हादसे के साथ-साथ तमाम अन्य छोटी-बड़ी समस्याओं को लेकर भी बात हुई है। बैठक में केंद्रीय मंत्री राममोहन नायडू, सचिव समीर कुमार सिन्हा और डीजीसीए चीफ फैज अहमद किदवई ने एयर इंडिया के चेयरमैन चंद्रशेखरन से मुलाकात की। इस दौरान एयर इंडिया की सुरक्षा को पुख्ता बनाने को लेकर चर्चा हुई। चंद्रशेखरन ने इस दौरान मिले सुझावों को लागू करने पर सहमति भी जताई। मामले की जानकारी रखने वालों के मुताबिक उड़ान से पहले कुछ विभागों की भूमिका काफी अहम हो जाती है। इनमें सुरक्षा, ट्रेनिंग, मेन्टेनेंस, इंजीनियरिंग और इंटीग्रेटेड ऑपरेशन कंट्रोल सेंटर है। ऐसा सामने आया है कि इनमें से कुछ डिपार्टमेंट्स में केवल खानापूर्ति हो रही है। पदों पर कोई और बैठा है, फैसले कोई और ले रहा है। एयर इंडिया मैनेजमेंट और उड्डयन मंत्री के बीच बैठक के दौरान एक और अहम बात सामने आई। मैनेजमेंट ने बताया कि पूर्व में क्रैश हुए विमानों (एआई 171 नहीं) की चीजें गुरुग्राम स्थित मेगा कॉम्प्लेक्स में रखी हुई हैं। इसमें सीटें, इंस्ट्रूमेंट्स, फ्लाइट डेटा रिकॉर्डर आदि हैं। बहुत से कर्मचारियों को यह पसंद नहीं आया है। वह इन चीजों को देखकर एक तरह की निगेटिविटी से भर जाते हैं कि इन्हीं सीटों पर किसी की जान निकली होगी। बहुत से कर्मचारियों ने कहा कि हमें बहुत ज्यादा सकारात्मकता की जरूरत है। हम उन सीटों को देखकर अंदर से डर जाते हैं।

कई अन्य हादसों का जिक्र

12 जून को एयर इंडिया 171 के साथ हुए हादसे के अलावा अन्य छोटे-बड़े हादसों पर मंत्रालय ने एयर इंडिया के सीईओ कैंपबेल विल्सन के साथ उच्च स्तरीय चर्चा की हैं। चंद्रशेखरन के साथ हुई बैठक में भी इन बातों का जिक्र हुआ। यह भी सामने आया है कि जांच के दौरान एयर इंडिया के कई अधिकारियों ने पूछताछ के दौरान कुछ अहम बातें बताईं। इसमें कुछ लोगों को बलि का बकरा बनाने की बातें भी कही गईं। जैसे, 21 जून को डीजीसीए ने एयर इंडिया के तीन अधिकारियों को हटाने के निर्देश दिए। इन्हें लाइसेंसिंग, रेस्ट आदि में लापरवाही का जिम्मेदार बताया गया।

राज ठाकरे मातोश्री पहुंच उद्धव को दी जन्मदिन की बधाई

-इससे 6 साल पहले बेटे की शादी का देने गए थे न्योता

मुंबई (एजेंसी)। राज और उद्धव ठाकरे के बीच की दूरियां अब धीरे-धीरे समाप्त हो रही हैं। यही वजह है कि महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना (एमएनएस) चीफ राज ठाकरे रविवार को उद्धव ठाकरे से मिलकर बधाई देने मातोश्री आए हैं। यहां राज ने शिवसेना (यूबीटी) प्रमुख उद्धव ठाकरे को गुलदस्ता भेंट कर गले लगाया और जन्मदिन की बधाई दी है। यहां बताते चलें कि इस मुलाकात से 6 साल पहले 2019 में राज ठाकरे मातोश्री आए थे। दरअसल तब वे उद्धव ठाकरे परिवार को अपने बेटे अमित की शादी का न्योता देने आए थे। और पीछे की बात करें तो 2012 में राज मातोश्री तब आए थे जबकि बालासाहेब ठाकरे बीमार चल रहे थे। बहरहाल 20 साल बाद 5 जुलाई को उद्धव और राज मुंबई के वर्ली डोम में एक रैली के दौरान साथ-साथ नजर आए तभी कयास लगाए जा रहे थे कि अब ये नजदीकियां बढ़ती जाएंगी। इस अवसर पर दोनों ने ही आगे साथ-साथ चलने और मिलकर राजनीति करने के संकेत भी दिए थे। यही कारण है कि उद्धव के जन्मदिन पर राज खुद मातोश्री पहुंचे हैं और उन्हें गले लगाकर बधाई दी है।

सिर्फ उपाधि देने से कोई बाबा साहेब अंबेडकर नहीं बन सकता

-राहुल गांधी दूसरा अंबेडकर साबित होंगे के बयान पर केंद्रीय मंत्री ने कसा तंज

जोधपुर (एजेंसी)। केंद्रीय संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने राहुल गांधी पर हमला बोला है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस नेता उदित राज ने कहा है कि राहुल गांधी दूसरा अंबेडकर साबित होंगे। इस पर गजेंद्र सिंह शेखावत ने कहा कि सिर्फ उपाधि देने से कोई अंबेडकर नहीं बन सकता। राहुल गांधी को अंबेडकर की उपाधि देने पर प्रतिक्रिया देते हुए शेखावत ने कहा कि उनकी पार्टी उन्हें जो भी उपाधि दे, कोई नहीं रोक सकता है, लेकिन बाबासाहेब अंबेडकर बनने के लिए कठोर तपस्या, गहरी सोच, अध्ययन और खुले विचारों की जरूरत है। सिर्फ उपाधि देने से कोई अंबेडकर नहीं बन सकता। केंद्रीय मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत रविवार को जोधपुर में थे। वहां झालावाड़ में स्कूल भवन गिरने से हुई दुखद घटना पर शोक व्यक्त किया और कहा कि जांच पूरी होने के बाद निश्चित रूप से कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने कहा कि सरकार की प्राथमिकता है कि ऐसा हादसा भविष्य में दोबारा न हो। इसके लिए सभी सरकारी विद्यालयों और सार्वजनिक भवनों का ऑडिट करवाया जाएगा। सीएम भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में इस संबंध में निर्देश भी दिए जा चुके हैं।

शिक्षा मंत्री के इस्तीफे को लेकर उन्होंने कहा कि इस्तीफा देना या मांगना राजनीतिक प्रेरित बयान होते हैं। जो कुछ हुआ वह बेहद दुर्भाग्यपूर्ण था और टाला जा सकता था। अब हमें इससे सबक लेने की जरूरत है। इस दौरान नीतीश कुमार सरकार को लेकर चिराग पासवान की हालिया टिप्पणी पर शेखावत ने कहा कि ऐसे विषयों पर फौरी टिप्पणी करना जरुरी नहीं। एनडीए के सभी घटक दल एकजुट हैं और बिहार चुनाव में बीजेपी के नेतृत्व में एनडीए की सरकार बनेगी। बता दें बिहार की आपराधिक घटनाओं पर चिराग ने कहा था कि मुझे शर्म है ऐसी सरकार को समर्थन देने में, जहां अपराध बेलगाम हो चुका है। बिहार में युवती से एंबुलेंस में दुष्कर्म की घटना पर आरजेडी नेता तेजस्वी यादव द्वारा दिए गए बयान कि अपराध इतना बढ़ गया है कि अपराधी सम्राट बन गया है।

गुजरात में मॉनसून फिर भारी बारिश, कई जिलों में रेड और ओरेंज अलर्ट जारी

अहमदाबाद (एजेंसी)। गुजरात में मॉनसून फिर सक्रिय हो गया है, जिसके चलते राज्य में बारिश शुरु हो गई है। मौसम विभाग ने अगले सात दिनों तक बारिश का दौर जारी रहने का अनुमान जताया है। रविवार सुबह साढ़े आठ बजे तक बीते 24 घंटों के दौरान प्रदेश के अलग-अलग हिस्सों में हुई बारिश में सबसे ज्यादा बारिश बनासकांठा के वडगाम में साढ़े सात इंच दर्ज की गई। भारी बारिश के कारण शहर में जलभराव हो गया और बाढ़ जैसे हालात पैदा हो गए।

इसके अलावा मोडासा में सवा छह इंच, तलोद में साढ़े पांच इंच, सिद्धपुर में सवा पांच इंच, कपराडा और दहेगाम में पांच इंच दर्ज की गई। इसके अलावा दीसा में 95 मिमी दर्ज की गई। डांग में 82.5 मिमी, अहमदाबाद में 47 मिमी, सूरत में 39 मिमी, गांधीनगर में 28 मिमी, राजकोट में 9 मिमी, बडोदा में 3 मिमी और वेरावल में 2 मिमी बारिश रिकॉर्ड की गई।

आईएमडीद ने रविवार को अगले कुछ घंटों के दौरान प्रदेश के बनासकांठा, साबरकांठा, अरावल्ली, खेड़ा, पाटण, मेहसाणा, गांधीनगर, अहमदाबाद और सुरेंद्रनगर जिलों के लिए रेड अलर्ट जारी कर भारी बारिश का अनुमान जताया है। इसके अलावा भरूच, नर्मदा, सूरत, तापी, कच्छ, मोरबी, जामनगर, राजकोट, बोटाद, भावनगर, आणंद, महिसागर, दाहोद, पंचमहल, छोटा उदयपुर, वडोदरा, आणंद, नवसारी, डांग और वलसाड़ जिलों के लिए ओरेंज अलर्ट जारी करते हुए इन जिलों में भारी बारिश की संभावना जताई है।

रविवार को मौसम विभाग ने तापी, नवसारी, छोटा उदयपुर, नर्मदा और वलसाड जिलों के लिए रेड अलर्ट जारी करते हुए इन जिलों में अत्यधिक भारी तथा कुछ स्थानों पर अति भारी बारिश हो सकती है। इसके साथ ही इन जिलों में तेज हवाएं चलने और बिजली गिर सकती है। इसके अलावा साबरकांठा, अरावल्ली, महिसागर, दाहोद, पंचमहल, वडोदरा, भरूच, सूरत और डांग जिलों के लिए ओरेंज अलर्ट जारी करते हुए इन जिलों में बहुत भारी बारिश होन का पूर्वानुमान लगाया है।

सोमवार को मौसम विभाग ने साबरकांठा, अरावल्ली और महिसागर जिलों के लिए रेड अलर्ट जारी कर भारी बारिश की संभावना जताई है। इसके साथ ही इन जिलों में तूफान आने व बिजली गिरने की संभावना है। इसके अलावा विभाग ने बनासकांठा, पाटण, मेहसाणा, सुरेंद्रनगर, पंचमहल, दाहोद, छोटा उदयपुर, नर्मदा और नवसारी जिलों के लिए ओरेंज अलर्ट जारी किया है। इस दौरान यहां बहुत भारी बारिश होने की संभावना जताई है।

29 जुलाई को मौसम विभाग ने बनासकांठा और साबरकांठा जिलों के लिए ओरेंज अलर्ट जारी कर बहुत भारी बारिश होने की संभावना जताई है। इसके साथ ही इन जिलों में तूफान आने व बिजली गिरने की भी उम्मीद है। उत्तरी छत्तीसगढ़ और उससे सटे झारखंड पर बना अवदाब बहुत तेज़ी से करीब पश्चिम की ओर बढ़ा और उत्तरी छत्तीसगढ़ और उससे सटे पूर्वी मध्य प्रदेश पर केंद्रित हो गया। इसके मध्य प्रदेश में लगभग पश्चिम की ओर बढ़ते रहने और धीरे-धीरे कमजोर होकर एक सुस्पष्ट निम्न दबाव क्षेत्र में परिवर्तित होने की प्रबल संभावना है। औसत समुद्र तल पर मॉनसून की द्रोणिका अब अनूपगढ़, चुरू, ग्वालियर, रीवा, उत्तरी छत्तीसगढ़ और उससे सटे झारखंड पर अवदाब के केंद्र, पुरुलिया, कोंटाई से होकर दक्षिण-पूर्व की ओर पूर्व मध्य बंगाल की खाड़ी तक जा रही है।

फर्जी दूतावास चलाने वाले हर्षवर्धन को इंटरपोल से रेड कॉर्नर नोटिस जारी

जांच एजेंसियां आरोपी जैन को रिमांड पर लेकर करेंगी पूछताछ

नई दिल्ली (एजेंसी)। गाजियाबाद, (ईएमएस)। फर्जी दूतावास चलाने वाले हर्षवर्धन जैन के खिलाफ यूपी एसटीएफ ने इंटरपोल से संपर्क कर रेड कॉर्नर नोटिस जारी कराया है। खुद को राजदूत कहने वाले हर्षवर्धन से जुड़े रसूखदारों की मुश्किलें बढ़ सकती हैं। एसटीएफ और पुलिस की जांच में कुछ नए खुलासे हुए हैं। कई देशों में शेल कंपनियां खोलकर करोड़ों के लेनदेन के मामले में जैन के 18 खातों की जांच की जा रही है। इसकी पूरी रिपोर्ट इनकम टैक्स और ईडी को भी भेजी गई है।

मीडिया रिपोर्ट में सूत्रों के हवाले से बताया गया है कि शहर के कई रसूखदारों ने भी आरोपी के जरिए मोटी रकम इधर से उधर की है। ऐसे में वे भी कानून के शिकंजे में फंस सकते हैं। वहीं जांच एजेंसियां अब आरोपी को रिमांड पर लेने की तैयारी कर रही हैं। इसके लिए सोमवार को कोर्ट में अर्जी लगाई जाएगी। रिमांड पर पूछताछ

के बाद कड़ियों को जोड़ा जाएगा। हर्षवर्धन जैन के यहां काम करने वाले कुछ लोगों के साथ ही करीबियों को सरकारी गवाह बनाने की तैयारी है, ताकि उनसे भी सुराग मिल सके।

बता दें कविनगर में रहने वाले हर्षवर्धन जैन पर आरोप है कि वह खुद को कई देशों का राजदूत बताकर लोगों को विदेश में काम दिलाने के नाम पर धोखाधड़ी करते थे। इसके चलते एसटीएफ से शिकायत की गई। फिर उसके घर पर छापेमारी की गई। उसके पास से विदेश मंत्रालय की कई मोहर व दस्तावेज मिले थे। घर में कई देशों की करंसी, विदेश मंत्रालय की मोहर, 20 जोड़े डिप्लोमैटिक कार की नंबर प्लेट, 12 फर्जी पासपोर्ट, हर्षवर्धन नाम के दो पैन कार्ड, कई देश व कंपनियों की 34 मोहरें, 12 कंपनियों की महंगी घड़ी, लैपटॉप, मोबाइल और आधार कार्ड, वोटर आईडी कार्ड व दो प्रेस कार्ड समेत अन्य पेपर बरामद हुए।

बता दें हर्षवर्धन जैन ने लंदन से एमबीए किया है। वहां रहते हुए वह तांत्रिक चंद्रास्वामी के संपर्क में आए। चंद्रस्वामी ने जैन की मुलाकात आर्म्स डीलर अदनान खरगोशी और एहसान अली सैयद से कराई। एहसान के साथ मिलकर हर्षवर्धन ने कई शेल कंपनियां खड़ी कीं। इनमें करोड़ों रुपए का ट्रांजैक्शन करने का आरोप है। अब एसटीएफ और पुलिस कड़ियां जोड़ने में लगी हैं। सबसे पहले उसके साथ काम करने वाले कुछ कर्मचारी और करीबियों को सरकारी गवाह बनाने की तैयारी है।

गोरखपुर में अपहरण के सबसे ज्यादा मामले, ज्यादातर लड़कियों के गायब होने के

गोरखपुर (एजेंसी)। गोरखपुर में 64 अपहरण के मामले दर्ज हुए हैं। वहीं, गोरखपुर, देवरिया, कुशीनगर व महराजगंज में यह आंकड़ा 117 तक पहुंच गया है। पुलिस का दावा है कि 60 फीसदी से ज्यादा मामलों में पीड़ित को बरामद किया है, लेकिन कई मामले ऐसे भी हैं जहां पुलिस की लापरवाही उजागर हुई है। जनवरी 2025 से अब तक गोरखपुर में 64, कुशीनगर में 40, महराजगंज में 7 और देवरिया में 6 अपहरण के मामले दर्ज किए गए। इनमें से ज्यादातर मामलों में नाबालिग लड़कियों के गायब होने की शिकायत है। जांच में कई मामले प्रेम-प्रसंग से जुड़े निकले, जबकि कुछ मामलों में परिजन की सूचना पर जबरन अपहरण की एफआइआर दर्ज कराई गई है।

पुलिस रिकार्ड के मुताबिक अब तक कुल मामलों में से करीब 60 फीसदी ही वर्कआउट हो सके हैं। गोरखपुर में सबसे अधिक 64 मामले दर्ज हैं, जिनमें 39 मामलों में बरामदगी की हुई है। शेष 25 मामले अब भी अधूरे हैं या विवेचना लंबित है। कुछ मामलों में पीड़ित पक्ष ने थानों में लापरवाही का आरोप भी लगाया। रामगढ़ताल क्षेत्र से लापता किशोरी की लोकेशन मुंबई में मिलने पर दारोगा ने पिता व रिश्तेदारों को भेज दिया। चार दिन मुंबई में भटकने के बाद वह लौट आए। किरकिरी होने पर अधिकारियों के निर्देश पर पुलिस टीम भेजी गई।

बता दें फिरौती के लिए अपहरण की घटनाएं आज भले कम हो गई हों, लेकिन एक दौर था जब डॉक्टर, उद्योगपति और नामी लोग सुरक्षित नहीं थे। 1999 से लेकर 2010 तक हर साल कोई न कोई वारदात सामने आई जिसमें अपहरण कर फिरौती मांगी गई, कई लोगों को पुलिस ने बड़ी मशक्कत से छुड़ाया, ऐसे लोग भी हैं जो फिरौती देकर छूटे। एक समय ऐसा था जब अपहरण शब्द लोगों के ज़ेहन में बैठ गया था। 1999 में गोरखनाथ के प्रसिद्ध डाक्टर का अपहरण हुआ। तीन साल बाद फिरौती के लिए बदमाश एक उद्योगपति को उठा ले गए। 2007 में शहर के दो डॉक्टरों का अपहरण हुआ। अपहर्ता उन्हें बिहार उठा ले गए जहां दियारा व सीमावर्ती गांवों में उन्हें छिपाकर रखा गया। इसके अलावा एक छात्र के अपहरण पर भी हंगामा मचा था।

गीडा के पिपरौली गांव के अलीम का सात वर्षीय अर्श स्कूल से घर नहीं लौटा। अपहर्ताओं ने 50 हजार की फिरौती मांगी, लेकिन बाद में 20 हजार पर आ गए। जब तक पुलिस कुछ कर पाती, पड़ोसी शेर अली और उसके दो बेटों ने अर्श की हत्या कर दी थी। शव बोरे में भर कर पोखरे के पास फेंक दिया गया। 2020 में जंगल धूषण इलाके से बलराम का अपहरण हुआ। पिता महाजन के पास एक करोड़ की फिरौती की मांग आई, लेकिन जब तक पुलिस सक्रिय हुई, बलराम की हत्या हो चुकी थी। मामले में नौ लोगों को पुलिस ने गिरफ्तार कर जेल भेजा था।

जगदीप धनखड़ की कुर्सी चली गई पर कारणों की तलाश में अटकलों का दौर जारी

नई दिल्ली (एजेंसी)। जगदीप धनखड़ को उपराष्ट्रपति पद से इस्तीफा दिए करीब एक सप्ताह होने को है। इसके बाद भी इस्तीफा क्यों हुआ इसको लेकर अटकलों का दौर शुरु हो गया। मतलब जितने मुंह उतनी बातें शुरु हो गईं। कभी कहा गया कि धनखड़ की सरकार से अपेक्षाएं कुछ ज्यादा ही बढ़ गई थीं वो चाहते थे कि सभी सरकारी दफ्तरों में राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री के साथ उनकी भी तस्वीर लगाई जाए। अब कहा जा रहा है कि संसद टीवी में एक अफसर की नियुक्ति को लेकर भी विवाद खड़ा हुआ था। ऐसे कई कारण है जो इस्तीफे की असल वजह बताए जा रहे हैं।

दावा किया जा रहा है कि जगदीप धनखड़ ने अप्रैल में संसद टीवी के सचिव और इंचार्ज के रूप में एक अधिकारी की नियुक्ति करने के लिए अपने अधिकारों से परे जाकर काम किया। क्या वही नियुक्ति की कोशिश असल में उपराष्ट्रपति के इस्तीफे का कारण बना? जी हां, सरकारी टॉप सूत्रों ने इसे 'तख्तापलट जैसी स्थिति' कहा। अप्रैल में जगदीप धनखड़ ने एक ऐसी नियुक्ति की कोशिश की, जिसे केवल कैबिनेट की नियुक्ति समिति (एसीसी) ही कर सकती है। यह कोशिश तब हुई, जब पीएम विदेश में थे और उनकी नियुक्ति रोकने के लिए सरकार के टॉप अफसरों को दखल देना पड़ा।

सूत्र के मुताबिक, जगदीप धनखड़ चाहते थे कि अप्रैल में तत्कालीन सचिव रजीत पुहनानी को कौशल विकास सचिव बनाए जाने के बाद एक जूनियर अधिकारी संसद टीवी के सचिव और प्रभारी का कार्यभार संभाले। ये एसीसी के पद हैं और राज्यसभा इन पर अधिकारियों की नियुक्ति नहीं कर सकती। राज्यसभा, लोकसभा, उपराष्ट्रपति और राष्ट्रपति इन पर नियुक्तियां नहीं कर सकते। अधिकारियों का चयन केंद्र सरकार की प्रस्तावित सूची में से किया जाना चाहिए। अधिकारियों का आवंटन एसीसी का काम है और केवल वही नियुक्तियां वैध मानी जाती हैं। जगदीप धनखड़ नियुक्ति वाला आदेश जारी करने वाले थे। सूत्रों ने आरोप लगाया, 'प्रधानमंत्री विदेश में थे और टॉप अधिकारियों को इसे रोकने के लिए दखल देना पड़ा। यहां तक कि उस अधिकारी को भी ज्वाइन न करने के लिए कहा गया। उसे बताया गया कि उसकी नियुक्ति अवैध है और कानूनी संकट पैदा होगा। इस नियुक्ति को टालने के लिए कैडर नियंत्रित प्राधिकरणों, पीएमओ और राज्यसभा सचिवालय के बीच कई कॉल किए गए। अधिकारी को यहां तक सुझाव दिया गया कि अगर ज्वाइन करने का दबाव आता है और राज्यसभा सचिवालय आदेश जारी करता है तो वह छुट्टी पर चला जाए। सूत्रों ने आरोप लगाया कि जगदीप धनखड़ ने अपने घर की शिफ्टिंग के दौरान भी बहुत तनाव पैदा किया था। इसके चलते सरकार ने उनकी शिकायत पर तत्कालीन शहरी विकास सचिव को बदल दिया था।

नवबिहार मीडिया प्रा. लि. के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक डॉ. रामाज्ञा तिवारी द्वारा विश्वेश्वरा पब्लिकेशनंस एलएलपी की ओर से शिवासाईं पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड, नियर टेंडर बागीचा पेट्रोल पंप, रातू, रांची (झारखंड)- 835222 से मुद्रित एवं उद्योग भवन मार्ग, 19 A कोकर औद्योगिक क्षेत्र रांची- 834001 (झारखंड) से प्रकाशित।
संपादक- डॉ. रामाज्ञा तिवारी, कार्यकारी संपादक- भीष्म सिंह, प्रबंध संपादक- पंकज कु. सिंह*, प्रधान संपादक- देवेंद्र सिंह (*पीआरबी एक्ट के तहत खबरों के चयन के लिए जिम्मेदार), **प्रबंधक- नरेंद्र कुमार सिंह.** 9334331934, 7903538992, 9570107019, **RNI Regn.: JHAHIN/2011/40902**